चयनित गढ़वाली गद्य

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्याशाखा
(क्षेत्रीय भाषाएं विभाग)
फोन नं0 05946-261122, 261123
टोल फ्री नं0 18001804025
इ–मेल info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

(गढ़वाली भाषा में प्रमाणपत्र कार्यक्रम)

अध्ययन बोर्ड

प्रोफेसर एच. पी. शुक्ल निदेशक, मानविकी विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय श्री रमाकांत बेंजवाल लोक साहित्यकार एवं लेखक, देहरादून, उत्तराखण्ड। श्री देवेश जोशी, लोक साहित्यकार एवं लेखक, देहरादून, उत्तराखण्ड।	डॉ0 राकेश चन्द्र रयाल एसोसिएट प्रोफेसर पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय श्री धर्मेन्द्र नेगी लोक साहित्यकार, लोक कवि एवं लेखक, पौडी गढ़वाल, उत्तराखण्ड। श्री गिरीश सुन्दरियाल लोक साहित्यकार, लोक कवि एवं लेखक, पौडी गढवाल, उत्तराखण्ड।

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर एच. पी. शुक्ल निदेशक, मानविकी विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय श्री नरेन्द्र सिंह नेगी लोक गायक, लोककवि एवं साहित्यकार, पौडी गढ़वाल, उत्तराखण्ड। श्रीमती बीना बेंजवाल लोक साहित्यकार, लोककवि एवं लेखक, देहरादून, उत्तराखण्ड ।	डॉ0 राकेश चन्द्र रयाल एसोसिएट प्रोफेसर पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय श्री गणेश खुगशाल 'गणी' लोक साहित्यकार एवं लेखक, पौडी गढ़वाल, उत्तराखण्ड ।

पाठ्यक्रम संयोजन

डॉ0 राकेश चन्द्र रयाल
एसोसिएट प्रोफेसर
पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई लेखक

इकाई सं0	इकाई का नाम	लेखक का नाम
1	गढ़वाली गद्य का संक्षिप्त इतिहास	श्री गिरीश सुन्दरियाल
2	गणि (कहानी)– दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल	श्री धर्मेन्द्र नेगी
3	हेड मास्टर हिरदैराम (कहानी)– भगवती प्रसाद जोशी	श्री गिरीश सुन्दरियाल
4	डुंडा खच्चरै कथा (कहानी)– मोहन लाल नेगी	श्री धर्मेन्द्र नेगी
5	क्य गोरि क्य सौंलि (निबन्ध)– डॉ० गोविन्द चातक	श्री गिरीश सुन्दरियाल
6	पार्वती (उपन्यास)– डॉ० महावीर प्रसाद गैरोला	श्री धर्मेन्द्र नेगी
7	अंछर्यू कु ताल (नाटक)– ललित मोहन थपलियाल	श्री गिरीश सुन्दरियाल
8	धियाण की नंदा बिदै (यात्रा वृत्तांत)– जगमोहन बिष्ट	श्री धर्मेन्द्र नेगी
9	आर–पारै लड़ै (व्यंग्य)– नरेन्द्र कठैत	श्री गिरीश सुन्दरियाल
10	विविधा– संस्मरण, पत्र, साक्षात्कार आदि	श्री धर्मेन्द्र नेगी

पाठ्यक्रम सम्पादन

श्रीमती बीना बेंजवाल

लोक साहित्यकार, लोक कवि एवं लेखक, देहरादून, उत्तराखण्ड।

कॉपीराइट @/उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय।

संस्करणः प्रथम 2021

प्रकाशक : कुलसचिव, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, 263139 (नैनीताल)

इस सामग्री के किसी भी अंश को उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अथवा मिमियोग्राफी चक्रमुद्रण द्वारा या अन्य पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इकाई-1

गढ़वाली गद्य साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

इकाई संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 पौराणिक गद्य साहित्य
1.3.1 लोक कथा
1.3.2 लोक गाथाएँ
1.3.3 लोक नाट्य
1.3.4 लोकोक्तियाँ
1.4 गढ़वाली गद्य साहित्य
1.4.1 अनुवाद
1.4.2 कहानी
1.4.3 नाटक
1.4.4 उपन्यास
1.4.5 व्यंग्य
1.4.6 निबन्ध
1.4.7 गढ़वाली गद्य की अन्य विधाएँ
1.5 अभ्यास प्रश्न
1.6 सारांश
1.7 शब्दार्थ
1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.9 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना गढ़वाली गद्य का संक्षिप्त इतिहास

गढ़वाली गद्य साहित्य का इतिहास सदियों पुराना है। पुराने समय में साहित्य मौखिक अथवा श्रुत परम्परा से ही पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होता रहा। बल्कि यूं कहें कि जो गढ़वाली गद्य का आदिकालीन साहित्य है उसका रचनाकाल, कालक्रम का निर्धारण करना अत्यन्त कठिन है। गढ़वाली का प्राचीन गद्य साहित्य लोककथाएँ, लोकगाथाएँ व लोकोक्तियों के रूप में हैं, जो कि आदि काल से ही प्रचुर मात्रा में रचा गया है। जिसमें से कुछ-कुछ समय-समय पर दस्तावेज के रूप में मुद्रित व प्रकाशित हो चुका है। किन्तु अभी भी अधिकांश लोक साहित्य (गद्य व पद्य) श्रुत परम्परा में ही जिन्दा है। लोक

साहित्य के बिना हम आधुनिक गढ़वाली साहित्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। लोक साहित्य सुनकर व बाद में पढ़कर साहित्य रचने की प्रेरणा मिली होगी, ऐसा अक्सर माना जाता है, सही भी है। आज भी जो साहित्य रचा जा रहा है वह भी लोक का ही है। लोकतत्व साहित्य के प्राण हैं इसलिए साहित्य तभी जिन्दा रहता है जब उसमें प्राण रहें अर्थात् लोकतत्व विद्यमान हों। रामधारी सिंह दिनकर का कथन है कि 'हम जिस लोक साहित्य को ग्राम्य समझकर कमतर आंकते हैं व अवहेलना करते हैं। असल में साहित्य भी वही है, वही आधुनिक साहित्य के लिए जमीन तैयार करता है। जिस प्रकार बिना जमीन के आप बीज नहीं बो सकते उसी प्रकार बिना लोक साहित्य के आप साहित्य (आधुनिक) नहीं रच सकते।'

1.2 उद्देश्य

- गढ़वाली गद्य की विभिन्न विधाओं के विषय में जान पायेंगे।
- गढ़वाली लोक साहित्य से गढ़वाली गद्य साहित्य के अभिन्न सम्बन्ध से परिचित हो पायेंगे।
- गढ़वाली गद्य साहित्य की प्राचीनता, विविधता की जानकारी मिलेगी।
- गढ़वाली गद्यकारों की रचनाओं व उनके योगदान के बारे में जान पायेंगे।

1.3 पौराणिक गद्य साहित्य

इससे पूर्व कि हम आधुनिक गढ़वाली गद्य साहित्य की चर्चा करें, एक नजर पौराणिक गढ़वाली लोक गद्य साहित्य पर डाल लेते हैं। मूल रूप से यह निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :-

- 1. लोक कथा साहित्य
- 2. लोक गाथा साहित्य
- 3. लोक नाट्य साहित्य
- 4. लोकोक्तियाँ

1.3.1 लोक कथा साहित्य

गढ़वाली लोक साहित्य की परम्परा में लोक कथाओं का अपना एक खास महत्व है। पुराने समय में चाहे शिक्षा हो या मनोरंजन, किसी भी उद्देश्य के लिए आज के जैसे साधन नहीं थे। उस दौर में ये लोककथाएँ आदि ही मनोरंजन के साथ-साथ नैतिकता व मूल्यपरक शिक्षा का माध्यम होती थीं। सदियों का अर्जित ज्ञान व अनुभव विरासत के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक लोक कथाओं, लोक गाथाओं व लोकगीतों के माध्यम से ही पहुँचता था। लोककथाओं का गढ़वाली समाज से बहुत गहरा सम्बन्ध है। इसीलिए यहाँ की लोक कथाओं में यहाँ का इतिहास, भूगोल, सभ्यता, संस्कृति सभी कुछ समाया होता है। इसी तरह यहाँ के सम्पूर्ण जनजीवन की सैकड़ों लोककथाएँ पुस्तकों व हृदयों में

संकलित हैं। हमारे जीवन मूल्यों, पर्व-त्योहार, मेले, रीति-रिवाज, कृषि, पशुपालन आदि से सम्बन्धित अनेकों लोककथाएँ समाज में प्रचलित हैं जो कि हमारी प्राचीन परम्पराओं, मान्यताओं व आस्थाओं को बल प्रदान करती हैं। अँचल विशेष से जुड़े होने के बावजूद भी इनकी विषयवस्तु बहुत व्यापक है। सार्वभौमिक कथानकों को स्थानीय बिम्बों व पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने की कला ही इन लोक कथाओं को व्यापक बनाती है। ये जहाँ एक ओर मनोरंजक होती हैं वहीं दूसरी ओर शिक्षाप्रद भी। आंचलिकता का पुट देकर व्यापक विषयों को सरल रूप में प्रस्तुत करना ही लोक कथाओं की विशेषता है। कुल मिला कर लोक कथाएँ हमारे साहित्य की अनमोल धरोहर हैं। हमारी सामाजिक व साहित्यिक संचेतना के साथ पारम्परिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक दस्तावेज हैं।

गढ़वाली लोक कथाओं के प्रकार : विषय वस्तु के आधार पर प्रमुख साहित्यकारों ने लोक कथाओं को निम्न वर्गों में बाँटा है:-

1. ऐतिहासिक लोक कथाएँ
2. धार्मिक लोक कथाएँ
3. देव कथाएँ
4. उपदेशात्मक
5. मनोरंजनात्मक
6. पशु पक्षियों सम्बन्धी
7. भूत प्रेत सम्बन्धी
8. हास्य व्यंग्यात्मक
9. बाल विनोदात्मक
10. संस्मरणात्मक आदि

1.3.2 लोक गाथाएँ

लोक गाथा साहित्य गद्य व पद्य दोनों रूपों में पाया जाता है। लोक गाथाओं में पद्य के रूप में ऐतिहासिक चरित्रों, वीर भड़ों की वीर गाथाओं का यशोगान होता है जिन्हें लोक भाषा में पंवाड़ा कहा जाता है। इसके साथ ही उनकी प्रेमगाथाओं का भी शृंगारिक वर्णन किया जाता है। देवी देवता सम्बन्धी गाथाएँ भी पंवाड़ों में गायी जाती है। किन्तु इन ऐतिहासिक नायक-नायिकाओं के यशोगान व प्रेमाख्यान का गद्य रूप भी विद्यमान है। जिन्हें लोकगाथा साहित्य के अन्तर्गत पढ़ा जाता है। इन वीर गाथाओं व प्रेम गाथाओं में चरित्रों के उदात्त रूप का उल्लेखनीय वर्णन पाया जाता है जो सदियों से चला आ रहा है। इसीलिए इसे आदि साहित्य कहा जाता है। गढ़वाली साहित्य में मुख्य रूप से निम्नवत् चरित्रों की प्रेम व वीर गाथाओं का वर्णन मिलता है :-

1. देवी-देवताओं मुख्य रूप से कृष्ण, राधा की गाथाएँ।

2. ऐतिहासिक महापुरुषों, वीर योद्धाओं की प्रेम व वीरगाथाएँ।

1.3.3 लोक नाट्य

गढ़वाली लोक साहित्य की तीसरी महत्वपूर्ण विधा है लोक नाट्य, जिससे आधुनिक गढ़वाली नाट्य शैली, रंगमंच, रंगकर्म व थियेटर का उद्भव व विकास हुआ। हमारे लोक के दैनिक जीवन में लोक नाट्य के बहुतेरे दृश्य, पात्र, कथानक, संवाद, देशकाल वातावरण समय-समय पर यत्र-तत्र स्वाभाविक रूप से देखे जाते हैं। गढ़वाल के लोक कलाकारों द्वारा लोक नाट्य का उद्भव हुआ। मुख्य रूप से लोक नाट्य के निम्नलिखित स्रोत हैं :-

1.3.4 लोक कलाकार

गढ़वाल भर में एक विशेष वर्ग लोक नाट्यों का जनक था। उन्हें जीता था, उन्हीं से जीता था, जिसमें बादी, ढाकी, मिरासी आदि थे, जो पौराणिक आख्यानों से लेकर समसामयिक घटनाओं पर तुरन्त नाटक बनाते व खेलते थे। ये स्वांग बड़े असरदार, रोचक, हास्य-व्यग्यपूर्ण तथा मनोरंजक होते थे। इन लोक कलाकारों को आशु कवि भी कहा जाता था। इनका समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता था।

1.3.5 परम्परागत लोक नाट्य

गढ़वाल में प्राचीन काल से ही कुछ परम्परागत लोक नाट्य जैसे मुखौटा नृत्य, पत्तर, रम्माण, बगडवाळ आदि खेले जाते रहे हैं जिनमें अद्भुत नाट्य अभिव्यंजना देखी जाती है। सम्मोहित करने वाला अभिनय, चुटीले संवाद, शानदार रूपसज्जा व वेशभूषा सभी आधुनिक रंगमच का अनूठा सृजन करते हैं। इन प्रस्तुतियों में नाट्य विधा के सभी तत्व विद्यमान होते हैं। लोक की भाषा व लोक की कथावस्तु के कारण यह अपने समाज से गहरे जुड़े रहते हैं। लोक की आस्था और अपनी परम्पराओं से अगाध प्रेम होने के कारण ही ये लोक नाट्य आज भी सर्वत्र खेले जाते हैं। रम्माण जैसा लोक नाट्य आज विश्व धरोहर बन चुका है।

1.3.6 रामलीला

रामलीला गढ़वाल भर के लोक नाट्य का एक अग्रणी मंच रहा है और आज भी है। पुराने समय से रामायण के प्रसंगों का गढ़वाली भाषा में रामलीला के रूप में मंचन वर्षो से होता आया है। विद्वानों का कहना है कि गढ़वाली रंगमंच पर पारसी थियेटर व रामलीला का बड़ा गहरा प्रभाव रहा है। नाट्य तत्वों के आधार पर रामलीला का स्थान सर्वोपरि है। बिना रामलीला के गढ़वाली रंगमंच आगे नहीं बढ़ सकता था। वर्षो के प्रयास ने गढ़वाली रंगमंच को असीम ऊँचाइयां प्रदान की हैं।

1.3.7 अन्य

प्रायः पर्व-त्योहारों, मेलों आदि के सांस्कृतिक आयोजनों में, बच्चों के खेलों में, कृषि कार्य करते हुए, पशु चराने आदि अवसरों पर भी अनेक प्रहसन फूट पड़ते, जिनमें आधुनिक नाट्य प्रस्तुतियों के अहम बीज होते। इसलिए इस तरह की गतिविधियों को भी नाट्य शैली में रखने से वंचित नहीं कर सकते।

1.3.8 लोकोक्तियाँ

लोकोक्तियाँ जनता जनार्दन की उक्ति होती हैं। प्रत्येक लोकोक्ति की सृजना में कोई कथा, घटना व गूढ़ अनुभव छुआ होता है जिसके फलस्वरूप कोई लोकोक्ति अस्तित्व में आती है। लोकोक्ति गागर में सागर होती है। पहाड़ी जनजीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जिससे सम्बन्धित कोई लोकोक्ति न हो। लोक साहित्य का भण्डार लोकोक्तियों आणा, पखाणा, भ्वीणा, मुहावरों से भरा हुआ है। आधुनिक गद्य अथवा पद्य साहित्य में अगर इनका प्रयोग न हो तो वे निष्प्राण माने जाते हैं। इनका प्रयोग चमत्कारिक अर्थात् आलंकारिक होता है।

1.4 गढ़वाली गद्य साहित्य

पौराणिक गढ़वाली लोक साहित्य से ऊर्जा लेकर उन्नीसवीं सदी में साहित्यकार इस ओर प्रवृत्त हुए। गढ़वाली गद्य की शुरूआत का श्रेय ईसाई मिशनरीज को जाता है जिन्होंने बाइबिल का गढ़वाली में अनुवाद कराया। इतिहासकारों के अनुसार सन् 1820 में इसका प्रारम्भ हुआ। 'गढ़वाली' पत्र के सम्पादक पं० विश्वम्भर दत्त चन्दोला बताते हैं कि सन् 1830 में न्यू टेस्टामेंट एवं 1876 में गोस्पेल ऑफ मैथ्यू का गढ़वाली में अनुवाद हुआ जो कि गढ़वाली गद्य के साहित्येतिहास में महत्वपूर्ण घटना है। इससे पूर्व गढ़वाली गद्य में कोई रचना नहीं हुई थी। यद्यपि पद्य में कुछ कार्य होने की जानकारी मिलती है। गढ़वाली लेखकों ने सर्वप्रथम अनुवाद में ही रुचि दिखाई।

अनुवादः गढ़वाली का आदि कालीन गद्य साहित्यः- जैसा कि साहित्यकार व इतिहासकार बताते हैं कि अनुवाद से ही गढ़वाली गद्य की शुरूआत हुई। इस संदर्भ में सन् 1820-30 तक बाइबिल का अनुवाद, 'न्यू टेस्टामेन्ट', 'गॉस्पेल ऑफ मैथ्यू' (1876) उल्लेखनीय हैं। गढ़वाली लेखकों में पं० गोविन्द प्रसाद घिल्डियाल पहले लेखक थे जिन्होंने सन् 1902 में 'हितोपदेश' की कथाओं का गढ़वाली में अनुवाद किया। जबकि पं० गंगा प्रसाद उप्रेती द्वारा सम्पादित ग्रन्थ पर्वतीय भाषा प्रकाश में 'शूरवीरों का मिलन' शीर्षक से एक गढ़वाली कहानी छपी किन्तु यह भी अनूदित कहानी ही थी। यह हिंदी कहानी पूर्व एवं पश्चिम के वीरों का मिलन नामक शीर्षक से हिन्दी की कहानी थी।

1.4.1 कहानी

कहानी गढ़वाली गद्य की प्राचीन विधा है जिसका उद्भव बीसवीं सदी के प्रारम्भ में हुआ। 'गढ़वाली ठाट' शीर्षक से पं० सदानन्द कुकरेती की गढ़वाली की पहली कथा है जिसका प्रकाशन 'विशालकीर्ति' समाचार पत्र में सन् 1913 में हुआ। किसी संग्रह की बात करें तो सन् 1946 में भगवती प्रसाद पांथरी का कहानी संग्रह 'पाँच फूल' प्रकाशित हुआ जो पहला कहानी संग्रह है। सन् 1956 में शकुन्त जोशी के सम्पादन में सात कहानीकारों का सामूहिक संकलन 'रैबार' प्रकाशित हुआ। सन् 1967 में गढ़वाली के महान कथाकार मोहन लाल नेगी का उदय होना एक महत्वपूर्ण घटना है। इस वर्ष उनका चर्चित कथा संग्रह 'जोनि पर छापु किलै' प्रकाशित हुआ जिसमें कुल दस कहानी संकलित थीं। तत्पश्चात् उनका दूसरा संग्रह 'बुरांस की पीड़' 1987 में छपा। इसमें भी दस कहानियाँ थीं। सन् 1976 में गढ़वाली के मूर्धन्य साहित्यकार अबोधबन्धु बहुगुणा द्वारा गद्य की विभिन्न विधाओं का संकलन वृहद व महत्वपूर्ण भूमिका के साथ 'गाड म्यटेकी गंगा' नामक शीर्षक से प्रकाशित हुआ, जो मील का पत्थर है। प्रसिद्ध कहानीकार दुर्गाप्रसाद घिल्डियाल के तीन कथा संग्रह गारि (1981), म्वारि (1985), ब्वारि (1987) छपे जिनमें कुल 37 कहानियाँ संकलित थीं। ये गढ़वाली में सर्वाधिक कहानी लिखने (प्रकाशित) वाले कथाकार हैं। सन् 1987 में एक और उत्कृष्ट कोटि के कहानीकार भगवती प्रसाद जोशी 'हिमवन्तवासी' का कथा संग्रह 'एक ढांगा की आत्मकथा' प्रकाश में आया जो कि बेहद चर्चित रहा। इनके अतिरिक्त प्रमुख कथाकार व उनके संग्रह भी उल्लेखनीय हैं जिनमें सुदामा प्रसाद प्रेमी (गैत्री की ब्वे), अबोधबन्धु बहुगुणा (रगड्वात, कथा कुमुद), प्रताप शिखर (कुरेड़ी फटैगी), वृजेन्द्र कुमार नेगी (उमाळ, छिटगा), ललित केशवान (मिठास), ओम प्रकाश सेमवाल (मेरी पुफू, ढुंगळा), दिनेश ध्यानी (न्यूतेर), कमल रावत आदि महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान समय में कमल रावत सर्वाधिक लिखने वाले व श्रेष्ठ कहानीकार हैं। इन सबके अतिरिक्त लगभग 200 कथाकार कहानी लिख चुके हैं व लिख रहे हैं। गढ़वाली कहानी ने लगभग एक सौ आठ वर्षों की यात्रा पूर्ण कर ली है। अपनी इस यात्रा में उसने बदलते समाज के प्रभाव को महसूस किया व उसे मुखरित भी किया है। गढ़वाली कहानी ने कभी भी अपने को परम्परा से अलग नहीं किया किन्तु हर दौर में समसामयिकता से खुद को जोड़े रखा। समाज के अच्छे-बुरे पक्ष दोनों को स्थान दिया। उसने भाषा की मर्यादा को बनाये रखा। अपनी धरती की अपनी मिट्टी की सौंधी गंध, अलौकिक खुशबू को इसमें महसूसा जा सकता है। इनमें अपनी लोक संस्कृति, परम्परा, रीति-रिवाज, सामाजिक समरसता, विसंगति, रूढ़िवादिता, राग-द्वेष आदि सभी मानवीय मनोवृत्तियों का सजीव चित्रण मिलता है। इनमें उच्चकोटि की कल्पनाशीलता है तो वहीं दूसरी ओर जीवन का यथार्थ। कथानक, कथोपकथन, पात्र चरित्र चित्रण, संवाद, देशकाल वातावरण व उद्देश्य इन कहानी तत्वों की दृष्टि से सभी उच्चकोटि की कथायें हैं। यह कहानीकार की सफलता है कि उसमें सम्पूर्ण पहाड़ धड़कता हुआ दिखे जो कि इनमें दीखता है। ये इन तमाम कसौटियों पर खरी उतरती हैं। इन कहानियों का भाषा सौन्दर्य, सुगढ़ शिल्प, भाषा प्रवाह, एवं शब्द सामर्थ्य अद्वितीय है। इस आधार पर इतना कहा जा सकता

है कि यदि ये कहानियाँ किसी और भाषा में होतीं तो कदाचित इनका प्रभाव व सम्प्रेषणीयता ऐसी न होती जो है। यही आंचलिक भाषा की ताकत भी है और विशेषता भी। कहा जाता है कि किसी अँचल विशेष के किसी समाज के विषय में गहराई से जानना हो तो उसका साहित्य पढ़ लीजिए। शायद यह बात गढ़वाली कथा पढ़कर सिद्ध हो जाती है। गढ़वाली कहानियों में भाषा व समाज का निरन्तर विकास क्रम भी दिखाई देता है। बदलती दुनिया, बदलते स्थानीय परिवेश के परिवर्तन भी इनमें प्रतिबिंबित होते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि ये कहानियाँ हमारे जीवन्त दस्तावेज हैं, पुख्ता प्रमाण हैं जिनका अस्तित्व हमारे लिए जरूरी व गौरव का विषय है।

1.4.2 नाटक

नाटक गढ़वाली गद्य की एक सशक्त विधा है जो गढ़वाली कविता के पश्चात् उद्भव हुई विधा है। नाटक को गढ़वाली में स्वांग भी कहा जाता है। वास्तव में स्वांग लोक कलाकारों द्वारा अभिनीत प्रहसनपूर्ण छोटी-छोटी असरदार नाट्य प्रस्तुतियाँ होती थीं। गढ़वाली में रंगमंच व नाट्यकला को लोक कलाकारों, रामलीला के कलाकारों व तदुपरान्त पारसी थियेटर ने समृद्ध किया।

गढ़वाली में नाट्य लेखन की शुरूआत सन् 1911 में भवानीदत्त थपलियाल द्वारा 'जय-विजय' नाटक के साथ हुई। इन्हें गढ़वाली नाटक का जनक कहा जाता है। तत्पश्चात् इनके लोकप्रिय नाटक 'प्रह्लाद', 'फौंदार की कछड़ी' आदि मंचित व प्रकाशित हुए। भवानीदत्त थपलियाल के पश्चात् घनानंद बहुगुणा का समाज (1930), विश्वम्बर दत्त उनियाल का 'बसन्ती' (1932) ईश्वरी दत्त जुयाल का 'परिवर्तन' (1934) उल्लेखनीय हैं।

आजादी के बाद के नाटकों में सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जबरदस्त जनचेतना एवं व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह साफ दिखाई देता है। इस शृंखला में भगवती प्रसाद पांथरी के नाटक 'अधः पतन' और 'भूतों की खोह' महत्वपूर्ण हैं। पचास के दशक के पश्चात् गढ़वाली रंगमंच तकनीकी रूप से मजबूत हो गया। इस दौर में प्रसिद्ध नाटककार ललितमोहन थपलियाल का उदय इस क्षेत्र में एक अविस्मरणीय घटना है। उन्होंने गढ़वाली नाट्य साहित्य को महत्वपूर्ण कृतियाँ दीं, जिनमें देशकाल वातावरण त तत्कालीन समाज का सजीव चित्रण मिलता है। उनके प्रमुख नाटकों में 'खाडू लापता' 'घरजवैं', 'अंछर्यू को ताल', 'एकीकरण', 'दुर्जन की कछड़ी', आदि उल्लेखनीय हैं जिनका मंचन व प्रकाशन रंगमंच की दृष्टि से क्रान्तिकारी सिद्ध हुआ। ललितमोहन थपलियाल ने वास्तव में गढ़वाली नाट्य विधा की धारा ही बदल दी। उन्होंने परम्परागत शैली को आधुनिकता व ज्वलन्त विषयों से जोड़ा इसीलिए अबोधबन्धु बहुगुणा के नाटक 'रणमण्डाण', 'अंतिम गढ़' दोनों ही ऐतिहासिक नाटक हैं, जबकि उनका सात नाटकों का एकांकी संग्रह 'चक्रचाळ' भी उल्लेखनीय है।

महाकवि कन्हैयालाल डंडरियाल का नाटक के क्षेत्र में भी अविस्मरणीय योगदान है। उनके महत्वपूर्ण नाटकों में 'स्वयंवर', 'कंसानुक्रम', 'अबेर छ अंधेर नी', भ्वींचळो, 'स्वर्गलोक मा कवि सम्मेलन' आदि

समसामयिक, हास्य-व्यंग्य व समाज पर जबरदस्त प्रभाव छोड़ने वाले संवेदनशील नाटक हैं। हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' का 'नौबत', ललित केशवान का 'हरि हिण्डवाण', 'गंगू रमोला', 'जै बदरी नारैण', गिरधारी प्रसाद थपलियाल का 'इन बि चल्द' उमाकान्त बलूनी का 'बांजी गौड़ी' भी इस दौर के प्रमुख नाटक हैं। इन रचनाकारों में राजेन्द्र धस्माणा एक ऐसे नाटककार हुए जिन्होंने गढ़वाली रंगमंच को आधुनिक रंगमंच के समकक्ष खड़ा किया। कुशल नाट्य शिल्पी राजेन्द्र धस्माणा ने अपने नाटकों में परम्परा से हटकर समाज के ज्वलन्त मुद्दों का चित्रण बड़ी कारीगरी व बारीकी से किया। उन्हें वास्तव में नाटक की कथावस्तु से लेकर संवाद सृजन, पात्र चरित्र चित्रण सब कुछ देश काल वातावरण के अनुसार रचने में महारत हासिल थी। उनके 'अर्द्धग्रामेश्वर', 'पैसा न ध्यला, गुमान सिंह रौतेला', 'जय भारत जय उत्तराखण्ड' आदि प्रसिद्ध नाटक हैं।

वर्तमान में गढ़वाली में नाटक के क्षेत्र में जो कार्य हो रहा है वह बहुत आशाजनक है। आज के दौर में जो नाटककार बहुत शिद्दत से रंगकर्म को आगे बढ़ा रहे हैं उनमें डॉ० दाताराम पुरोहित (पाँच भै कठैत, बुढ़देवा आदि), कुलानन्द घनशाला (आस औलाद, मनखि बाघ, अब क्य होलु, क्य कन तब, उज्याड़ रंगछोळ सहित लगभग 30 नाटक प्रकाशित व मंचित), नरेन्द्र कठैत (डॉ० आशाराम, पाँच पराणी पच्चीस छ्वीं), गजेन्द्र नौटियाल (नौ नवाड़), गिरीश सुन्दरियाल (भर्ती, ऐलि मेरि पौड़ी, असगार, शिलान्यास, पाँच साल बाद निरजीराज, लूनै भैंसी, छौळ, बणाग आदि), ओम बधाणी (नरू बिजुला) आदि उल्लेखनीय हैं। लगभग 110 वर्षों के नाट्य इतिहास में गढ़वाली रंगमंच ने बहुत से उतार-चढ़ाव देखे किन्तु वह उत्तरोत्तर आगे बढ़ता रहा। यह कभी अवरुद्ध नहीं हुआ। गढ़वाली नाटकों में नाटक के सभी तत्वों का बड़ी कुशलता के साथ प्रयोग हुआ है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि गढ़वाली में नाट्य विधा एक समृद्ध व सशक्त विधा है जो गढ़वाली रंगमंच के माध्यम से भाषा साहित्य को अत्यधिक समृद्ध व संरक्षित कर रही है।

1.4.3 उपन्यास

यद्यपि साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा गढ़वाली में उपन्यास कम लिखे गये हैं किन्तु जो भी लिखे गये हैं, वे महत्वपूर्ण हैं। सर्वविदित है कि गद्य लेखन और विशेष रूप से उपन्यास लिखना बहुत संयम और परिश्रम का कार्य है जो हर किसी के वश की बात भी नहीं। यह चुनौती व जोखिम कोई संयमी लेखक ही उठा सकता है। आज के दौर के लिए तो यही बड़ी चुनौती है। इतिहास के अनुसार पं० बलदेव नौटियाल ने सर्वप्रथम सन् 1940 में गढ़वाली भाषा में 'ब्यळमू ब्यूराळ' नामक उपन्यास रचा। इसके कुछ अंश यत्र-तत्र छपे भी किन्तु यह शायद प्रकाशित न हो सका। इसके पश्चात् काफी लम्बे अरसे तक कोई उपन्यास प्रकाश में नहीं आया। सन् 1981 में डॉ० महावीर प्रसाद गैरोला ने 'पारबती' नामक उपन्यास लिखकर इस सूखे को खत्म किया। यह उपन्यास स्त्री विमर्श को उत्प्रेरित करता है। गढ़वाली के चर्चित व मुख्य उपन्यास व उपन्यासकारों में अबोधबन्धु बहुगुणा (भुगत्यूं भविष्य), डॉ०

महावीर प्रसाद गैरोला (पारबती, ओडु हटै द्या), नित्यानन्द मैठाणी (निमाणी), शेर सिंह गढ़देशी (शेरू), दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल (उच्याणो), सुरेन्द्र पाल (जाल), सुरेन्द्र भट्ट (सतमंगळ्या), रमेश घिल्डियाल (बीसवीं सदी को बिरही यक्ष, चला बौड़ी जौंला पितरू का देश आदि), उमेश चमोला (निर्बिजु) राकेश मोहन खन्तवाल (मुसक्यमार, स्वीणा आदि), कन्हैयालाल डंडरियाल (रुद्री) आदि उल्लेखनीय हैं। गढ़वाली उपन्यासों में कथाओं का विस्तार मिलता है। कथानक आंचलिक विषयों के हैं। पात्र समाज के जन सामान्य से प्रेरित हैं। संवाद बहुत चुटीले व आंचलिक भाषा के माधुर्य से लबरेज हैं। देशकाल वातावरण का सभी उपन्यासों में सजीव चित्रण है। उपन्यास उद्देश्यपूर्ण हैं। भाषा, साहित्य को समृद्ध करने वाले हैं। सामाजिक संचेतना और आंचलिक परिवेश की सुन्दर झांकी प्रस्तुत करते हैं ये उपन्यास। बाजारवाद व डिजिटल युग में जो भी उपन्यास लिखे जा रहे हैं वे महत्वपूर्ण तो हैं ही, साथ ही प्रशंसनीय भी हैं।

1.4.5 व्यंग्य

व्यंग्य गढ़वाली गद्य की एक महत्वपूर्ण व चर्चित विधा है। व्यंग्य के माध्यम से गढ़वाली ने जहाँ भाषा साहित्य को परिमार्जित, संवर्द्धित किया वहीं इस भाषा में लोक गीतों व लोककथाओं के मायाजाल से बाहर आकर नये ढंग व नये रंग में कुछ नया कहने व लिखने का सफल प्रयास किया है। व्यंग्य विधा में सबसे अग्रणी नाम नरेन्द्र कठैत का है जिन्होंने सामाजिक सरोकारों से लेकर व्यवस्था के खिलाफ मुखर होकर दर्जन भर से अधिक व्यंग्य संग्रह अपने दम पर प्रकाशित किये हैं। अर्थात् अकेले ही सौ से अधिक व्यंग्य रचने वाले वे पहले आंचलिक लेखक हैं। वरिष्ठ लेखक भीष्म कुकरेती का भी व्यंग्य विधा में महत्वपूर्ण कार्य है। वे स्वयं सैकड़ों व्यंग्य लिखने का दावा करते हैं। यद्यपि उनका एक व्यंग्य संग्रह 'कबलाट' भी प्रकाशित है। हरीश जुयाल 'कुटज' (खिगताट) व सुनील थपलियाल 'घंजीर' भी प्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं।

1.4.6 निबन्ध

निबन्ध लेखन जितना कठिन है उतना ही उसकी उपलब्धता। गढ़वाली में निबन्ध विधा पर बहुत कम लेखकों ने कलम-चलाई है। कुछ मुख्य नाम जिन्होंने निबन्ध के क्षेत्र में कार्य किया है उनमें आचार्य गोपेश्वर कोठियाल, डॉ० गोविंद चातक, मोहनलाल बाबुलकर, अबोधबन्धु बहुगुणा आदि हैं।

1.4.7 गढ़वाली गद्य की अन्य विधाएँ

कहानी, नाटक, उपन्यास के अतिरिक्त गढ़वाली गद्य की अन्य विधा जैसे यात्रा वृत्तांत, संस्मरण, साक्षात्कार, समीक्षा, डायरी, पत्र साहित्य, रिपोर्ताज आदि में भी लेखन कार्य हुआ है और हो रहा है। यात्रा वृत्तांत में कन्हैयालाल डंडरियाल कृत 'चाँठौं का घ्वीड़' बहुत ही रोचक व कौतूहलपूर्ण यात्रा वृत्तांत

है, जो कि गढ़वाली का प्रथम यात्रा वृत्तांत है। यह 1988 में प्रकाशित हुआ। इसके अलावा बहुत से लेखकों के यात्रा वृत्त पत्र पत्रिकाओं में समय-समय पर छपते रहे। कुछ महत्वपूर्ण यात्रा वृत्तांत जगमोहन सिंह बिष्ट (धियाणी कैलाश बिदै, लिप्पू लेख का वार-पार), शूरवीर सिंह रावत (नौ भैणी आंछरी बारा भैणी भराड़ी) आदि हैं। अबोधबंधु बहुगुणा जी द्वारा सम्पादित 'एक कौंळी किरण' पुस्तक में कुछ निबन्ध, समीक्षा, पत्र, संस्मरण आदि संकलित हैं। वीरेन्द्र पंवार द्वारा साक्षात्कार पर आधारित पुस्तक 'छ्वीं-बथ' एक उल्लेखनीय संग्रह है जिसमें उनके द्वारा लिए गए गढ़वाली भाषा के चर्चित लेखकों के साक्षात्कार हैं। जबकि उन्हीं की पुस्तक 'बीं' में 31 गढ़वाली लेखकों, कवियों की पुस्तकों की समीक्षाएँ संकलित हैं। विभिन्न पत्रिकाओं में लगभग सभी चर्चित पुस्तकों की समीक्षाएँ विद्वान लेखकों द्वारा प्रकाशित हुई हैं। साथ ही संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, किस्से भी पत्र-पत्रिकाओं में ही प्रकाशित हुए हैं। यह कहना भी समीचीन होगा कि गढ़वाली में शब्दकोश, भाषा विज्ञान, लोक साहित्य की वृहद व्याख्या पर बहुत उल्लेखनीय कार्य हुआ है।

1.5 अभ्यास प्रश्न

1. गढ़वाली में बाइबिल का अनुवाद कब हुआ?
2. प्रथम गढ़वाली कहानी 'गढ़वाली ठाट' के लेखक कौन थे?
3. प्रथम गढ़वाली नाटक व उसके लेखक कौन थे?
4. गढ़वाली के प्रथम उपन्यास का नाम लिखिए।
5. गढ़वाली में सर्वाधिक व्यंग्य लिखने वाले व्यंग्यकार कौन हैं?
6. 'धियाणी कैलाश बिदै' किसका यात्रा वृत्तांत है?
4. 'जोनि पर छापु किलै' कथा संग्रह के कथाकार कौन हैं?
8. 'चाँठौं का घ्वीड़' के लेखक कौन हैं?

1.6 सारांश

गढ़वाली गद्य साहित्य अत्यन्त प्राचीन है। गढ़वाली गद्य के अन्तर्गत सबसे पहले बाइबिल की कथाओं का गढ़वाली में अनुवाद हुआ जो आज से 200 वर्ष पहले 1820 में न्यू टेस्टामेन्ट व 1876 में 'गोस्पेल ऑफ मैथ्यू' का अनुवाद ऐतिहासिक शुरूआत है। सन् 1913 में 'गढ़वाली ठाट' नाम से पहली कहानी, 1911 में 'जय विजय' नाटक, 1940 में पहला उपन्यास 'ब्यळमू-ब्यूराळ' प्रकाश में आये। इनके अतिरिक्त गढ़वाली भाषा में यात्रा वृत्तान्त, संस्मरण, साक्षात्कार, निबन्ध, व्यंग्य, समीक्षा आदि विधा भी उपलब्ध हैं। इन सभी साहित्यिक कृतियों में आंचलिकता का गहरा प्रभाव है। गढ़वाल के समाज, संस्कृति, सभ्यता सहित तमाम सामाजिक सरोकारों का बखूबी चित्रण गढ़वाली गद्य में मिलता है। खास तौर पर यहाँ के निवासियों का मृदुल स्वभाव, सहजता, सरलता, देशभक्ति, पराक्रम, सत्यनिष्ठा, परिश्रम, श्रमसाध्य जीवन, खैरी, खुद आदि अनेक विशेषताएँ यहाँ के साहित्य में स्वाभाविक रूप से

देखी जा सकती हैं। संख्या व गुणवत्ता के आधार पर कहा जा सकता है कि गढ़वाली का गद्य साहित्य समृद्ध साहित्य है।

1.7 शब्दार्थ

पंवाड़ा- वीर गाथा, स्वांग- नाटक, बाद्दी, ढाकी, मिरासी- लोक कलाकार जो गा-बजाकर व नाटक खेलकर अपनी आजीविका चलाते थे, रैबार- संदेश, आणा, पखाणा, भ्वीणा- लोकोक्तियां व मुहावरे, उमाळ- उबाल, न्यूतेर- मेहमान (शुभकार्यों में), आंछरी- परियाँ

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर- 1. 1820, 2. पं० सदानन्द कुकरेती, 3. जय-विजय-पं० भवानीदत्त थपलियाल, 4. ब्यळमू ब्यूराळ, 5. नरेन्द्र कठैत, 6. जगमोहन सिंह बिष्ट, 7. मोहन लाल नेगी, 8. कन्हैयालाल डंडरियाल

1.8 संदर्भ ग्रन्थ

1. गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य- डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'
2. गाड म्यटेकि गंगा- अबोधबन्धु बहुगुणा
3. हुंगरा- मदन मोहन डुकलाण व गिरीश सुन्दरियाल
4. उत्तराखण्ड की लोकभाषाएँ- डॉ० अचलानन्द जखमोला

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गढ़वाली भाषा की कहानी के उद्भव से लेकर अब तक के प्रमुख कहानीकारों के योगदान का उल्लेख कीजिए।
2. गढ़वाली नाट्य विधा में लोक नाट्य का महत्व बताइए।
3. कहानी तथा नाटक के अतिरिक्त गढ़वाली की अन्य गद्य विधाओं पर प्रकाश डालिए।

इकाई-2

गढ़वाली कहानी- 'गाणि'- दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल

(Gaani- Durga Prasad Ghildiyal)

इकाई संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल का संक्षिप्त परिचय

2.4 अभ्यास प्रश्न

2.5 'गाणि' कहानी

2.6 अभ्यास प्रश्न

2.7 सारांश

2.6 शब्दार्थ

2.8 संदर्भ ग्रंथ सूची

2.9 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

पारिवारिक सम्बन्धों की गहरी पड़ताल करती कहानी है 'गाणि'। कहानी के केन्द्रीय पात्र घनश्याम के संघर्ष और त्याग की बेमिसाल गाथा है यह कथा। साहूकार कमलु शाह के कर्ज में बुरी तरह डूबे अपने बेटे की खुशहाली के सपने को साकार करने की गाणि (सपना) है। घर गाँव के जनजीवन का सजीव चित्रण करती हुई यह मानवीय मूल्यों को परखने वाली कथावस्तु है। पारिवारिक दायित्वों का मरते दम तक निर्वहन करना एक आम नागरिक का खास लक्षण है। यह विशेषता इस कहानी में आसानी से देखी जा सकती है।

अभावग्रस्त व विकट पारिवारिक परिस्थितियों से जूझते हुए भी हार न मानना घनश्याम की अजेय जिजीविषा को दिखाता है। कहानी में जहाँ एक ओर घनश्याम का उदात्त चरित्र है तो दूसरी ओर औतार सिंह का उदार चरित्र। घनश्याम की बहन कुन्ती और बेटे सत्तु के अलग-अलग चरित्रों के साथ भी कहानी प्रभाव छोड़ती है। कुल मिलाकर यह एक साधारण परिवार की असाधारण कहानी है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:-

- साहित्य की कहानी विधा से परिचित होंगे।
- समाज में आम आदमी की स्थिति को समझेंगे।
- मानवता और आपसी भाईचारे का महत्व जानेंगे।
- पहाड़ के बुजुर्गों की वास्तविक पीड़ा को समझेंगे।

2.3 दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल का संक्षिप्त परिचय

दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल का जन्म 06 नवम्बर, 1923 को पंदाळ्यूं, पट्टी- कुटिलस्यूं, जिला पौड़ी गढ़वाल में हुआ था। ये कक्षा 10 पास करके दिल्ली आ गए और सरकारी सेवा करने लगे। दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल ने गढ़वाली साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके तीन कहानी संग्रह गारि (1984), म्वारि (1986) तथा ब्वारि (1987) प्रकाशित हुए। इनका 'उच्याणो' नाम से एक गढ़वाली उपन्यास भी प्रकाशित है। इन्होंने 75 से अधिक गढ़वाली कहानियाँ लिखीं। इनकी कहानियों में उत्तराखण्ड के ग्रामीण जीवन की झलक दिखती है। इन्होंने कुछ गढ़वाली कविताएँ भी लिखीं, जिन्हें इन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी किया। इनका देहान्त 25 जुलाई, 2001 को दिल्ली में हुआ।

2.4 अभ्यास प्रश्न

1. साहित्यकार दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल का जन्म कब हुआ?
2. लेखक के पहले कहानी संग्रह का नाम लिखें।
3. साहित्यकार दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल लिखित उपन्यास का नाम बताइए।
4. कहानीकार दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल की मृत्यु कब हुई?

2.5 कहानी- 'गाणि'

पूसौ मैना छौ। मंसूरि बिटि नारायण भै, शिमल्या बिटि धनसिंह चचा अर पौड़ी बिटि मंगतराम दादा द्वि-द्वि मैनौं कि छुट्यूं मा घौर आयां छया। एक दिन सि तिन्नि घनश्याम सिंह भै का चौक मा मंदरि बिछैक तड़तड़ा घाम मा बैठीक खट्टा-मिट्ठा लिम्बों कि खटै सौत राळी खाणा छया। कातिका मैनौ सौत इबारि दां का जलोटा बिरौण मा चार पाथा निकळि छौ। घनश्याम भै का कूड़ा परैं। अर तैं खटै मा बि राळि छौ वेन। छुइयों कु सिलसिला चलणू छौ।

"म्यरा लाटो सत्तु इनो त नि छयो पर पता नि कै दुश्मना मन कि ह्वे कि दैव न बि वेकि मति ख्वे द्ये। तुम लोग जाणदा हि छयां कि कना-कना दिन खेने मिन तै सत्तु दगड़ि। एक का बाद एक, तीन

ब्यो कन्ना बाद सु ह्वे छयो त पैलि अपणि ब्वे तैं छै मैना भितर-भितर खै गे। उबारे वीं से पैलि मि चल जांदो त या जिकुड़ि झर्र-झर्र त नि रौंदि कन्नी। ब्वलदा नि छन कि रांड-मूंड का छोरौं का दिन ऐ जांदन पर बिना माँ का छोरौं कु क्य भरोसो। स्या बात मि दगड़ि खपणि छ। सो तीन साल होंदन, ये बीच कमलु शाह तैं मुक्क नि दिखै सकणू छौं।" इनौ बोलिक घनश्याम न खटै कु पत्ता चाटीक उंदो चुलायि।

"सूण भै घनश्याम! मि बीस साल बिटि मास्टरगिरि कन्नू छऊं। त्यारा सत्तु जना भौत नौना मि मा पढ़ीन। क्वी भौत बड़ा आदिम बण गेने अर क्वी घर मा हौळ-फोड़ बण्यां छन। सु सत्तु मिन 'अ' 'ब' से लेकि मिडिल तलक पढ़ाये। त्वे से जादा मि वे पछाण्दु। वो इनो चंट बच्चा छ कि अपणि जिंदगि मा मार नि खाण्या कबि। परसे तै पल्या गौं का गोबिंद पटवालौ नौनु बि मिलि छयो। सु दिल्ली बिटि छुट्टि लेकि घौर आयूं छ। अपणा यूं ओरा-धोरा का चारि-पांचि मधि दिल्ली नौकर्यूं पर छन वूं सब्यूं मा सत्तु कि हालत सबसे सुंदर छ। नौकरि त सबि सुंदर कन्ना छन बल पर सु बड़ा-बड़ा लोक्खु का हातु हि हातु मा रौंद बल।" इनो ब्वलिक मंगतराम दादान तमखु कि सोड़ मारि होक्का अगनै सरकै द्ये। स्य बात घनश्यामा गौळा नि गे। वो ब्वन लगे, "लोग सुद्दि-मुद्दि मा दुसरौं कु मजाक उड़ौंदन। म्यरा सत्तु कु बड़ि मुश्किल मा दस पास कर्यूं छ अर सु गोबिंद पटवालौ लड़ीक बी० ए० पास छ त कमै-धमै तैकि जादा होलि कि सत्तु कि? अजी अपणि अकल अर दुसरौं को पैसा सब्यूं तैं जादा दिखेंद।"

द्वियों कि बात सूणिक नारायण सिंह भै ब्वन लगिन, "अरे भुला घनश्याम त्वे याद हो न हो, मिन तै सत्तु मु उबारे ब्वलि छौ कि ब्यटा न कोच न कोच मुसदुंळ्यूं हात। ह्वे सकद वख गुरौ बैठ्यां होवन पर तैन हमारि बिल्कुल नि माणि अर वे साल दस मा रहि गे छयो त अगनै पढ़ून छौ। पर जु दुसरों कि मत्ति का होंदन तौंका तनि लच्छण होंदन। अरे, यु कु ब्वलणु छ कि जै गांधी, जै नेहरू ब्वलन पर। लोगुन त सम्हाळि यालिन बड़ि-बड़ि कुर्सि अर सि छन फिक्वाळ-सीं बण्यां दिल्ली फुंडो। सुंदर पढ़ूयूं-लिख्यूं रौंदु त कनि नि मिलदि तै बि क्वी छ्वट्टि-म्वटि कुर्सि तै झंडा बोकणै।"

घनश्याम भै बोलण लगे, "हां भैजि ठीक बोलणा छयां। निर्भगि बि कखि भग्यान होयां। निर्भग्युं को जनम निर्भग्युं का घौर अर भग्यानु को भग्यानु का यख हि होंद।' तौं द्वीइ भैयों कि बत्ता मंगतराम दादा गौळा नि गे। ब्वन लगिन, "चुचौं वेका बनिस्बत तिन्नि साल मा तुमुन तनो फैसला सुणै द्ये पर मि अबि बि सु हि ब्वन्नु छौं कि त्वे घनश्याम कि मवासि अर ये गौं को नौं तैन हि ठड्यौण ह्वा!" तिन्युन अपणा-अपणा जुत्ता पैरिन अर अपणा घौरु चल गेने। घनश्यामन मंदरि लपेटे अर डिंड्याळा मा अगेठा पर आग सुलगौण लगे।

कुन्ती, घनश्याम अर नारायण सिंह कि एकि बैण छई अर एकुला घौर ब्यवाई छई। पर भाग जब ठीक नि छयो त बीसौं वर्ष वींको सुहाग भाग जांदो रये। घनश्यामै तिसरि जनानि बि जब तै सत्तु तैं छै मैनो छोड़ी चलि गये त कुन्ती न ऐकि अपणा भै-भतिजा तैं सम्हाळै। आज तलक वा ये वास्ता खुसि-खुसि काम धंधा मा मस्त रौंदी छई कि वींन अपणा भै कि मवासि जागदी करीं छई। पर कुछ दिन बिटि

अपणा भै तैं मुरझायूं देखी डरणी रौंदी छै कि कखि बुढ़ापा मा वींका भाग मा अपजस त नि लिख्यूं छ। हैंका दिन घाम औण तलक घनश्याम सियूं रै गे। रातभर पता नि कैं चिंता मा निंद नि आई पर बिन्सरि मा झपकि ऐगे वे तैं। कुन्ती का उठौण पर उठे अर दिसा-फिरागत का बाद गाड बिटि नहे-ध्वे कि एक बंठि पाणि लैगे। कुन्ती न तबार तलक भात बणै यलि छयो अर भात खाणू बोले।

वेन बोले, "भुलि, तु भात धौर अर मि तबारे संध्या कर लेंदु।" गिलास पर वेन पाणि गाड़े अर रुसाड़ा मा हि चौकला मा बैठ गये संध्या कन्नौ। आचमनि करे, जन्द्यो निकाळे अर गुण-मुण पता नि क्या श्लोक ब्वलीन अर बाद मा ताळि सि बजै द्वीइ हातुन, अर ह्वेगे बल संध्या। गिलास परौ पाणि सगोड़ा चुलै द्ये अर हौरि पाणि गाड़ि खाणू बैठ गये। भाता द्वी-चार गफ्फा मारि होला वेन कि कैन खुंटि मा लाठिन खुट-खुट करे अर भटेक बोले, "हे भितर करौं, मि बि ऐ गयूं भै भात खाणू।" कमलु शाहै बाच सूणै पछाणि घनश्यामन अर बोले, "बैठा-बैठा शाह जी औणू छऊं द्वी-चार गफ्फा मारिई।" उल्टा-सुल्टा भाता गफ्फा मारिन अर हात छळे कि ऐ गे भैर घनश्याम। कमलु शाह न बि भात खायि अर भैर डिंड्याळा मा तमखु पेण बैठिन। कुन्ती न भात कखै खाण छयो। जु बच्यूं छयो वु कमलु शाह कि प्वटगि चल गे छौ। वींन चूने द्वी र्‌वट्टि बणैने अर खै-पेकि बौण चलि गे।

अबि-अबि मि तै गोबिंद पटवाला यख बिटि औणू छऊं। वेको लड़िक घौर आयूं छ। सत्तु कि भारि कमै-धमै छ बल दिल्ली मा नौकरी अलग अर शाम-सुबेर कै ठेकेदारी काम बि करद बल दिल्ली मा सु भै-चचा, अब त करि द्या मेरो हिसाब-किताब। द्वी मैना बाद मेरि नौनि का ब्यो को दिन जुड़्यूं छ अर मि पैसों कि भारि जर्वत छ। सब्यु कु हार-सार चलणू रहो त ठीकी छ। तुमुन सात सौ रुप्या ली छया। गंठखुलै बि मिन उबारे नि काटि छै। बारा रुप्या सैकड़ा का हिसाब से मियाद औण पर एक हजार गंठखुलै समेत होंदन। सु चचा, खोला खींसा अर यु अपणा कर्जे चिट्ठी सम्हाळा। कमलु शाहै बात सूणिक घनश्याम न मोण लटकै द्ये अर बोलण लगे, "शाह जी, इबारे त मि लाचार छऊं पर जनु मि लेणौ ऐ छयो उन्नी मुंड टेकी देणू बि औलु। बात सिरफ देर-सबेर कि छ। आज हि मि वेकु चिट्ठी भ्यजदु अर पैसा मंगौंदूं।" कमलु शाह ब्वलण लगे, "भै चचा, तुमारो सत्तु रुप्या भेजु न भेजु पर चिट्ठी कि मियाद द्वी मैना भितर-भितर औण वाळि छ। तबारे तलक रुप्या नि मिल्य त नियम मुताबिक मि तैं नालिस कन्न प्वड़लि। मि तैं नौ न धरिन। तीन साल भौत होंदन अगर कै तैं रुप्या लौटौणै चांट हो त।" कमलु शाह न लाठि उठायि अर चलि गे अपणा घौर।

घनश्याम न चिट्ठी पर चिट्ठी भेजिने सत्तु कु तैं, पर हे राम, जु कैको जबाब आई होव। मियाद खतम होणै चिंता मा वे तैं न रात निंद अर न दिनौ भूख छै। अपणा दगड़्यों मु हात ज्वड़िन कि वेकि कूड़ि-पुंगड़ि कुड़क होण से बचै देवन पर सिरप मंगतराम दादा न चार-पांच सौ देणु कु भरोसो दिलाये। वेन अपणा भै नारायण सिंह मु बि मददा वास्ता हात फैलायि पर भै बिगळ्या अर सोरा होया। रुप्या देणै बात त अलग रहि, वेन सल्ला द्ये कि "घौर मा क्य धर्‌यूं छ? कुन्ती अर वु चलि जावा दिल्ली सबि सामान लेकि रुप्या ह्वे जाला त भेजि देयां कमलु शाह कु तैं निथर कूड़ी कुड़क होलि बि

त क्य हात लगण तै कमलु शाह का। द्वी-चार क्वन्ना अर खालि कुठार हि त हात लगला वेका।" घनश्याम खौळे गे अपणा भै कि तन्नि कुकर्मि सल्ला देण पर। आखिर दिल्ली जाणौ क्वी दगड़ो ढुंढण बैठे घनश्याम। आखिर मा गोबिंद पटवाल का नौना दगड़ि दिल्ली जाणौ फैसला करे।

चार दिन बाद दिल्ली कु पैटण पर वेन कुन्ती मा बोले, "भुलि, मि सिरफ पाँच-दस दिन मा घौर आई जौंलो, चा रुप्या मिलुन या ना।" गोबिंद पटवालौ नौनु औतार सिंह, घनश्याम तैं अपणा मकान मा पुराणि दिल्ली ली आये। सत्तु नई दिल्ली रौंदु छौ। हैंका दिन दफ्तर जांदि दां औतार न बोले, "बडा जी तुम आराम करा, मि सत्तु कु तैं दफ्तर बिटि टेलीफोन करलो अर शाम तलक वो जनो ब्वललो उन्नि करला। या त वो आप तैं लेण कु आई जालो या मि छोड़ यौंलो वेका घौर" टेलिफोन कन्न पर पता चले कि सतेसिंह तीस दिनै छुट्टी पर ग्वालियर जायूं छ अर बीस दिन बाद आलो। घनश्याम न जब तनो सूणे त खौळेगि वो। उनो औतार अर वेकि ब्वारि न भारि सेवा करे घनश्यामै। द्वी दिन बाद घनश्याम कि उठपोड़ देखिक औतार न बोले, "बडा जी चला थोड़ा घूमी-फिरि औला अर रस्ता मा खुलिक छुंई-बत्ता लगौंला। आप भौत परेशानी मा सीं दिखेणा छयां।" द्वी घूमणौ निकळिन। औतार न बाटा फुंड घुम्दो-घुम्दो पूछे "बडा जी, अब बतावा अपणा दिलै बात कि आप ततना परेशान किलै छयां। ज्वा बि आपै परेशानि छ मि दूर कन्नै कोशिश करलो।"

घनश्याम न डब्ळायीं आँख्युं अर भर्या गौळा न बोले, "बेटा, मेरि परेशानि इनि छ कि वीं क्वी नि हटै सकदु। ये बुढ़ापा मा अपणि कूड़ि-पुंगड़ि अर मान-मर्यादा जांदै द्यखणु छऊं। कमलु शाह को बोलणु ठीकै छ कि तीन-चार साल भौत होंदन रुप्या लौटौणा, अगर कैकि नियत साफ हो अर मन मा चांट। अगर आज से पंद्रा दिना भितर मिन कमलु शाह का एक हजार रुप्या नि लौटायां त वेन नालिस कन अर कूड़ि-पुंगड़ि त जु कुड़क होणी होलि स्य त होलिइ पर आज तकै म्यारि बंद मुट्ठी खुल जालि अर अगनै का सबि काम ठप्प ह्वे जाला। मि झूठो अर ध्वक्काबाज ब्वल्योंलो। लोग बोलला कि उकाळ काटी सरपट मन्नू छ सु घनश्याम।" "बडा जी, तुम चिंता नि करा मि द्योलू तुम सणि वो हजार रुप्या अर सत्तु का औण पर अप्वी मांगदु मि अपणा रुप्या वे से।"

औतार सिंह न घनश्याम तैं नई-पुराणि दिल्ली घुमाये। एक-द्वी सिनेमा दिखैन अर तिसरा दिन घौर का वास्ता तय्यार करिन। रुप्या देंदि दौं वेन बोले, "बडा जी, गैणल्या सि सौ-सौ का दस नोट। सि त धूरि लगैने तै कमलु शाह का अर यि सौ रुप्या तुमारा घौर जाणौ खर्च-पर्च। ये पारसल मेरा बाबा मु दे देयां अर यु धोति-कुर्ता कुन्ती पूफू तैं मेरि तरफ न दे दियां। हाँ, एक बात त जरूर छ कि तौं एक हजार रुप्यों कि बात न मेरा बाबा बतौणि अर न तै कमलु शाह मू। कैन जाण्न लगाय कि सत्तु तुम वख नि मिल्यो। बल्कि कुन्ती पूफू मा बि इन्नि ब्वलिन कि यु धोति-कुर्ता सत्तु कु हि भेज्यूं छ। किलैकि जनानों मा बोलि बात हवा जन उड्द। अगर य बात मेरा बुबा पता चललि त वूंन मि पर खौं-बाग बण जाण। किलैकि इबारे म्यरा घौर जाण पर पैसों कि कमी का कारण वो सेरा कि एक फांगि खरीद नि करि सक्यां। पता नी आप पुराणा लोक्खु तैं पुंगड़ा खरीद कन्नौ किलै जि छ? जबकि लोग वख बेची-खुची

भैर कोठी बणौणा छन। रुप्यों का बाना मि मा बोले त मिन खीसा हिलै देने। बग्त-बेबग्त का वास्ता सि धर्या छया त आप तैं दे सकणू छऊं।" हैंका दिन वेन घनश्याम तैं गाड़ि मा बैठायि अर चैन कि सांस ल्ये।

बीस-तीस दिन बाद औतार एक एत्वार कु सत्तु तैं मिलणू गे नई दिल्ली। भाग न वो वे दिन घौर पर मिलि गे। सेवा-सौंळी का बाद औतार न बोले, "हे भै सत्तु त्वे खोजणौ अर भगवान खोजणौ बराबर छ। हम सु दिल्ली मा छवां पर उठणो-बैठणो अर खाणो-पीणो त कख छयो, मिलदा बि नि छवां। चला हम दुसरा गौं का छवां पर बडा जी वु ततना बर्सु बिटि तिन एक चिट्ठी तक नि भेज्यो। आखिर तेरा चुप रौण से कना मा काटणन तौंन अपणा बुढ़ापा दिन। हम बि सासा लग्यां रौंदा कि तु कबि अपणि तरौं हम तैं बि खैंचलि उब्बो। तेरि ततना जाण-पछाण छ बड़ा-बड़ा लोक्खु दगड़ि।" सत्तु सुण्नू रये औतारै रग्ड्वात। थोड़ि देर सुण्ना बाद वेन बोले, "भैजी, कनि छुई लगौणा छयां तुम। तुम तैं बी० ए० तलक चचा न पैलिइ पढ़ायूं छयो। मि त सुरु अब कन्न लग्यूं। दिल्ली भेजदि दौं म्यरा बाबा न बोले छौ कि अनपढ़ मनखि बिना पूछ को गोरु होंद। वूंन मि तैं दस तलक खैंच-ताणी पढ़ै सके अर बोले अब अगनै अप्वी पौढ़-लेख। सु वूंका बोलणा मुताबिक तीन साल मा नि खै, नि पैरि! नौकरि बि कन्नू छऊं पर पढ्नू बि छऊं। ग्वालियर बिटि बी० ए० को इम्त्यान देकि औणू छऊं। कनो, पढ़ै पर खर्चा नि होंदो? रहि बुबा जी कि बात, सु भैजि रोणै वूंकि पुराणि आदत छ। बोला कि चला फुंडा मि दगड़ि त वो बोलदन कि जब तलक स्या कुन्ती अर वो बच्यां छन घौर नि छोड़ सकदा। वूंकि हरेक चिट्ठी मा मेरा ब्यो कन्नै बात होंदि जबकि अबि हम पर कमलु शाह को पुराणो कर्ज चढ्यूं हि छ। जबाब मि ये वास्ता नि देंदु कि कखि वूंका पुराणा विचारू अर म्यरा विचारू मा टकराव न ह्वे जाव। जबाब नि मिलणौ दुख एकीइ द पर जबाब अनेक ह्वे जाण छवा। खैर, आप सुणावा क्य हालचाल छन गौं-गौळा का।" जब वेन सूणै कि वेका बाबा जी दिल्ली ऐने, वे मिलणा वास्ता अर वे तैं न मिल सकणा कारण भौत परेशान रैने त वे भारि नखरु लगण बैठे। यख तलक कि कै परेशानि का कारण वो वेकि वापसि तलक नि रुक सक्यां। वेन यु अंदाज लगाये कि ह्वे सकदा कि वेका ब्यो का सम्बन्ध मा वूंन कै जबाब द्ये होलो अर जब जबाब वे से नि मिल्यो त जुबान से हारणा बाना परेशान ह्वे गे होला। बात आई-गई ह्वेगे।

लगभग दस मैना बाद पूसौ मैना आई गये। ये बीच घनश्याम न लोक्खु मा सूणे कि वेको लड़ीक बी० ए० पास ह्वेकि अगनै वकालतै पढ़ै पर जुट्यूं छ अर नौकरि मा बल वेकि तरक्कि बि ह्वे गे। एक दिन औतार नौकरि पर जाण कु तय्यार ह्वेयि सकि छौ कि वे तैं एक तार मिले। कांपदा हात्तुन वेन तार खोले अर पौढ़ी खौळैगे वु। लिख्यूं छयो, 'घनश्याम जांदो रहे, वेका नौना सत्तु तैं झट्ट घौर भिजवाया- गोबिंद पटवाल।' नौकरि पर जाण का बदला औतार सीधो नई दिल्ली सत्तु मा पौंछे अर वे तैं तार दिखाये। सत्तु न रोइ-रोईक धर्ति-अगास एक कर द्ये। औतार न वे सम्हाळे अर बोले, "अब त भुला

रोण-धोण से काम नि चलणो। झट तय्यार हो अर दिनै मोटर से घौर चल। मि बि त्वे दगड़ि चलदु। ज्यूंदा मा अगर वूंका वास्ता कुछ नि करि सक्यां त म्वर्यां मा त आत्मा वूंकि शांत करणै छ।"

सि द्वी बजि कि मोटर मा बैठे गेन घौर जाणौ। सर्या बट्टा वो चुप छया। सत्तु तैं त दुख अपणा सिर को छत्र, बाबा जी का जाणौ रहि होलो पर औतार तैं यांको दुख छयो कि कखि वेकि पोल-पट्टी न खुल जाव। तिमला का तिमला खतेया अर नंगी का नंगी दिखेया। कना मा करलो वो ठाडो मुक्क अपणा बाबा जी का सामणे, अगर वु लुक्यां-छिप्यां वेका कर्मु को पता चललो त? हैंका दिन सुबेर जब सि द्वी श्रीनगर बस अड्डा पर उतरिन त गोबिंद पटवाल, कमलु शाह, नारायण सिंह अर पड़ोसि गौं का भला-भला मनख्यूं तैं पौड़ी जाण वाळि गाड़ि कि इंतजारि करदो पायि। एक-एक करिक सब्यूं न सत्तु तैं धीरज रखणु बोले। जब काफी देर तलक गाड़ि नि आयि त सबि पैदल गौं का बाटा लगि गैने।

कमलु शाह ब्वन लगे, "सच मान्यां त इनो मनखि त द्वी-चार गौं मा न छयो अर न अब होण। जबान को पक्को अर नाता-रिस्ता मुताबिक सब्यूं को औ-बैठो कन्न वाळो छयो। तै चचा न भारे खौरि का दिन काटीन। लोक्खु का खुट्टौं ठोकर लगद, वेका मुंड ठोकर लग्दु रैने पर मजाल छ कि वेन मरजाद नि निभै होव सबका साथ। अरे, पढ्यूं लिख्यूं त वो इतना नि छयो पर जब बि बाच गडदु छौ त फूल झड़दा छा वेका गिच्चा बिटि। मि याद छ कि जै दिन वो मेरा रुप्या लौटौण कु दस ग्यारा मैना पैलि मेरा घौर ऐ छौ त एक हजार रुप्या सूद समेत मेरा हात मा धारीइ बोलण लगि छौ ब्यटा, जन मि कर्ज गाड़नु आयि छयो उन्नि सु देण बि ऐ गयूं। कर्ज दिये जांद पर बग्त परै करीं मदद कबि नि लौटै सकेंदि। तिन उबारे मदद नि करी होंदी त मेरा सत्तु न घौर मा हळफोड़ हि रहि जाण छयो। आज वो मनखि बणि गे। यु सब तेरा रुप्यों का प्रताप छ।" इनो बोलिकि वेन कोटा बौंळा न अपणा भर्य्या आँखा पुंजिन। मि इनि गासि लगि अबारे कि वे से तीन साल को ब्याज अर गंठखुलै लेणो हराम समझण लग गयूं। मिन वेकि कर्जे चिट्ठी अर तीन सौ रुप्या वापस करीन। बड़ि हो-हुज्जत का बाद वो रुप्यों लेणौ राजि ह्वे। कख बिटि जुटै होला वूंन सि एक हजार। ये घंघतोळ मा पड्यूं चलणू रये वु लोक्खु दगड़ि।

वांका बाद गोबिंद पटवाल बोलण लगे, "घनश्याम भै का पंचभूत शरीर तैं हम वखि मा सौंपी कि आज सि औणा छवां पर हे रे मनखि! कख गे त्यारो वो लाड-प्यार। आज से द्वी मैना पैलि एक दिन आयि मेरा घौर। बोलण लगे, भुला गोबिंद तेरि स्या लंबि-चौड़ि कुटुमदारि छ। भगवान तौं चिरंजीव रखो। मेरा देखण से त्वे मा एक सेरा टुकड़ा साग-भुज्जि खाणो चयेन्दु हि छ। मिन बोलि छौ, भैजि चाहणु त मि बि तनि छयो पर जब सु औतार माणु बि। यांका वास्ता एक पैसा देणौ तय्यार नि छ सु। मिन क्य जि कन्न? घनश्याम भै न ब्वलि छौ, भुला, घौर मा हम द्वी प्राणि छवां। हम मा सेरा-पंचर अर उखड़ि जमीन भौत छ। कैन खाण-लगौण लगाय ततना जमीन। सु फिलहाल म्यरो सेरा को मुल्यो फांगो लेकि काम चलैले। पैंसा को हिसाब होंदो रालो। मिन सु भै भौत समझाये कि बिना औतार पुछ्यां मिन तनो नि कन्न त बोलण लगिन कि कनु मि वे औतारो बोडा नि छौं। वे मनौणौ काम मि अर वख जैकि वीं सेरा कि फांगि को एक हजार रुप्यों मा खरीदनामा अर बयनामा तय्यार कर द्ये। तुमी लोग बतावा,

बिना रुप्यों कि लेणी-देणी का, करि छ कैन आज तलक इनो। यु त वी मनखि छौ हर एक पर विश्वास कन्न वाळो।" अपणा बाबै बात सुण्नू रै औतार ध्यान से। बाद मा वेन अपणा आँसु पूंजीक इतना हि बोले- "बडा जी, तुम तैं सीधो स्वर्ग मिलो अर तुम अमर रयां।"

एक-आध घंटा मा सबि गौं पौंछि गेन। थोड़ा देर सत्तु करौंका घौर मा ठहरिक सबि अपणा-अपणा घौरु चल गेन। भितर ऐकि सत्तु न पूफू पर अंग्वाळ मार द्ये। रोंदो-बिबलौंदु वेन पूछे, "हे पूफू, किलै जाण देने तिन मेरा बाबा। क्य तबियत खराब होय वूंकि, मि तैं मुखजातरा कन्नौ मौका बि नि द्ये वूंन।" पूफू न सत्तु सम्हाळे अर बोले, "सि त्वेकु चिट्ठी लेखणौ बैठ गेने। वूंकि स्या आखिरि चिट्ठी लिखीं छई पर वीं डाकखाना मा डाळ्न से पैलि अफु अचणचक चल गेने फुंडो। जख मा चिट्ठी लेखि छई वखि मा मोण लटकै दे वूंन।"

पूफु न चिट्ठी द्ये सत्तु मा। लिख्यूं छयो, "ब्यटा जिन्दगि मा मिन ज्यां-ज्यां कि गाणि करीन वो अगनै-पिछनै भगवान न पूरि करिने। बुबा होणा नाता मि से जु कुछ ह्वे सके मिन त्वेकु कमि नि होण द्ये पर मन मा एक्कि गासि लेकि शायद मि चल जौलो कि तिन मेरा चिट्ठौं कु मान नि कर्यो। मिन रुप्या-पैसों को कर्ज एक-एक पैसा वापिस करे पर जौंन मेरि बग्त पर मदद करि वूंको मि ऋण कना मा चुकौलु या मन कि मनै मा हि रहि गये। स्वचणू छऊं कि तै ब्यटा औतार दगड़ि मेरो इनु जि क्य रिस्ता छौ जैन बिना चिट्ठो-इस्टाम का अपणा बाबा से लुकैकि म्यरि एक बात पर एक हजार रुप्या मेरा हात मा धरि देने अर मि तैं उऋण कर द्ये। मि मा यां का अलावा कुछ नी छ कि मि सच्चा से वे अपणो आशीर्वाद दे सकूं। मेरो सच्चो ब्रह्म होलो त तैका बच्चों का खुट्टौं कांडा तक न बैठ्यां। बिचारि माँ त्यारि त्वे सात मैना कु छोड़ीइ चलगे छई अर धर्म की माँ रूपी तैं भुलि कुन्ती न त्वे माँ को प्यार द्ये। घट्ट का पाट कि तरौं, ई कूड़ी जागदी रखण का बाना वा पिसेणी रये। क्य दे सक्यां हम वीं तैं? वींको बुढ़ापा न बिगचो सु ख्याल रखी अर अपणो ब्यो करिक वींकु तैं दगड़ि कर द्ये। यां से जादा वीं चएंदु बि नि छ। तेरा ब्यो कि बातचीत मिन कठूड़ ठाकुर थानसिंह जी कि नौनि का विषय मा करीं छ। तु बि देख-भाळ लेई। अरे, बुबा कर्यूं ब्यो अर अपणा पैसा कबि ध्वक्का नि देंदा।" चिट्ठी मालूम होंद पूरि नि ह्वे सकि होली कि वांका बाद सिरफ लिखणौ प्रयास मा रेखड़ा खैंच्या छया चिट्ठी पर। चिट्ठी पैढ़ी वेकि आँख्यूं मा तरपर-तरपर आंसु चूंण लगिन। गाणि, हर मनखि अपणा-अपणा ढंग से करद। सत्तु स्वचणु छयो कि वेकि अर बाबै गाणि कन्ना पैथर होण-खाणै हि बात छई, पर स्वचण का ढंगा कारण वो हार खैगे अर वेका बुबा जी जीति गेन।

द्वी साल बाद गौं-गौळा मा खबर पौंछे कि सत्तु न सरकारि नौकरि छोड़ याले अर एक नामी वकील बणि गे। दाना-दिवाना ब्वन्ना छा यो सब घनश्याम भै कि गाण्यूं को फल छ।

2.6 अभ्यास प्रश्न

1. कहानी 'गाणि' के अनुसार घनश्याम के बेटे का नाम क्या था?

2. घनश्याम का बेटा कहाँ रहता है?

3. घनश्याम ने किससे रुपए ब्याज पर लिए?

4. किसने रुपए देकर घनश्याम की मदद की?

2.7 सारांश

सशक्त कहानीकार दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल की यह एक पारिवारिक कहानी है। कहानी का मुख्य पात्र घनश्याम एक विधुर व्यक्ति है जो चरित्रवान है। तीन शादी के उपरान्त भी उसे पारिवारिक सुख प्राप्त नहीं हुआ। उसकी विधवा बहन कुन्ती भी उसी के साथ रहती है। उसकी तीसरी पत्नी सत्तु को जनते ही चल बसती है। जिसका लालन-पालन वह और उसकी बहन कुन्ती करते हैं। अपने विवाह से लेकर सत्तु की पढ़ाई-लिखाई व पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन के लिए वह सेठ कमलु शाह से कर्जा ले लेता है किंतु मियाद पूर्ण होने पर चुका नहीं पाता। क्योंकि वह बहुत ईमानदार और वचन का पक्का व्यक्ति है इसलिए कमलु शाह से एक हजार रुपए कर्जा चुकाने के लिए वह सर्वदा चिन्तित रहता है। अन्ततोगत्वा वह अपनी बहन कुन्ती को कहता है कि अब तो मेरा लड़का सत्तु कमाने लग गया है। मैं उसके पास दिल्ली जाकर रुपए मांग लाता हूँ और कर्जा चुका लेता हूँ। वह औतार सिंह के साथ दिल्ली जाता है किन्तु वहाँ पता चलता है कि सत्तु एक महीने के लिए ऑफिस के काम से बाहर गया है। वे दोनों बड़े निराश होते हैं। घनश्याम औतार सिंह को पूरी रामकथा सुनाता है। औतार द्रवित हो जाता है। वह सत्तु का दोस्त है। वह कहता है आप फिकर न करो ताऊजी। मैं दूंगा आपके एक हजार रुपए। दो-तीन दिन दिल्ली घुमाने के बाद वह घनश्याम ताऊजी को एक हजार तथा रास्ते का अतिरिक्त खर्चा देकर विदा करता है। घनश्याम घर आकर कमलुशाह का कर्जा उतारता है। वह यह भी जानता है कि सत्तु औतार के रुपए नहीं लौटा पाएगा। घनश्याम के पास बहुत सिंचित खेत हैं। वह एक बड़ा सिंचित खेत औतार के नाम करके उसके पिता गोविंद पटवाल से कहता है कि मैं भी तो उसका ताऊ हूँ। मैं उससे तय कर लूंगा। यद्यपि वह औतार से पहले एक हजार रुपए ले चुका था। इस तरह वह अपनी निष्ठा को अमर कर जाता है। यह भेद उसकी मृत्यु पर उसके लिखे एक पत्र से खुल जाता है। सभी उसकी ईमानदारी व सच्चाई की प्रशंसा करते हैं।

2.8 शब्दार्थ

लिम्बा- गलगल, सौत- शहद, मुसदुळ्यूं- चूहे के बिल, अछलेण- अस्त होना, बिन्सरि- प्रभात, प्वटगि- पेट, तमाखु- तम्बाकू, गंठखुलै- साहूकार द्वारा कर्जा देते समय थैली की गांठ खुलाई के बदले वसूल की जाने वाली रकम, नालिस- न्याय के लिए आवेदन, भै बिगळ्या अर सोरा होया- भाइयों के बंटवारे के पश्चात् निकट सम्बन्धी दूर के हो जाना, डब्ळायीं आँखि- नम आँखें, उकाळकाटी सरपट- स्वार्थ सिद्धि हो जाने पर भूल जाना।

कहानीकार पर आधारित प्रश्नों के उत्तर- 1. 06 नवम्बर, 1923 , 2. गारि (1984), 3. उच्याणो, 4. 25 जुलाई, 2001

कहानी के आधार पर प्रश्नों के उत्तर- 1. सत्तु, 2. दिल्ली 3. कमलु शाह, 4. औतार सिंह ने।

2.9 संदर्भ

1. 'गारि'- दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल
2. हुंगरा- मदन मोहन डुकलाण एवं गिरीश सुंदरियाल
3. गाड म्यटेकि गंगा- अबोधबंधु बहुगुणा

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. 'गाणि' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखें।
2. इस कहानी में कहानीकार ने पहाड़ की किस पीड़ा को उकेरने का प्रयास किया है? कहानी के आधार पर तब व अब के समय का तुलनात्मक विवरण लिखिए।

इकाई-3

गढ़वाली कहानी- 'हेडमास्टर हिरदैराम' भगवती प्रसाद जोशी

(Headmaster Hirdairam- Bhagwati Prasad Joshi)

इकाई संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 भगवती प्रसाद जोशी का संक्षिप्त परिचय

3.4 अभ्यास प्रश्न

3.5 'हेडमास्टर हिरदैराम' कहानी

3.6 अभ्यास प्रश्न

3.7 सारांश

3.8 शब्दार्थ

3.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

3.10 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

देशकाल वातावरण का असर और क्षेत्रीयता का प्रभाव साहित्य पर किस तरह पड़ता है इसका अनूठा उदाहरण है यह कहानी। पहाड़ों की शिक्षा व्यवस्था अध्यापकों के दो चरित्र, गुरु-शिष्यों के अन्तर्सम्बन्धों को बहुत रोचकता के साथ गूँथा गया है। कथा के माध्यम से ऐसे चरित्रों की सृजना की गई है जो कहानी को वैशिष्ट्य व वैराट्य प्रदान करते हैं। कथा में कसी हुई कथावस्तु, पात्रों का चरित्र-चित्रण दर्शनीय है। यह कहानी पहाड़ी ढलानों में निर्बाध रूप से बहते झरने की तरह है। कहानी तत्वों के आधार पर यह गढ़वाली भाषा की एक श्रेष्ठ कहानी है। कहानी के मुख्य पात्र हेडमास्टर हिरदैराम एक कर्मनिष्ठ अध्यापक हैं। वे अपने शिष्यों से अगाध प्रेम करते हैं किन्तु पठन-पाठन, अनुशासन के मामले में बहुत कड़क हैं। दूसरी तरफ हरकमणि और सिताब सिंह हैं जो उनसे विपरीत ध्रुव के हैं। अन्ततः उन्हें परिश्रमानुकूल फल मिलता है किन्तु हेडमास्टर हिरदैराम कहीं भी अपने आदर्शों व कर्तव्यों के साथ समझौता नहीं करते हैं। उनका स्वाभिमान, अनुशासन विपरीत परिस्थितियों में भी नहीं बदलता। इसीलिए यह एक शिक्षाप्रद व आदर्श कहानी मानी जाती है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान सकेंगे कि-

- कहानी विधा से किस तरह समाज को जागृत किया जा सकता है।
- शिक्षा के महत्व को जान सकेंगे।
- अच्छे शिक्षक के गुणों से परिचित होंगे।
- एक शिष्य के अपने गुरु के प्रति आदर को समझेंगे।

3.3 भगवती प्रसाद जोशी 'हिमवंतवासी' का संक्षिप्त परिचय

पौड़ी जनपद की पट्टी पैडलस्यूं के ग्राम जोश्याणा में सन् 1927 को भगवती प्रसाद जोशी जी का जन्म हुआ। सरकारी नौकरी के बावजूद आप ताउम्र गढ़वाली की सेवा करते रहे। उनकी पुस्तक 'एक ढांगा की आत्मकथा' सात गढ़वाली कहानियों का संग्रह है। आपका लिखा गढ़वाली खण्डकाव्य 'सीता बणवास' भी काफी लोकप्रिय रहा जिसका प्रकाशन आपकी मृत्यु के बाद हुआ। 20 अप्रैल, 1988 को हृदय गति रुकने से आपका निधन हुआ।

3.4 अभ्यास प्रश्न

1. साहित्यकार भगवती प्रसाद जोशी का जन्म कहाँ हुआ?
2. भगवती प्रसाद जोशी का उपनाम क्या था?
3. साहित्यकार की सात गढ़वाली कहानियों के संग्रह का नाम क्या है?
4. भगवती प्रसाद जोशी द्वारा लिखित खण्डकाव्य का नाम बताइए।

3.5 कहानी- 'हेडमास्टर हिरदैराम'

प्राइमरी पाठशाला हैड़ाखाळ। जख हेडमास्टर हिरदैराम हरबोला। एक शरीर एक आत्मा छड़ि सी छड़छडा, झंगरण्या जूंगा, तण्यां साँखा अर हर बग्त चढ़यां आँखा! जनु परशुराम का कन्धा मा फरसा, तनि हिरदैराम जी का हाथ मा डंडा। सु अच्छु-खासु नौं बच्चौंन बिगाड़िक करदे छौ- 'निरदैराम बमबोला!' पर डौर इतगा कि जु वो सड़क पर निकळदा, त बच्चा उड्यारुं मा छिपदा। गौं-गळौं मू दिखेंदा त गुठ्यार मा लुकदा। अखळा-चखळी-मा इना कि जनु बाघ पड़गे हो बखरौं मा। इन लग जांदि बगबौळ! बचणा कु क्वी ठौर नि छौ। स्कूल आवा त डंडा अर नि आवा त डंडा। डंडा कु वो डंडा नि बोलिक शुद्ध संस्कृत मा बोलदा छा दण्डिका। पर नौं बदली कि क्य हूंद? जनु नागनाथ तन्नि सांपनाथ। जनु डंडा तन्नि दण्डिका।

हेडमास्टर हिरदैराम को प्रिय विषय छयो चाणक्य-नीति। अक्सर बोलदा- "अर बच्चौं कु त चैंद पाँच वर्ष तक लड़ी अर दस तक तड़ी। सु प्राइमरी पाठशाला कु सही नौं हूण चैंद ताड़नशाला।" खेलकूदा बारा मा ऊंको बोलणो छयो- "अरे भै, खेला त अच्छु खेल खेला। पर जब यूं खन्द्वार बणी स्कूल मा बैठणा कु टाट-पट्टी अर लिखणा कु ब्लैक-बोर्ड तक नी छ, त कख बिटिन लेण हॉकी-फुटबौल? सु कबड्डी खेला स्याम कु, पर कैका कपड़ा नि फाड़ा। गिल्ली डंडा खेलीक कैका आँखा नि फोड़ा अर जै बच्चा कु गुच्छी खेलणी हो त वेकु हैड़ाखाळ स्कूल मा नी छ क्वी बि जगा।"

गौं-पट्टी का बच्चौं को बस चलो त वो अपणा लोळा ब्वे-बुबौ तैं कच्ची खै जाऊन। अरे, स्कूल मा भर्ती-ही कन्न त हैड़ाखाळ हि किलै? आरुखाळ स्कूल मा किलै ना? दूर छ त क्या? खुटघुसै त ऊंकि होलि। आखिर यूंकु क्य घिसदा? न हींग न फटकरी।

कख हैड़ाखाळ कु मरख्वड्या मास्टर हिरदैराम अर कख आरुखाळ का हेडमास्टर हरकमणि! एक रागस त एक द्यबता। उन झूठ किलै ब्वलण श्री हरकमणि कु विख्यात नौं सरकमणि पड़िगे छयो किलैकि हफ्ता मा पाँच दिन वो अपणा घर सरक जांदा छा। अजी साब, क्या कन्न तब? एक त घौरौ अकेला आदिम अर वां पर बि बिरती-बाड़ी वाळा बामण। नौ-नौरता अर सोळा सराध करुन पूरा कि स्कूल मा रौंन हाजिर? एक छ्वटा मास्साब बि त छा वख। पर साब, बड़ा मियां त बड़ा मियां छोटा मियां सुबहान अल्लाह हूंदा हि छन। अर जब बड्डु गोरु हि लूण बुकालु त छ्वट्टु जरुरि हि चाटलु वेकु थ्वबड्डु। फेर अगर कानून छ त सबु कु न कि सिरफ गब्बु कु! सु स्कूल मा रोज हि सरका-सरकि कु माहौल रौंद अर बच्चों कु रौंदि आजादी हि आजादी। चाहे गुच्छी खेला, गिल्ली डंडा खेला, चाहे खेला कंचा-गोळी। अरे भै टैम-ही त काटण। चाहे पढ़ी काटा चाहे खेलिक। सु आरुखाळ स्कूला बच्चौं का बस्तौं मा किताब कम पर गिल्ली-डंडा अर कंचागोळी जादा रौंदी। अहा कतना अच्छा छा सरकमणि जी मास्साब! अर एक सु छ हैड़ाखाळौ निरदैराम कि न अफ्फु सरकदु अर न हैंका तैं सरकण देंदु। छि-छि, धिक्कार छ वेकु तैं स्कूल मा पढ़ै कु बबाल अलग। घौर कु सवाल अलग अर जरा टिरमिर कै त बस, हथगुळि लाल अलग!

सु जुलाई कु मैना लगदा हि बच्चा अपणि ममतामयी मातौं का सामणि चिनखा सीं मिमयाण लगदा- 'माँ, भर्ती कन्न ये साल त आरुखाळ स्कूल मा हैड़ाखाळ मा त सु च मरख्वड्या मास्टर निरदैराम।'

ममतामयी माँ अपणा लाडौं कि लुतपुती हथगुळि देखदि। कळकळि लगदि कि हाथ कतना कुंगळा छन अबि। अरे एक त सिलंग डाळी, फेर कनै सहली वूं निरदै कुल्हड्यूं कि चोट?

माँ कु मन असीज-पसीज जांदु। 'गुड्डू का पिताजी! सूणे तुमुन? यु स्कूल मा भर्ती त कन्नु हि छ ये साल, त आरुखाळ करवाया, स्कूल बढ़िया बतौणू छ यो।'

पर सुणो त कै? वो लोळा बुबा त मोती ढांगै तरौं आँखा रिंगैक झिड़कदा-'पढ़नु छ त हैड़ाखाळ, नी त बखरा चरा बखरा। ब्वा भई ब्वा, अरे दर्जा पास कन्न कि गिल्ली डंडा खेलण?' सु इनि भांची मरदा कि जुबान नी।

गौं-पट्टी मा परसिद्ध छौ कि हेडमास्टर हिरदैरामै दण्डिका एकदम पूत सपूतै पछ्याण करवै कि रख देंदि। जु हूंद सपूत सु टिक जांदु, जु हूंद कुपूत वो ह्वे जाँदु रफट। वूंकि दण्डिका हंस-न्याय कर्दि छै कि दूध अलग त पाणि अलग। ऊंकि दण्डिका सुप्पै तरौं छै। खौड़-कटग्यार फटक अर दाणि-दाणि अलग!

जुलाई का मैना मा उन्नि गाड-गदरौं मा मिंढकौं कि टरटराट अर उन्नि हैड़ाखाळ जांदा बच्चौं कि मिमियाट। लोग अपणा-अपणा बच्चों कु सड़क पर इनु लिसोरी-लिसोरिक लिजांदा जनु वो बच्चा नि हूंन बल्कि चिनखौं हूण लिजाणा कै बुचड़ै दुकान पर।

स्कूला बरण्डा मा स्कूलै दुसरि हस्ति से हूंदि भेंट। शेरू, याने शेरू मोनीटर। बुरांसी गौं का बाघसिंह भड़ कु नौनु शेरसिंह। जन बल मएड़ा तन्नि जएड़ा। जतना लम्बु उतना-हि चौड़ु। फूलो-फली कि फुटबौल। शरीरौ कस, पर दिमाग कु ठस। हिरदैराम जी ना पैलि-पैलि वो हड्डु-हड्डु लमडाए। दर्जनूं दण्डिका वेका गंथर-सीं हत्तूं पर त्वड़ने। पर मर्द का बच्चा ना उफ तक नीं करि अर न छोड़ि स्कूल ही। निरदैराम जी कि दण्डिका रूपी नागिण कु जैर पचै-पचै कि वो नीलकण्ठ बणगे अर वूंका दण्डिका-प्रताप का वास्ता बणगे एक साक्षात चुनौती। एक-एक दर्जा मा द्वी-द्वी साल लगौंदो अर एक तरौं अपणा मास्साब की कीर्तिधजा पर शेरू एक बदरंग थेगळु जनु चिपकणो पर बणगे मास्साब कु बि पट्ट-शिष्य। मोनीटर बणगे। वेकु काम छयो स्कूलै घण्टी बजाणो, भोट्या कुत्तै तरौं दिन भर चिन्खा सी बच्चों कु घिराणूं अर मास्साब की दण्डिका तैं ठीक-ठाक रखणु।

स्कूल खुलदा हि हिरदैराम जी कि पैलि पुकार हूंदी-'अरे शेरू!' जी मास्साब!' अर शेरू वूंकि दण्डिका रख देंदु मेज पर। बस रोज-रोज ई-फुरफुतैं मेरि कुंडळि कथई! सु घिंगारु कि दण्डिका देखदा हि क्वाँसा छोरों का पेट मा चौळा पड़ून लगदा। भौत कोशिश कर्दा कि क्वी गलति नि हो, पर गलति छन कि ह्वे हि जांदि। कबि पहाड़ों मा पूरो त घर का काम अधूरो। कबि भूगोल मा गोल, कबि हिन्दी मा बिन्दि। कबि हिसाब मा हीरो त अंग्रेजी मा जीरो। सु बल बखरा कि ब्वे कब तलक जि मनाओ खैर। त टुप सूणा अर चुप बढ़ावा हाथ। घौर जैकि शिकैत करा त ओ लोळा बुबा उल्टी राय देंदा- "अरे, सैल्या-सैल्या मार। हिरदैराम कि मार अर औंळौ स्वाद बाद मा औंद याद।" अर बात बि सच्चि छई। हैड़ाखाळ स्कूल बिटि आज तलक जतगा बि बच्चा पास ह्वेन वो ह्वेन फर्स्ट डिवीजन मा पास।

यीं स्कूलै एक तिसरि पर कतै निरापद हस्ती छई-नायब मास्साब सिताबसिंह जी की। बिलकुल गौ आदिम। आज तक वूंका पास कबि बि क्वी स्थायी दण्डिका नि रई। कबि मन मा ऐ त रख बि लींदा पर जादातर वो निहथो हि रैंदा। कुर्सी पर बैठी कि मेज पर वु एक खास ताल बजौंदा 'पढ़ा रे किताब!' अर फेर जम्हई पर जम्हई औणा लगदि वूंकु अर झिट देर-मा कुर्सी मा हि ह्वे जांदा निढाळ। ताश-पत्ती का शौकीन आदिम रात-रातभर चलदी। सु आखिर रात कु उणिंदो मनखि दिन मा हि त करलो अराम। निंद मा कबि-कबि वूंका हाथ मेज का ऐंच इन्नु जांदा जन्नु वो पत्ती हूंण बंटणा। 'पढ़ा रे किताब!' सु

'पढ़ा रे किताब' ह्वेगे छयो मास्साब कु तकिया कलाम अर बच्चोंन अपणा आदरणीय गुरु को नौं सिताबसिंह की जगा मा करदे छयो मास्साब किताबसिंह।

वे दिन हिरदैराम जी ना आधा दर्जन बच्चा दण्डिका- परेड का वास्ता लैन मा खड़ा करि हि छया कि तबि चतरु चिट्ठी रसान एक लिफाफौ धरगे वूंकि मेज पर। चिट्ठी पढ़दै वूंका आँखौं मा ऐगे चमक। दण्डिका वूंन मेज मा रखदे अर बच्चों कु बैठणा को इशारु करे। शेरू भेजी कि फेर नायब मास्साब बुलैने।

क्य बात छ साब? कनै करुं याद? सिताबसिंह जी न लम्बी जम्हई ले कि बोल- 'अजी साब, यख त उन्नि तबियत चलणी छ खराब।'

बस-बस यीं चिट्ठी पौढ़दी जरा फेर कर लिया आराम। चिट्ठी बांचणू छयो कि सिताबसिंह जी नाचणा लगिन।

"अल्या! बधाई हो साब बधाई! जूनियर हाईस्कूलै हेडमास्टरी का वास्ता आपकु इन्टरव्यू छ। बस करा कंटर घ्यू कि तय्यारि अर एक खुशखबरी हौर। आपन शिक्षा अधिकारी को नौं बि पढ़े?

अजी साब, नौं छ सिरफ पाण्डे याने आपकु कबि को पट्ट शिष्य नीलाम्बर याने कुखड़ गौं का पीताम्बर पाण्डे को नौनु नीलाम्बर पाण्डे। जैका हाथ पर शैत अबि तलक होलो आपै दारुण-दण्डिका को खोट मौजूद वी।"

हैंसी तैं, "ओ नील? शिक्षा अधिकारी बणगे?"

"अजी साब, वु क्य बणगे कि बस बणगे आपको काम बि। बस बिना कंटर घ्यू का हि सिद्ध ह्वेगे आपौ इन्टरव्यू बि।" अर फेर एक लम्बि जम्हई ले चुप ह्वेगे छा सिताब सिंह जी। दिन-दुफरा हि निन्द मा वूंका आँखा घुंघरु छा बण्या।

"अच्छा साब, जावा, करल्या आराम-बच्चौं कु मि देख ल्यूंलो।" हिरदैराम जी न बोले अर फेर चिट्ठी हाथ मा ल्हीक पड़गेन भारी घंघतोळ मा। अरे, वी नीलू जु रै बचपनै मा एक नम्बरौ शैतान! गौं भर कि कखड़ी-मुंगरी कु चोर, महा उछेदि अर रौल्या-धौल्या नीलू जु बणगे आज शिक्षा अधिकारी। वूंका समणे वो दिन ताजो ह्वेगे जै दिन दिन-दुफरा मा वूंन नीलू आरुखाळ का बच्चों दगड़े गिल्ली-डंडा खेलदौ पकड़ि छौ। तब वूंन वेका हाथौ डंडा छीनीक खूब सटेली छयो वो। एक डंडा वेका उल्टा बायां हाथ पर पड़े। चमड़ा फटगे। खून निकळण लगे अर कुछ दिन बाद बणगे एक पक्कु खोट। पर नीलू सरी पीड़ा चुपचाप पीगे। बस वु दिन छयो अर स्कूल छोड़ना कु आखिरी दिन कि नीलू पढ़ाई मा ह्वेगे दत्तचित्त। फाइनल मा सर्या केन्द्र पर वु पैलु निकळे अर आज बणगे वूंको बि अफसर। क्या सोचदो होलो वूंका बारा मा? न हो मरख्वड्या मास्टर बोली कि इन्टरव्यू का बग्त करो वूंकि बेजत्ति! न हो इन बोलो, न हो उन बोलो। सु हिरदैराम जी का मन मा घंघतोळ कि चर्खी सीं फरकीण लगगे कि जौं कि नि जौं?

इन्टरव्यू कि तारिख जनि-जनि नजीक औंदि-जांदी हौर स्कूलूं मा मास्टर लोगूं की आपा-धापी कि खबर बि बढ़दि जांदी।

अरे साब! दि भै, क्य कन्ना छयां तुम? सिताबसिंह जी बराबर अपणि निंद खराब कैकी हिरदैराम जी को कचोटदा रैंदा- "सु बल सरकमणि मंत्री जी कि चिट्ठी लैगे अर सु औतारु बल एम० पी० साबै। जिला दफ्तर मा दैल-फैल मचीं छ अर साब, एक तुम छया कि बस सिरफ मन-ही-मन कन्ना मन्थन कि जौं कि नि जौं।"

आखिर वूंन जाणौ निश्चय करे किलै कि जब तलक नौकरी कन्न तब तलक आदेशौ पालन कन्न हि चैंद। अनुशासन बि त आखिर क्वी चीज छ।

सु शेरू न कुरबुरी मा उठीक भड्डु गरम कै कि मास्साब का कपड़ों पर इस्त्री करदे। तेल अर तवा कु मौसु मिलैकि ह्वेगे जुतौं पर पौलिस अर कतामति मा सिताबसिंह जी का ख्वींडा ब्लेड से रुखण्या दाढ़ी का खूंटा उखाड़िक हिरदैराम जी ना सुबैरै बस पकड़े अर पौंछ गेन शिक्षा अधिकारी का कार्यालय मा।

इन्टरव्यू कि अखळा-चखळी चालू छै अर अभ्यर्थ्यूं मा हूंणी छै खुसुर-फुसुर। एक मास्टर जी भितर से ऐनी त सब्यूंन घेर दीने। "हाँ त, गुमानसिंह जी, क्य पूछे आप से?"

"अरे साब, मि से पूछ कि चमड़े का सिक्का किसने चलाया था?" मिन जवाब दे, एक रज्जा ने। फिर वूंन पूछे- क्या नाम था उसका? मिन जवाब दे- हुमायूँ।"

"हैं! हुमायूं बोले आपन? त फेल!" एक बुजुर्गवार ना साफ बोलदे। हैंका मास्साब भैने ऐने त वूंन बताए- "अरे भै, मि से त वूंन एक सरल सवाल पूछ दे कि एक पेड़ पर दस चिड़ियाँ बैठी थीं। शिकारी ने फायर की तो दो मर गईं, तो पेड़ पर शेष कितनी रहीं?"

"त क्या द्या उत्तर?" एक सज्जन ना पूछे।

"अजी साब, मिन उत्तर दे आठ रैगेनी डाळा पर!"

"त तुम भी फेल!" रुमालन अस्यौ-पस्यौ पूंछदा एक मास्टर जीन बोले, "अजी साब, आपन गणित लड़ाए पर अकल नि लड़ाई। उत्तर छौ शून्य! जब फैर ह्वे होली त फेर डाळा पर क्वी बि चिड़िया किलै रालि बैठीं!"

एक चौड़ा सुलार वाळा मास्टर जी दौड़दु ऐने भैर।

"ल्या भै, मि से त वूंन एक पखाणो हि पूछ दे कि तितरी का अगनै तितरी अर तितरी का पिछनै तितरी- त कत्ती तितरी?"

"त क्य बतै आपन?" एक तिरछी टोपी वाळा अभ्यर्थी न पूछे।

"मिन बताए तीन तितरी।"

"गलत-गलत। सवाल साफ छा। द्वी तितरी।" एक लम्बी मूंछ वाळा मास्साब न बोले- "इन मा त इन्नि लगणू छ भै कि शैत हि हो हम मधे क्वी बि पास! सवाल देखा दी सवाल!

पर भै लोगु, डूब मन्नै बात छ कि अध्यापक से एक निरबुद्धा अधिकारी ई तरौं की ग्वरबट्या सवाल छन पूछणा।" एक खद्दरधारी मास्साब गुस्सा मा लाल ह्वे कि छा बोलणा- "मेरि समझ से त हम सब कु कर देण चैंद ये दफ्तर से वाक-आउट!"

"अरे नेता जी, यु सरकारी दफ्तर छ, विधानसभा नी छ कि कर देला वाक-आउट!" एक सौम्य मुख वाळा मास्टर साब न टोके- "अरे साब यो नौकरी को इन्टरव्यू छ इन्टरव्यू, कुछ बि पूछे सकेंदा अर फेर प्रमोशन चैंद त जबाब बि देण हि पड़लो, नितर जावा घौर।"

एक गंगलोड़ा कि तरौं गुटमुटा मास्टर साब त गुस्सा मा जनु भाषण हि झड़ना लगीन। "भै-भुल्युं! यु इन्टरव्यू त वेकु जैकु कंटर घ्यू हो बढ़िया! या जैका पास मंत्री जी, एम० पी० साब या एम० एल० ए० साबै हो सिफारिसी चिट्ठी। हमारा पास त भै प्रधान जी तक कि बि नी छ! सब दिखावा छ दिखावा। भै लोगूं, परमोशन होण वाळौं कि त बल लिस्ट बि ह्वेगे पैले हि टैप! पर चला, जनु होलु सब्बु कु तन्नि होलु गब्बु कु।"

तबि सिरकी का भैर ऐकी चपड़ासी कि धै- "हिरदैराम जी हैं? हिरदैराम जी हैड़ाखाल?"

कन्धा मा लटकदा लाल अंगोछा से हिरदैराम जीन मुक पूंछे अर सरासरी अगनै बढ़ने त जनु भितर क्वी हंसी-हंसी की बत्याणा छया- "अरे साब, त ई होया निरदैराम जी बमबोला!" अर फेर हंसी का खितखिताट। झिट देर त वूंका खुट्टा जाम ह्वे गेनी पर फेर वो सिरकी सरकै कि पौंछ हि गेनि भितर।

एक बड़ि मेज का पिछनै तीन अफसर बैठ्यां छया। बीच वाळा ना उठी की हाथ जोड़ने- "गुरु जी प्रणाम, बैठिए।" वे अफसर का बायां हाथ का ऐंच खोट साफ छौ दिखेणू। हिरदैराम जी पछाण गेनी नीलू तैं।

बैठी ही छया कि दैणी तरफ बैठ्यां अधिकारी न हैंसदा-हैंसदि पूछै- "गुरु जी आप तो संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित हैं। बताइए यदि खण्ड से खण्डिका, चण्ड से चण्डिका तो दण्ड से?"

साफ छौ कि दण्ड से दण्डिका अर यो भी साफ छौ कि यो प्रश्न हिरदैराम जी का वास्ता व्यंग्य-बाण छयो। वूंका बदन पर जनु अपमान को छंछेड़ू फूट पड़े अर गुस्सा से वूंको मुख लाल बणगे। तब वे अफसर न हि फेर हैंसदा-हैंसदि बोले- "गुरु जी, उत्तर तो सरल है, दण्डिका हुआ न दण्डिका याने आपका ब्रह्मशस्त्र दण्डिका।"

हिरदैराम जी एकदम खड़ा ह्वे गेनी। वूंका सांखा तण गेनी अर आँखा चढ़ गेनी। तबि नीलाम्बरै आवाज कमरा मा गूंजे- "नहीं, ऐसे प्रश्न नहीं, डिप्टी साहब, वापस लीजिए अपना प्रश्न। क्षमा कीजिए गुरु जी, आप जा सकते हैं, हो गया आपका इन्टरव्यू।"

हिरदैराम जी कमरा से भैर ऐकी तीरै तरौं सीधो पौंछगेन मोटर स्टेशन। बस पकड़े अर सीधा हैड़ाखाळ। बन्द ह्वेगे भूख-तीस। छळकेगे सारा बदन पर आत्मग्लानि कु अस्यो-पस्यो। चुपचाप खाट मा पसर गेनी। लेकिन दिमाग मा वी दांय का फेरों कि तरौं फिर-फिर रिटणा लगे वी प्रश्न-गुरु जी, चण्ड से चण्डिका

तो दण्ड से? तो दण्ड से? तो हाय त आखिर ले ही लेनी नीलू न वूं से बदलो? वो मन ही मन सोचणा छया- अरे! नीलू की मिट्ठी फटकार त सिरफ दिखावै छई कि पैलि घौ लगा अर फेर लगै द्या मलहम।

हिरदैराम जी कि खाट पकड़ना कि खबर शेरू से मिले त सिताबसिंह जी तैं वूंको इन्टरव्यू खराब हूंण कु पक्कु विश्वास ह्वेगे। आज दिन भर छुट्टी करीकि वु फसोरी कि सेयां बि छया। सु चोळा बि आज चेतन छयो। पौंछ गेन हिरदैराम जी का पास।

"कनु रै साब इन्टरव्यू? किलै पकड़े स्य खाट?" सिताबसिंह जी को भाषण जारी ह्वेगे छयो- "अरे साब, मि त पैलि से ही कचोटदू रयूं, करा कुछ झाळू-माळू, या लावा कै नेतै चिट्ठी पर हाय, आपन कख सूणी? अब त सरकमणि हि सरकला ऐंच अर हीरामणि डळे जाला कै अंधेरा कूणा! सु करल्या मीनत। निकाळ ल्या हौरूं का छोरों कु फर्स्ट! अपणु त साब एक पक्कु उसूल छ- न कैकु फेल न कैकु पास, बस खावा-पीवा अर खेला ताश! क्य हूंद ई मास्टरगिरी मा? पैलि बोल्दा छा- ल्या साब तन-खा! अर अब ब्वल्दन-ल्या साब, बे-तन।"

पर हिरदैराम जी न क्वी बि उत्तर नि देयो। बस एकटक वु कमरा का कूणा देखदु रै गेनी।

पर मास्टर सिताबसिंह जी त आज जनु कै असन्तुष्ट नेतै तरौं जादा हि मुखर ह्वेगे छा।

"हरबोला जी, हम त छां साब खानदानी नायब मास्टर! दादा नायब मास्टर, बुबा नायब मास्टर त खुद बि नायब मास्टर! न हेड बण्या अर न कैन बणणै कोशिश हि करे। हमुन सिरफ पढ़े ऋषि चारवाकौ नीति-शास्त्र कि अरे भै, जान छ त जहान छ, जब तक जीवा सुख से जीवा, कर्ज करा अर घ्यू पीवा, किलैकि फेर एक दिन ई देह न भस्मीभूत हूंणा अर को जण्द फेर पुनर्जन्म हो कि नि हो!"

हैंका दिन स्कूल खुले त हिरदैराम जी कि वी पुकार- 'शेरू!' अर शेरू न फटाक करी धरदे दण्डिका मेज पर। दण्डिका द्यखदे हिरदैराम जी का भौं चढ़ गेनी। एक फुंकार का दगड़ा वूंन द्वी हाथूं पर अड़ाए दण्डिका अर घुण्डा पर दबै कि खटाक करि। खण्ड-खण्ड ह्वेगे वा अर फेर वूंन जोर से चुट्ये दे वा सड़क पर। इन्नि आवाज ह्वे कि बच्चा कुछ देर चित्रलिखित सीं रै गेन। वु इन्ना हक्का-बक्का रै गे छया बैठ्यां जनु सीता-स्वयंवर का समै, शिव धनुष भंग हूंण पर, रै गे छा देश-देश का नरेश। अचणचक आवाज सुणिक अपणि खाट मा सुनिंद पड्यां मास्साब सिताबसिंह बबरैकि चड़क इनु खड्ड ह्वेनी खाट पर जनु धनुष-भंग कि ध्वनि सूणिक फरसुराम जी को ह्वेगे हो तपो भंग। वु चटपट भैर ऐकी गरजने- "अरे छोरो! केन तोड़े रे हमारा हेड मास्साब की दण्डिका?" जनु कि साक्षात फरशुराम हो गरजणू- "अरे किस अभागे ने किया है खण्ड-खण्ड मेरे गुरु का दण्ड?" बबरैकी वो चौछौड़ी रीटिन त बात कुछ-कुछ वूंकि समझ मा ऐगे अर वो चुपचाप फेर पौंछ गेन अपणा तन्द्रा लोक मा।

बस दण्डिका को टूटण छयो कि वे दिन से हैड़ाखाळ स्कूल को माहौल इनो ह्वेगे जनु बणाग पर पड़गे हो बरफ। सबि ह्वेगे लुतपुतो? क्वी पढ़ो त ठीक, नि पढ़ो त ठीक। शेरू का ह्वेगे छा हौंसला हि पस्त। पैलि मास्साब बोलदा छया- 'शेरू!' त वो धर देंदु छौ वूंका समणे दण्डिका। जनु क्वी हौलदार धर द्यो अपणा थाणेदार का हाथ मा पिस्तौल कि ल्या साब करल्या फैर! पर अब दण्डिका नि टूटि बल्कि शेरू

को टुटगे दिल। कबि छौ डांडा को सी डंडवाक अर अब छोरों का समणे बणगे छौ कचील को-सीं कितलू। अर झूठ किलै ब्वलण हेडमास्टर निरदैराम जी बि अब बिना हाथ मा दण्डिका का इन लगदा जनु बिना फरसा का फरशुराम। यां कै ब्वल्दन-पुनर्मूषिका भवः।

उनै मास्टर सिताबसिंह कि चिन्ता से चर्बी अलग गळणी छई कि जब हिरदैराम जना मीनति मनखि सीढ़ी नि चढ़ सकणू छ त वे सरीखा गौळ आदिमै त कबि-बि खाट ह्वे जालि खड़ि। नौकरी त हूंद ढुंगै जड़।

कुछ दिन मा फेर चतुरु चिट्ठी रसान धरगे मेज पर द्वी चिट्ठी। एक सरकारी अर हैंकि हिरदैराम जी का नौं व्यक्तिगत। पर चिट्ठी खोलणा को हिरदैराम जी तैं सांसु नि हूंणू छयो। सु सिताबसिंह जी बुलायै गेन। सिताबसिंह जी न चिट्ठी पढ़े, त जम्हई ले-लेकी नाचणा लगिने "बधाई हो साब, बधाई! पैलि खला मिठाई न-न साब, आज त खोलद्या छात्ती अर करद्या झाळू-माळू! आपै तरक्की ह्वेगे-हेडमास्टर जूनियर हाईस्कूल बसन्तपुर का पद पर अर खास खुशखबरी या छ कि मेरिट लिस्ट मा छ आपौ नौं पैलु! मि त पैले-हि जण्दु छयो, वु त खामखां आपै जिकुड़ि मा हि रै घंघतोळ! दूध-को-दूध अर पाणि-को-पाणि ह्वेगे। सरकमणि ई लिस्ट मा बि सरक्यां हि छन साब, यांक्वी ब्वल्दन बल हंस-न्याय!"

"अर ल्या, य सूणा नीलू कि मेरा नौं लिखीं चिट्ठी बि"- हिरदैराम जी पढ़ून लगीने- "पूजनीय दण्डवत् प्रणाम। आपै पदोन्नति को आदेश मिल गे होलो। योग्यता सूची मा आप प्रथम रईने। मेरो यां-मा क्वी बि हाथ नी छ। सरकार न आपै इस्कूल का सदैव अच्छा परीक्षाफल अर अनुशासन से प्रसन्न ह्वेकी न सिरफ आपै तरक्कि करे बल्कि यथासमय आपा सम्मानस्वरूप स्वर्ण-पदक प्रदान कन्नौ बि निश्चय करे। इन्टरव्यू का समै गलत प्रश्न पूछणा वास्ता हमारा डिप्टी साहब आप तैं क्षमा पत्र भेजणा छन। अर मि कु त गुरु-कृपा कि छाप हाथ देखी कि रोज हि आपै याद औंदि। हां, सिताबसिंह मास्साब को जरूर..... ।"

अर हिरदैराम जीन बीच मा हि पत्र पढ़नों बन्द कर दे। बस सिताबसिंह जी फाल-इन ह्वे गेनी- "द ल्या साब, मिट्ठू-मिट्ठू, गप्प अर कडु-कडु थू। क्य लिख्यूं छ ए निरभाग का वास्ता? अरे भै, न हो दुश्मनु की शिकैत्यूं से एक नायब मास्टरी पर भी लगगे हो तुरुप! आप का हाथ मा त फंसगे तीन इक्कौं कि तिरैल अर न हो मेरु ह्वे जाओ शो डाउन!"

हिरदैराम जी खितखित हैंसिन- "त ल्या, तुम बि खला मिठै। नीलू को लिख्यूं छ कि मास्साब सिताब सिंह जी तैं बि जरूर पौंछाणी मेरि बधै। वु तख आपै जगा हेडमास्टर हैड़ाखाळ का पद पर ह्वे गेनी तैनात।"

"अजी साब, क्यांकु करद्यां मखौल? कितलू करे बल गुरौ की सौर, तकणें-तकणें कि मौर। हम तैं त साब ई नायब मास्टरी-मा हि भगवान रौंण द्या यो त बस, धनभाग छन हमारा।"

हिरदैराम जीन लिस्ट वाळु आदेश सिताबसिंह का हाथ मा पकड़ै दे। "ल्या, चिट्ठी मजाक छ त यु आदेश पढ़ा अन्त मा।"

अर सच्चे कि आदेश साफ छयो। सिताबसिंह जी कि बि तरक्कि ह्वे गे छई। सिताब सिंह जी कि जम्हई अन्तर्ध्यान ह्वे गे छई।

"धन्य हो साब! आपका हाथ तिरैल ऐ त अन्धा का हाथ भी बुटेर कि तरौं फंसगे लंगड़ी! आपै मीनत से नौं ह्वे स्कूल को। सु शिकार त करे शेर ना, पर बांठी ये आलसी अजगर तैं बि मिलगे। आज हमारि कबि ऐथर नि ठसकणा कि कुल परम्परा बि टुटगे अर मास्टर का मुंड मा एक हेड को सिंग बि जमगे! नीलू को शिक्षा अधिकारी नीलाम्बर अर ये नायब मास्टर किताब सिंह को हेडमास्टर सिताब सिंह बणौण वाळा आप हि छन निरदैराम जी बमबोला!"

बच्चों न डबल खुशखबरी सूणे त रौळा-धौळा करीकि वो नाचणा लगीने। शोर बढ़े त सिताब सिंह न मेज पर मारे जोरै थाप- "अरे छोरो! शोर क्यांकु? खोला रे किताब!" बस फेर त हौर बि हैंसारत मचगे अर ई खुशी मा हि शेरू मोटा न फुटबौल की तरौं उठी तैं टन-टन-टन घंटी बजै दे।

आखिर ऐगे बिदा हूंण को दिन बि। स्कूला बच्चा अर गौं-पट्टी का भौत सारा लोग कट्ठा ह्वेने। खूब पूरी-प्रसाद घुटे। भाषण ह्वेने अर अन्त मा रूंदो-रूंदो मास्साब को पट्ट शिष्य शेरू मोनीटर बि खडु ह्वेगे बोलणौ कु।

"भुल्या-भुल्यूं! हमारा मास्साब न दण्डिका त पैलै हि बिदा करदे छई अर सु आज अफु बि हूंणा छन हमसे बिदा। अरे छोरो! वा दण्डिका नि छई, बल्कि गुरु-कृपा की फूल-कंडिका छई। हमारा मास्साब सल्लि किसाण छया। वूंन हम उछेदि बोड़ू कु छुड़बड़ाई कि आज मीनति बळ्द बणाए। हमारा दगड़े का बोड़ जु आरुखाळ गेने, वु य त बोड़ ही रै गेनी अर अगर बळ्द बणी बि छन त गौळ बळ्द बणीगेन! निचुट्टा! मिन बि ये साल नीलू पाण्डे की तरौं केन्द्र को रिकार्ड तोड़ कि फेर पौंछ जाण मास्साबै सेवा मा बसन्तपुर।"

हैंसारत मचगे। कि तबि बुरांसी खाळ का मोड़ पर डाकगाड़ी की प्वां सुणेण लगगे। सु बच्चौं न सरासरी हिरदैराम जी को कुल अदद पांच सामान सारिक धरदे सड़का किनारा। एक मूंजै तिपय्या खाट, जैंकु चौथु पय्या ढुंगा लगैकि बणदो छयो। एक बिना ताळा को भचक्यूं मटण्या सिन्दूक, जैका कब्जा पर ताळा कि जगा मुंगरेट खोस्यूं छयो। एक बिना हांडी कि काळी लालटेन, तवा, तसला। एक तेल से लतपती फटीं दरी का भितर सेळू से बन्ध्यूं बिस्तरु अर पांचवां अदद खुद हेडमास्टर निरदैराम जी बमबोला।

डाकगाड़ी बिलकुल पास ऐकी रुकगे। सामान छत पर अर मास्साब सीट पर बैठ गेनी। वूंका सदानी का तण्यां सांखा अर चढ़्यां आँखा ढीला पड़गे छया अर सब की तरफ बढ़गे छयो आशीर्वाद को हाथ। बच्चा उड्यारूं मा धुवयां सौलों कि तरौं सिसकणा छया अर हिरदैराम जी का आँखा अंगोछा से पूंछदा-पूंछदा सेमल का फूल बणगे छया। फेर घर्र-घर्र, पम्प-प्वां करदी गाड़ी मोड़ कटदी दौड़ पड़े बसन्तपुर की तरफ।

तब, अचाणचक पिछनै से एक कड़कदार आवाज ऐ! 'अरे शेरू!' सबुन पिछनै मुड़ी देखि कि मास्साब सिताब सिंह जी छया खड़ा अर हाथ मा वूंका छई टिमरु कि कंटीली दण्डिका।

"अब पढ़ै मा जरा भी गफलत नि हो रे छोरो!' सिताब सिंह जी गरजणा छया- 'दण्डिका न त कबि टुट्दी अर न कबि मरदि। वु त आत्मा कि तरौं अमर छ, बस चोळा बदलद चोळा! पैलि छई घिंगारु कि अर अब छ टिमरु कि। पैलि हथगुळि करदि छै सिर्फ लाल अर अब कर देलि ल्वेखाळ।"

ल्या भै! दण्डिका क्य लौटी कि जनु स्वयं हेडमास्टर हिरदैराम जी लौट गेन फेर हैड़ाखाळ। छड़ी सी छड़छड़ा, झंगरण्या जूंगा तण्यां सांखा अर चढूयां आंखा वाळा हेडमास्टर किताब सिंह जी, इन लगदा, जनु ऐन-सैन पुराणा हेडमास्टर निरदैराम जी बमबोला।

3.8 अभ्यास प्रश्न

1. प्राइमरी पाठशाला हैड़ाखाल के हेडमास्टर साहब का नाम क्या था?
2. बच्चों ने हेडमास्टर साहब का नाम बिगाड़कर क्या रख दिया था?
3. हिरदैराम जी के शिक्षाधिकारी बने शिष्य का नाम बताइए।
4. हिरदैराम जी की पदोन्नति किस विद्यालय में हुई?

3.7 सारांश

कहते हैं साहित्य समाज का दर्पण होता है अर्थात् हमारे समाज में जो भी अच्छा-बुरा घटित होता है वह साहित्य में झलकता है। हेडमास्टर हिरदैराम एक निष्ठावान, अनुशासनप्रिय अध्यापक हैं। प्राथमिक विद्यालय हैड़ाखाल उनके कड़क अनुशासन के कारण बच्चों ने उनका नाम हिरदैराम हरबोला से निरदैराम बमबोला कर दिया। उनके साथी सहायक अध्यापक सिताब सिंह की आलसी प्रवृत्ति के कारण उनका नाम किताब सिंह पड़ गया। हिरदैराम पढ़ाई के मामले में बहुत सख्त जैसे परशुराम के हाथ में कुल्हाड़ी वैसे ही हिरदैराम के हाथ में छड़ी (दण्डिका)। मेधावी छात्रों को शाबाशी तो कामचोरों को दण्डिका का प्रसाद सदैव मिलता। न जाने उनके साधे कितने विद्यार्थी उच्च पदों पर आसीन हुए होंगे। ऐसा ही उनका एक मेधावी छात्र नीलाम्बर पाण्डे शिक्षा अधिकारी बन चुका है जिसको एक बार शैतानी करने पर हिरदैराम ने ऐसा मारा कि हाथ पर बेंत का निशान आज भी है। एक दिन हिरदैराम को साक्षात्कार हेतु एक विभागीय पत्र आता है जिसमें लिखा था कि आप अमुक तारीख को हेड मास्टर पद हेतु साक्षात्कार में पहुँचें। आदेश उन्हें उन्हीं के शिष्य शिक्षा अधिकारी नीलू पाण्डे का था। गुरुजी को बेचैनी होने लगी। कहीं ऐसा न हो कि साक्षात्कार के समय वह पुरानी बातों को याद करके मुझे बेइज्जत न करे। उनके कुछ दिन इसी ऊहापोह में बीते। वे साक्षात्कार में पहुँचते हैं। कई उम्मीदवार अध्यापक इस प्रक्रिया में होते हैं। सभी से विचित्र प्रश्न पूछे जाते हैं। हिरदैराम की बारी आई तो वहाँ बैठे किसी अन्य अधिकारी ने पूछा कि चण्ड से चण्डिका तो दण्ड से? स्पष्ट था कि यह प्रश्न उनसे

व्यंग्यात्मक पूछा गया। यद्यपि इस पर नीलाम्बर पाण्डे ने अपने गुरुजी से क्षमा भी मांगी किन्तु गुरुजी आत्मग्लानि से भर गये। घर पर आकर निढाल पड़ गये। कुछ दिन पश्चात् उनकी पदोन्नति का आदेश मिलता है। नीलू पाण्डे भी उन्हें बधाई पत्र भेजता है तथा साथी के गलत प्रश्न पूछने पर क्षमा याचना भी की जाती है। कहानी तत्वों तथा भाषा शैली के आधार पर यह एक उच्चकोटि की कहानी है।

3.6 शब्दार्थ

जूंगा- मूंछ, लिसोरी-लिसोरी- घसीट-घसीट कर, जन बल मएड़ा तन जयेड़ा- जैसी माँ वैसे बच्चे, चोळा पड़ना- भय व्याप्त होना, औंळा- आंवला, घंघतोळ- ऊहापोह की स्थिति, उछेदी- शैतान, छंछेडू- धारा, कितलू- केंचुआ, सौला- सेही।

कहानीकार के आधार पर उत्तर- 1. ग्राम- जोश्याणा, पौड़ी गढ़वाल, 2. हिमवंतवासी, 3. एक ढांगा की आत्मकथा, 4. सीता बणवास।

कहानी के आधार पर उत्तर- 1. हिरदैराम हरबोला, 2. निरदैराम बमबोला, 3. नीलाम्बर पाण्डे, 4. जूनियर हाईस्कूल बसन्तपुर।

3.9 संदर्भ

1. गढ़वाली गद्य परंपरा- अनिल डबराल
2. गढ़वाल की दिवंगत विभूतियाँ- डॉ० नंदकिशोर ढौंडियाल
3. हुंगरा- मदनमोहन डुकलाण एवं गिरीश सुन्दरियाल

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. 'हेड मास्टर हिदरैराम' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखें।
2. साहित्यकार भगवती प्रसाद जोशी का जीवन परिचय लिखिए।

इकाई-4

गढ़वाली कहानी- 'डूण्डा खच्चरै कथा'- मोहनलाल नेगी

(Dunda Khacharai Katha- Mohan Lal Negi)

इकाई संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 मोहनलाल नेगी का संक्षिप्त परिचय

4.4 अभ्यास प्रश्न

4.5 'डूण्डा खच्चरै कथा' कहानी

4.6 अभ्यास प्रश्न

4.7 सारांश

4.8 शब्दार्थ

4.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

4.10 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

गढ़वाली के अमर कथाकार मोहनलाल नेगी की यह कथा एक निरीह पशु की पीड़ा की सशक्त अभिव्यक्ति है। पशु की स्वामी भक्ति व मनुष्य की स्वार्थपरकता का इसमें सजीव चित्रण है। लोभ लालच के वशीभूत मनुष्य किस प्रकार पशुओं पर अत्याचार करता है यह कथा उसका जीता- जागता उदाहरण है। कथा अथवा कहानी साहित्य की ऐसी सशक्त विधा है जिसमें किसी पात्र व घटना का विस्तृत वर्णन, चित्रण एवं विश्लेषण कर सकते हैं। यह विशेषता इस कहानी में देखी जा सकती है। मोहनलाल नेगी की कहानी कला का यह एक सुन्दर उदाहरण है। एक खच्चर को कहानी का केन्द्रीय पात्र बनाकर कहानी को रोचक ढंग से बुनना और उसमें विविध रंग भरना यह सब लोक की कहानी में ही सम्भव है। अपने लोक की असीम संवेदनाएँ, अपनी धरती के विविध रंग इस कहानी में देखने को मिलेंगे। श्रेष्ठ कथावस्तु के साथ इस कहानी में स्थानीय जनजीवन अलग और स्पष्ट दिखता है। यह क्षेत्रीय साहित्य की एक बड़ी खूबी है। कहानी पढ़कर स्पष्ट हो जाता है कि यह कोई कोरी कल्पना नहीं बल्कि यथार्थ का सजीव चित्रण है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:-

- कहानी विधा से परिचित होंगे।
- पशुओं की पीड़ा को समझ पायेंगे।
- गढ़वाली भाषा की लोकोक्तियों व कहावतों से परिचित होंगे।
- संवेदनशीलता के महत्व को समझ पायेंगे।
- मानव तथा पशुओं की एक-दूसरे पर निर्भरता को समझेंगे।

4.3 मोहनलाल नेगी का संक्षिप्त परिचय

कथा संग्रह 'जोनि पर छापु किलै' के लेखक मोहनलाल नेगी जी का जन्म 23 जनवरी, 1930 को ग्राम-बेलग्राम (नेग्याणा तोक), पट्टी- अठूर, जिला-टिहरी गढ़वाल में हुआ था। इनकी माता जी का नाम श्रीमती माया देवी तथा पिता जी का नाम श्री इन्द्रसिंह नेगी था। इनके पिताजी कृषि के साथ-साथ गाँव के ही पास दुकानदारी करते थे। इनकी माता गृहणी थीं। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। तीसरी कक्षा से आपने अंग्रेजी माध्यम के स्कूल प्रताप इण्टर कॉलेज में पढ़ा। आपकी इण्टर तक की पढ़ाई इसी विद्यालय में हुई। आपने 1948 में हाईस्कूल व सन् 1950 में इण्टर पास किया। आपने डी. ए. वी. देहरादून से बी० ए० तथा एल० एल० बी० किया। इसके बाद इन्होंने वकालात शुरू की।

गढ़वाली भाषा में लिखने की प्रेरणा आपको डॉ० महावीर प्रसाद गैरोला जी से मिली। आपकी पहली गढ़वाली कहानी 'थौळु' थी। 'जोनि पर छापु किलै' (1966-67) में आपकी 10 कहानियाँ हैं। 1985 में इस कहानी संग्रह के लिए आपको 'जय श्री' सम्मान दिया गया। साथ ही केदारखण्ड सांस्कृतिक सम्मान, हिंदी गौरव सम्मान, श्रीदेव सुमन संस्कृति सम्मान, चिट्ठी तथा आखर सम्मान से भी आपको सम्मानित किया गया। आपका दूसरा कहानी संग्रह 'बुरांस की पीड़' 1985 में प्रकाशित हुआ। सन् 2012 में आपने गढ़वाली उपन्यास 'सुनैना' प्रकाशित किया। आपने अपनी श्रेष्ठ 10 कहानियों का 'स्टोरीज ऑफ मिड हिमालया' नाम से अंग्रेजी में अनुवाद भी किया। संस्मरणात्मक पुस्तक 'यादों की गलियाँ' 2019 में प्रकाशित हुई। 26 अक्टूबर, 2020 को नब्बे वर्ष की आयु में आपका निधन हुआ।

4.4 अभ्यास प्रश्न

1. साहित्यकार मोहन लाल नेगी जी का जन्म कब हुआ?
2. मोहन लाल नेगी जी की पहली कहानी का नाम लिखें।

3. मोहन लाल नेगी जी के पहले कहानी संग्रह का नाम बताइए।
4. मोहन लाल नेगी जी की मृत्यु कब हुई?

4.4 कहानी- 'डूण्डा खच्चरै कथा'

घाम देवता दिनमान हिटि-हिटिक थकगि छौ। अब वु थक बिसौणी धार पैथर चलिगे। निस गंगाजि अर सामणि कुछ-कुछ साट्यों का लड़बड़ा डोखरा छैला पेट डुबगि छा। सारि फुंड थोड़ा-थोड़ा रैगि छौ घाम अछलेणौ तैं। बस इनु छौ चितेण लग्यूँ जनु क्वी गळा-गळा डुबगि हो पाणि मा अर मुंडळि-मुंडळि हो दिखेण लगीं। सेरा साट्टि का बालड़ौन भर्याँ। सुरसुर्या बथौं मा साट्यों कि सारि इनि चितेंदि जनि क्वी बांद हो ऐथर फंडि भाजण लगीं। साट्यों कि डाळि सुनैरि बालड़ों का बोझन इनि रैंदि उंदु झुकीं जनु कै ज्वान नौनि कु सरमन मुण्ड उंदु हो कर्यूँ। सारि का निस फंडि गंगाजि कुकडांद अर फेण बगौंद हिटण लगीं। बगणी कम अर सुंस्याट बिण्डि कन्न लगीं। जनु क्वी मनखि काम कम करु अर हल्ला जादा। गौड़ि दुदाळ इछि अर रमाळ जादा। गंगाजि का एक तरप पाखु छ जै पैथर अबि सूरज नारैण थक बिसौण बैठिन। थोड़ि देर पैलि घाम देवता गंगाजि दगड़ि छौ खेलण लग्यूँ अर लुकाचोरि कन्न लग्यूँ। अब वेको तैं डेरा जाणक अबेर ह्वेगि छै। गंगाजि जनि वे सणि छोड़णा हि नि हो लगीं। हात पकड़िक वे दगड़ि खेलण लगीं। पर घाम देवता न गंगाजि तैं बोलि, "कि मि त ठकर्वाणि जांदौं अब। तेरु क्या तु त अपणा बाट लगीं ठंडो मठो करिक। मैंन त कखि जाण। अब भोळ मिलला।" अर घाम देवता न सरबट छुड़ाई अपणु हात अर धार पैथर चलगे।

घाम धार पैथर गे त गंगाजि इनि लैगि लगण जनि भाण्डा परै कलै उतरगि हो। ओर-पोर डाळा बुरदौं ऐंच ओर-पोर पोथला चुंच्याण लग्याँ। क्वी अपणा बच्चों मा औण लग्याँ। क्वी डाळौं ऐंच अर ओर-पोर रिंगण लग्याँ। कागा, चिलांगा ठेठ ऐंच आसमान मा बथौं बुकाण पौंछ्याँ। अर कखि बिटिन छोटा-छोटा झाँपु बरोबर दिखेण लग्याँ। कखि क्वी मल्यो कि टोल जाण लगीं। कखि क्वी जनानि घास गाड्द-गाड्द गीतु का झुमका तोड़ण लगीं। क्वी घास गडोळा ल्हीक बण बिटिन औण लगीं त क्वी घस्यारि बिठा अर पाखौं फंडि घास गडोळु बाँधण लगीं। कखि कै गोरु कि घाण्डी टुन-टुन अर गण-मण करिक बजण लगीं। कखि दूर पाखौं गोरु बण फंडा सुपेद अर काळा टिपका दिखेण लग्याँ। डांडा-कांठो कि मुंडळि डुबदा घाम मंगि इनि दिखेण लगी जनि कैन लाल अर सुनैरा रंग मा रंगै हो।

साट्यो कि सारि का डिंवाळ फंडु एक बाटु जांदु। कुछ फंडै जैक तैं सारि का छोड़ फंडु ऐंच बिटिन एक गदनु बगदु। ये गदना बिटिन यूं सेरौं जनैं एक कूल जांदि। जैंन लोग अपणा डोखरों सणि पण्योंदा। या कूल गौं वाळों कि अफु छ गाड़ीं। गौं मा इन्नि कूल रैंदि लुकारि सेरौं गाड़ीं। अब साट्टि बलड़ोंन डोखरा लबड़झोंक बण्यां। मन बोल्दु कि जगा मंगन खड्डु नि उठण अर देखदि रैण। यां सि पैलि चौमासा देखा सेरौं त अलग-अलग डोखरों अलग-अलग रंग दिखेंदु। चौखुंदि अर लम्बि-लम्बि डोखर्यों जनि कैकि बानि-बानि कि धोति होन घाम पैरीं। क्वी रंगिलि क्वी प्याज्या रंगै त क्वी हर्याँ रंगै। जना-जना

कैका अगेता पिछेता होला अंगरा ढोल्याँ य रोपणि करीं। चौमासा जबारि सेरा साट्योंन हर्यां रैंदन बण्याँ अर वख पेट लोग साट्टि रैंदन नेळण लग्याँ उबारि त भौत सुन्दर मणेंदु। आँखों कि जनि तीस बुजदि अर थक कर बिसेर जांदि। अर जबारि मंड्वारति करिक लोग ये सोना सारिता भारा का भारा ल्हिजांदा अपणा-अपणा डेरौं मेटिक उबारि इनु चितयेंदु कि दुन्या मा क्वी रज्जा छ त इ छन बिचारा जु इतरु सोनु छन मेटण लग्याँ। पर ये सोना सणि बि वी मेटलु जेन जेठ-असाड़ कुलि का बाना राति जग्वाळि होलि। बाजि बग्त बारि नि मिलदि, बाजि बग्त कुल्यों का बाना लठ्यो मच जांदु। बाजि बग्त खोपरा अर मुण्ड सारिका फुट जांदा। उबारि लोग अंगरौ बचौण क अपणु ल्वे सारिकु बगौणौ तय्यार रैंदन पर एक बुन्द पाणि देणक मरदा छन, कपाळ फोड़दन। बात बि सै छ। जु जेठ-असाड़, सौण-भादौं अपणु ल्वे बगालु जेन उबारि रात-दिन कुछ नि चितौण, रात कुलि का बाना अंध्यारा मंगि चाहि कांडौं का मुट्ठ पड्ड खुट्टु चाहि तब किड़ा थुपड़ा मा पड्ड, कांडु बैठु चाहि किड्ड लिटाउ कुछ नि चितौण वी ये सोना सणि बि मेटलु। सोनु अर खून-खून अर पाणि यूं सबु कु सदानि गैरु दगड्ड रै। बिना खून का पाणि बणयाँ या खून...............कैन कबि सोनु पाई कि पौणु। सैरा चौमासा माटा मा अर पंगला मंगि जब लपड़ या देह कु पाणि बण तब अबारि यु नाज जैका सामणि सोनु क्वी चीज नी, देखण मा औंदु।

गदना उबु ढौंडु छ। ओर-पोर बि बाटु उच्चु निसु। जना-कना कि ताप नी यूं बाटौं फुंडा हिटण कि। पर गौं का लोग यूं बाटौं मा हिटदन। हिटदै नी बल्कि बोझ भारों ल्हीक बि औंदा-जांदा। नितर मोटर सड़क यख कखन औण। बाटा ऐंच सेरा छन जख साट्यों कि भरमार छ। ओर-पोर बिट्ठौं अर पाखौं फंडु बि खूब हर्यूँ छ। बिड्वाळ बिटि गंगाजि बि बगण लगीं। बाटु किड़ा कि चारौं लप-लप करिक चलगि कखि ठेठ फंडु गौं जथैं। बाटा फंडु सबुक तैं खूब रैंदु चलणौ सैज। बाटा का छोड़ अर ढीस बेड़ जे गोरु या पसु सणि टैम मिलिगि वी लग जांदु बाटा फंडु दाँत मारण। बाटा पर कु ढालु हो, चाहि डोखरु हो, चाहि लुंगलु हो वेकि भल्यार कख छै। गोस्यों का जग्वाळि जग्वाळि का अर गाळि दी-दी औखि बि जांदि।

ये बाटा फंडु अबारि एक खच्चर छ चन्न लग्यूँ जु उंडा-फंडा औंदारा-जांदारौं कि कबि गाळि खांदु अर कबि ढुंगा कि। जनान्यों कि नजर पड़दि खच्चर पर पिछ्वाड़ि अर गाळि औंदि गिच्चा बिटिन पैलि कि, “कैकु होलु य औताळि कु अर फरकायूँ लमडौण को। अब येन रात उज्याड़ खाण ऐंच सेरौं।” झट बाटा हिटदारौंन खच्चर पर डळु चलायु अर खच्चर अपणि धौंण ऐंच अर उण्डि फंडि करिक लचकुड़ि-लचकुड़ि करिक एक किनारा होणक करदु। झट लोग फुंडु चल जाउन त खच्चर फिर अपणा चन्न बैठ जाउ। जख तलक थोल पौंछु वख तलक त एकि जगा म चरु पर झट एक जगा मा चरिक अर लचक हैकि जगा मा चन्न लगि जाउ। हर्बि गिचान ‘थुर्र’ कर्द-कर्द अर पूछन माखा अर चल्डा हटौण लग्यूँ। पर रात दिन कु छ लुकारु चर्यूँ बाटु, यख फंडु चरिक वेकु चित्त नि बूझि। वेकि नजर ऐंच सेरौं अर बिट्ठौं फंडि पड़ि। अहा! घासन लड़बड़ बण्याँ बिट्ठा। नि होण जग्वाल्यूँ घास! लेटा लग्याँ घास का खच्चर का गिच्चा पर पाणि ऐगि। अर नाज का डाळा लंब्यौणक। पक्यां साटिन सेरा रिंगला अर

लड़बड़ा अर खुसबौं का लेटा चलण लग्यां। थोड़ा दुरु-दुरु तक खुसबु का भबका चलण लग्यां। बथौं जब बगदु त हौर बि दुरु-दुरु उड़दि य खुसबु। जब मनख्यों कु मन ललचै जांदु त यु त बिचारु खच्चर जि छौ। अर खच्चर बि बिचारु डुण्डु। जु डांडा बिट्ठौं नि सकदु।

प्वटगी आग नखरि होंदि अर लालच तब हौर बि। चलगि खच्चर लचकुड़ि-लचकुड़ि करिक तैं सेरा का छोड़ पर। अब भचकै रुमुक पड़गि छै। मेसेगि खच्चर साट्टि खाण पर। जनु क्वी गुड़ का खोज जाउ अर जलेब्यों कु थाल मिल जाउ। खच्चर लगदा-बगदि करिक लगिगे साट्टि खाण पर जिकुड़ि तैं त धकधकी रै लगीं। जनु क्वी नौन्याळ चोरिक गाड्ड अपणा भितरन मिठै पर जिकुड़ा डर हो बैठीं कि नि हो कखि क्वी देख द्यो। दिखेण त क्वी नि छौ लग्यूं पर कैन देखि, ऐ जाउ क्वी। क्वी बाटा हिटदारु डोखरा का गुसैं मा बोल द्यो। जग्वाळु रौ कखि बिटि परगट ह्वेक। घड़ेक खच्चर न लगदा-बगदि करिक भरि पेट। जब पेट बड्डु बड़क भरेगि तब फिर निचन्त करिक लैगि खाण। अब वे सणि कुछ-कुछ बेफिक्रि बि ह्वेगि छै कि अब कु औंदु ई रात डोखरा हेरनौ। अब सब अपणा-अपणा डेरौं हिटगि होला। अबार खच्चर अपणि डुण्डि गौणि लीक घसरदा-घसरदा बीच डोखरा पौंछगि। बीच डोखरा जबरेक वेन गिच्चु लंब्यायि बालड़ा खाणकौ तबरेक नि आयु डोखरा कु गोसि कखि बिटिन। बाट पर डोखरु छौ ही। उज्याड़ खाणै डर त चार घड़ी चौसठ रैंदि छै वख। डोखरा का गोसिन हेरि अपणा डोखरा, कखि क्वी गोरु उज्याड़ त नी पड़यूँ। देखि वेन त कैकु खच्चर उज्याड़ पड़यूँ। गे वु दौड़िक तैं डोखरा अर डल्याई वेन खच्चर। चलाइन वेन बड़ा-बड़ा जाड़ खच्चर पर। अर गाळि-न्यारि कि- "लमडि जालु यु कैकु सुदि औताळि कु कन छोड्यूँ। कनि करि वेन सैरि डोखरि चौपट। क्य पायि सैरा चौमासा मुण्ड कपाळ करि तैं" अर खच्चर बिचारु वीं डुण्डि गौणि सणि सैडि सारि फंडु लैगि ल्हसोड़ण। जख-जख खच्चर दौड्डु वख-वख साट्यों कु ढलकी बिछौणु लगि जाउ। जब खच्चर सणि दौड़ै दौड़ैक डोखरा का गुसैं ठेठ सारि पोर खदेड़ दिनि तब चैन लिनि वेन। अर तबि फिर त नि आउ उंदु।

डोखरा कु गुसैं जबारि तलक त पैथर रै रिंगि रिंगिक देखण लग्यूँ खच्चर बिचारु बि चलदि गे लपकांद-लपकांद अर झट गुसैं घूम पोर गे त खच्चर खड्डु ह्वेगि एक जगा मू। अर डोखरा का गोसिन बिचारा कु खायूँ-लिन्यूँ कपाळै बाटा गाड्यालि छौ। कसूर सि जादा वे सणि सजा मिली छै। भूख मा त मनखि-सारिकु चोरि करदु त वु त लट्याल खच्चर छौ। अबोल पसु। डल्ये डल्येक वेन बिचारा का ढमणा फोड़यालि छा। द्वी जाड़ डळौं कि इनि लगि वेका पीठि पर अर ढामणौं परन ल्वे का तुरड़ा लगिगिन बगण। बिचारु घैल ह्वेगि। पेट वेकु भरेगि छौ। वे सणि तीस बि लैगि। गंगाजि का किनारा गे वख पाणि पी ठंडु छकि तैं बि उडैं आई अर घड़ेक तलक वखिम लैगि खड़ा-खड़ि कुछ सोचण। रात अब बथेरि ह्वेगि छै। वेन बोलि अब कख डबखण जागु-जागु रात। फंडुफूका यखि मू रौलु पड़िक तैं। डुण्डु खुट्टु पैली छ। कखि अंध्यारा मा लमडी जि जौलु। अर वु वखि मा पड़गि भ्वाँ।

सदि पिड़ा इतगा नि जाणेंदि। पर जनि-जनि बासि रै होण लगीं तनि-तनि लठ्याळ का ल्वैणि जाउन पिड़ा न। कागा निरभाग अलग कगोतुणू वेका ढामणौं सणि। वु हौर करून वे सणि ल्वेखाळ। माखा

अलग करून दिक्क। अर डुण्डु त लठ्याळु छौ ही। रो अपणा फुट्याँ कर्मु पर। पर रोंदु के मू? क्वी अपणु न पराया। क्वी घौर न तिरप। कैमा लगांदु अपणि बिपदा? क्वी न क्वी। लोक त उल्टा तमासो लाणक अर नौं धरणक होंदा। क्वी होंदु वेकु त दवै दारु करदु। गोसि न ग्वाळ्या। निगोसि कु कर छुट्यूँ लठ्याळु सुदि। लोग उल्टा ताना मारदन। नौं धरदन- "हौर करदु छौ चोरि। सैडि डोखरि सपाचट्ट कर्यालि। तबि त गौणु बि ह्वे डुण्डु। इन्नि करि होलि कैकि चोरि तबि त तुड़ाई कखि खुट्टु" अर वे सणि अपणि दुर्चाल पर र्‌वे आउ। बिपदा मा मनखि हो चाहि जानवर हो अपणा सुदिनु सणि याद करदु। तरसदु छ वु अर रोण बैठद ऐसुर्जि का दिन याद करिक तैं। पर ऐसुर्जि मा सब कुछ बिसरे जांद। ऐसुर्जि अंधि होंदि। व कुछ नि देखदि। अग्वाड़ि न पिछ्वाड़ि। पर अबारि वेका घोर बिपदा का दिन छा अर वेका आँखौं का ऐथर अपणा सुदिन लैगिन एक-एक करिक रिंगण। वेका समणि सुदिनु कि पुराणि तस्वीर लैगि रींगण।

वे सणि याद आई जबारि वु छोटु छौ अर ठुम-ठुम करि नाचदु छौ उडुं-फंडु। मरजि ऐगि त माँ कि दुदि पर लग्यां, मरजि आई घास कि कोंगळि पत्ति खै दीनि। कबि अपणि माँ कि गैल डोखरों कि सैल कन्न चलिग्या। एक दिन वे कि ब्वे चरद-चरद कखि दुरु चलगि अर वु इखुलि छुटगि एक जगा मा। उबरि वु भौत हि सुन्दर अर प्यारु मणेंदु छौ। उबारि वु बालक बासौ छौ। ऐसुर्जि ही ऐसुर्जि। वेका खोंगला पर अर छाति पर अपणा पट्ट रंदु छौ चिपट्यूँ। कैकि क्वी परवा नी। लाट चलु चाहि बासा चलु। अबारि कुदिनु का घेरा मा छ आयूँ। देखिन वेन कुछ छोरा दुरु बिटिन औंद अर वु डरि गे। छोरा होंदा उकट्यणि का। अर तब स्कुलि छोरा त हौर बि होंदा। हैंका सणि पितौणक डल्यायि द्यौन चलैक तैं। अर वेन डर कु अपणु मुख हैकि तरप दीनि करिक। जां से छोरौं कि वे पर नजर नि पड़ु। वु चुपचाप खडु ह्वेगे। छोरा अब नजिकु ऐगि छा। अर अफु मा छ्वीं लांद-लांद छा जाण लग्याँ। वु वूंकि छ्वीं लैगि सुण्न। यि स्कुलि छोरा छा। कैकु बस्ता गळा उंदु लटकायूँ त कैकु पीठि उंदु। कैकु कांध उंदु। बस्ता बड़ा-बड़ा अर अफु छोटा-छोटा इतरा मेंडका जन। यूंक त किताब्यों कु बोझ सकणु मुसकिल, तब पढ़ून क्या यूंन इतरा किताबि-अपणु भाग। क्वी बोल्णु- "आज गम्भीर न मार खाण आज वेका सवाल नी लेयाँ करिक तैं।" क्वी बोलु "ब्याळि राधु न एक दर्जन लाठि खाईन हातु पर। पर र्‌वे नी मर्द को बच्चा।" क्वी बोलु- "यार सवालु कु मास्टर त भारि मरखुड़्या छ। अंगुळ्यों पेट पेंसिल कोचदु अर तब दबौंदु पट्ट करिक तैं। बस इनु चितेंदु कि अँगुळि टुटगिन। अर वेका लगाउ क्वी इनि पिड़ा तब पता चलु वे सणि। जे मास्टर कि अफु रंदि मार खाई वी मारदु बल औरू सणि।"

स्कुल्या नौन्याळ इन्नि अपणा छ्वींबथ लांद-लांद अर बौळे-बौळेंद जाण लग्याँ। पर जिकुड़ि सबुकि झुरण लगीं। कैकि जिकुड़ि यान झुरण लगीं कि पाठ नीं याद कर्यूँ। कैकि यान कि सवाल नी याद करिक ल्हायाँ। कैकु भुगोल कु पाठ नी याद कर्यूँ। तबरेक एक छोरा कि नजर पड़गि वे जथैं। वेन बोलि- "अरे वु देखा! घोड़ा कु बच्चा! अहा कनु सुन्दर छ प्यारू! चला चार पकड़ला तै सणि। कनु सुन्दर छोटुसेक चड़नक छैं।" अबि तलक जूंकि जिकुड़ि छै झुरण लगीं मास्टरू कि मार खाणै सोचिक,

वे देखिक सब मार-मूर भूलगिन। भागिन सब वे का पिछाड़ि। छोरा जब वेका नजीक पौंछिन तब देखि वूंन कि जतना छोटु यु दूरु बिटिन छौ दिखेण लग्यूँ उतना छोटु त नी छ वांसि कै बड्ड। आखिर खच्चरौ बच्चा होयु, मारि जु वेन एक कुतराड़ त ठेट अपणि ब्वे मा जैक थौ लिनि। कि वा बि चन्न छोड़िक अर नौन्याळ का धड़ूवै तैं आई। धौंकरा-फौंकरि करिक बच्चा अपणि ब्वे मा गे। वेकि मैड़िन वु प्यार करि, चाटि-फोंजि अर बोलि- "द मेरा चुप रा। क्वी नि मारदु त्वे सणि। जरा देखदौं मि धरदौं अब तों छोरौं कु डोळ।"

छोरौंन बि देखि इनै बिटिन घोड़ा कु बच्चा अपणि मैड़ि मा पौंछगे त वु बि लौटगिन। जनु क्वी नौन्याळ अफु सि छोटा नौन्याळा धादि हो लग्यूँ अर वेकि ब्वे का डौर कु उंदु भाग जाउ। अर छोरौं सणि देखा त स्कूल जाण छोड़ दिन्यु अर हैका मा छडेणक कनु मन बोल्दु वूंकु। स्कूल कि अबेर हो होण लगीं चाहि कुछ हो पर खेल-तमासा देखणक कना हौंदा। कनु ज्यू बोल्दु वूंकु घोड़ा का बच्चा ऐंच चढ़ूनकु। अब चढ़ा घोड़ि का बच्चा ऐंच। छोरा उंदु आइक अर स्कूल लगिन बाटा।

दिन का दिन वु बड्ड होंदु गे। अर एक दिन इनु आई कि वु अपणि माँ सि बेगलु ह्वेगि। क्वी आई वे सणि लेणक अर वेका गुसैंन रुप्यों का लोभन वे सणि कै परदेसि का हात बेच देनि। खायूँ-खियूँ खूब छौ वेकु। तन्दुरस्त खूब बण्यूँ जनु-जनु बड्ड ह्वे, तनु-तनु खूब सुन्दर गबरु ज्वान ह्वेगि मणुन बोझ सारन्याँ। नया गोसिन वेकु नौं सुरमा धरि। अति सुरमा दिखेण मा अबीज छौ। पर दिखेण मा बि बिल्कुल गट्टा गात कु। अब वेक तैं खुटा पर जुत्ता कु बन्दुबस्त बि ह्वेगि नौन्याळ जबारि तलैं डेरा फंडा रंदान वूंक तैं जुत्ता कु क्य काम पर झट बड़ा होया अर उंडा-फंडा जाण लैक होया त कामौ बोझ बि पड़ जांदु। उंडु-फंडु औणु जाणु पड़दु। यांक त लोक पाल्दा सैंतदा कि मेरु बड्ड होलु त काम धंधा कन्न लगलु। चलण पात समाळु। सुरमा का खुटौं पर बि क्य सुन्दर लुवा का जुत्ता (खुरि) पैरेगिन। एक दिन ल्हीगि वेकु गुसैं वे सणि इक्कि जुत्तौं कि दुकानि पर जख हौर बि छा आयां कै खच्चर जागु-जागु बिटिन अपणा खुटौं पर खुरि लगाणौ। कैका खुटौं पर कु पुराणु बिस्यूँ मास फुंडु ल्हाचेण लग्यूँ अर परेकिन जुत्ता खुटा पर जंट होण लग्याँ। नालबंद टुट्याँ-टाट्याँ जुत्तों सणि फंडु ढोल्न लग्यूँ अर नया पैराण लग्यूँ। सुरमा पर बि पैरेणि जुत्ता त सुरमा क्य छ कि नौल्याचार कु क्या छ कि खट-खट जुत्तौं का मिजाज दिखौण लग्यूँ। पैलि-पैलि पैरि छा जुत्ता। बाटा चलदा एक चिफळा ढुंगा मा खुट्टु रै रड़िक तैं अर घड़मण्ड लमडि रै भ्वाँ। देखदारौं क त सैल ह्वेगि पर सुरमा कु मुख सरमन लाल ह्वेगि। वु चड़म उठि खड्ड जनु कुछ नि ह्वे हो अर बाटा लैगि सरासर।

सुरमा अब उण्डु-फण्डु काम पर बि लैगि छौ जाण। बोझ सारदि वक्त कैयों कि नजर लैगि वे पर पड़ून। कै लैगिन वे सणि अटकल्न कि यु खच्चर छ त अजैं छोटु छ पर बोझ उतगा सकदु। कै सौदेर बि लैगिन वेका औण। कनि-कनि आरि कै खचरू वाळौंन पर वेका गोसिन सुरमा सणि नि बेचि। इनु भग्यान खच्चर कख मिल्दु? बाजा सुदि रैंदन ऐबि, लताड़ पर गूण फरकौंदार। अपणि चीज देणि सौंगि होंदि पर जब अफु ल्या तब पता चल्दु। लेंद-लेंद अर खोजद बितदि चौडण्डि। अर तब ढंग भौणि कि

चीज कख मिल्दि। पर जै सणि क्वी बस मा नि गाड सकु वे सणि लालच बस मा गाड द्यौ। लालच का बाना लोखुन अपणि जान सारिकि गवैंलि तब एक खच्चर बेचणु क्य चीज? एकन मुख मांगदा दाम दिनिन अर सुरमा अब हैंका खुंटा पर चलगि।

नयु गोसि हौर बि पक्कु खचर्वै छौ। असलि जनु होंदु मुंड ऐंच सापु या गलाबन्द भिड़ द्यौ अर मारु खचरू का लाठि बाट हिटद गितु का झमका तोडु अर इक्या बासान हैंका बासा थौ ल्यो। बोझ बि इनु धरदु छौ कि असक। जना कना खच्चर कि त कमर बैठ जाउ उंदि। हौर बि कै खच्चर छया वे मांगि क्वी सात-आठ। अजैं बि छन कि न, क्वी पता नी। कै जगौं माल ल्हिजोदु छौ वु। जबारि मोटर नि छै उबारि त ठेट वे जाजल बिटि ल्हौंदा छा लोग खचरु माति माल। पर गौं अजैं कि खचरु मति सारण पड़लु। पैलि टिरि कु बासु जाजाल पड़दु छौ अर जाजल कु रिसिकेस। रिसिकेस बिटिन फिर टीरि का अर जागु-जागु का जखि क्वी माल भिजाउ। डाक बि उबारि कुल खचरु मा हि जांदि छै।

नया गोसि का खचरु का गैल अब सुरमा बि मिलगि। अब वु हौर जादा माल ल्हैगि लुकारु सारण। हौरी जादा भाड्डु ल्हैगि वु अब कमौण। सुरमा त नौं कु हि सुरमा छौ अमिथ्या बोझ सकदु छौ। अर कबि वेन बदमासि या फिदन्वाति नि करि इकत्यारसि काम करि। कबि वेन और खचरौं कि चारौं गूण नि फरकाई। भागि नि पलाण लीक। कबि लात नि चलाई कै पर। अर चाहि छाटु नौन्याळ बि वे सणि कसि द्यौ वेन जरा हिलण सारिकु नि छौ। ब्याखन्यौं कु थौ बिसौंदि बगत गोसि सबसि पैलि सुरमा पर हलास करदु छौ सबसि पैलि वे सणि पुचकारू। चणौ कि थैलि बि सबसि पैलि वेका गिच्चा पर बांधु। अर सुरमा अपणा दगड्यों कि गैल कुड़बुट-कुड़बुट करिक बुकाउ चणा। भूख मिठि कि भोजन मिठु। अर वु सबि एक घड़ि पर चपट कर जाउन चणौं कि थैलि। गोसि गुड़ कु एक फड़कु अपना गिचा पर गेरु त एक सुरमा का गिचा पर। सबु सि जादा गुड़ मिल्दु छौ सुरमा सणि। पर पसु मा अर मनख्यों मंगि कतगा फरक होंदु। सुरमा सणि बडु फड़कु गुड़ कु मिलु त हौर खच्चर वे देखि जिद न खाउन अर न ठिपसाउन जना मनखि करदन। अर बात बि सै छ। कनु ज्ञान बिचारौं मा। जु जनु काम करलु उन्नि माफौ पौलु बि। यां मा जिद कैकि। य जिद अर हिर्स भगवानै मनख्यों का बांठा लगाई।

सुरमा बिचारु इनु भग्यान छौ कि वेन जु फिदना खच्चर छा गैल मा वूंकि पाण बि सुदार्यालि छै। सुरमा सबुसि ऐथर रैंदु छौ। जनु वु करदु छौ उन्नि हौर बि करुन। जख अगनै को गोरु बाट वख पिछनै को गोरु बि। अग्वाड़ि वाळु दुरस्त लैन पर चलु त पैथर वाळा बि वीं लैन पर चलदन। अग्वाड़ि वाळु तिरछु बांगु हिटलु त पैथर वाळा न बि हिटण हि छ उन्नि। सुरमा कि सिखा देखि सबु पर लैगि छै। सुरमा को गोसि भौत इज्जत करदु छौ अर वे देखिक खुस रैंदु छौ।

ई तरै सि सुरमा आदर अर मान करिक अपणा दिन छौ लाण लग्यूँ। निकसु काम करु इज्जत कि रोटि खाउ। पर दिन फिरद क्य बग्त लगदु। एक दिन सुरमा अर वेका दगड़ य कखि बिटिन माल ल्हीक छा औण लग्याँ। चौमासै बार। रात अतिमति कि बरखा ह्वे छै। सैडि दुन्या मति जलमै थलमै छै होई। द्यौ का

गिगड़ाटन अर बिजलि न लुकारा आँखा कंदोड़ फुटगि छा। गाड गदरा अतर बणगि छा। सैरौ जल हि जल छौ होयूँ। सुबेरा टैम बरखा त थमगि छै पर बाटु भौत छौ हिटणक। सुरमा का गोसिन बोलि कि झटपट बाट लगि जौंला त रोटि खाण्क कै टेका मा पौंछ जौंला अर ब्याखन्यौं कु घर। लादिन वेन खच्चर। गेरिन वूंका ऐंच कामळा अर टिक-टिक करिक चचकारिन खच्चर अँध्यारा मा। वु टेका का नजिकु बि पौंछिन अर झिट उंदै बिटिन बाटु जरा खबड़खण छौ। सुरमा कु खुट्टु एक चिफळा ढुंगा बिटिन रड़ि ठसम करकि अर कड़बट मुड़िगे। पीठि मा द्वी-तीन मण कु बोझ। नि सकि वेन बोझ का अस्तोलन खुट्टु समाळिक अर नि रलु कड़बचउ ह्वेक तैं किसमत खराब। भौत मुसकल करिक सकि सुरमा खड्ड उठिक तैं। धौ-धौ संदि कैक सुरमा खडु त उठगि पर तीन टाँगुन ल्हैगि लचाकुड़ि-लचाकुड़ि करक हिटण। जनै-कनै बिड्वाळ सड़कि मा आई अर तब दुकान्यों पर टेका ठिकाणा मा। गोसि न देखि सुरमा कि टाँग बिल्कुल टुटगि छै। सुरमा लठ्याळु डुण्डू ह्वेगि छौ।

गोसिन देखि कि सुरमा जु नौं कु सुरमा छौ, डूण्डू ह्वेगि। अब कै काम कु नि रै। एक हजार रुप्यों कि भड़ाक लगगि कपाळि पर। मारि वेन डुडि। “हे मेरा सुरमा कनु डूण्डू ह्वे तु! कनि फुटि मेरि कपाळि! कै मुख ल्हीक जाण मैंन डेरा। कनि रलि अब त्वे बिना किल्वाड़ि सुन्नि। कनु धोका दिनि मेरा सुरमा त्वेन मैं सणि।” गोसि अपणा मतलबौ छौ रोण लग्यूँ कि सुरमा कि पीड़ का वेन-हैका का दिल कि क्य जाण्न। पर सुरमा अब लचाकुड़ि-लखकुड़ि करिक छौ हिटण लग्यूँ तीन टांगुन। एक टांग भ्वाँ बिल्कुल नि छौ टेकि सकणू। गोसि घड़ेक र्वै-राई। फिर सुरमा पर कु माल औरू खच्चरु मा रखि बांटि चुटिक। फिर एक दुकानदार मू बोलि वेन कि मैं जरा ये माल ढोळ्योलु लुकारा यख तब औलु ये ल्हैण। तुम जरा ये खच्चर सणि देखदि रया। अर गोसि औरू खच्चरु लीक अग्वाड़ि हिटगि। सुरमा लठ्याळु इनु रै अपणा दगड्यों सणि देखण लग्यूँ पैथर बिटिन हिदरासेक तैं जनु लड़ै मा क्वी सिपै चोट लगिक भ्वाँ पड़गि हो अर खड्ड नि सकदु हो उठिक तैं, पर पैथर बिटिन अपणा गैल्यों सणि जांदो देखण लग्यूँ ऐथर। जनु मन मा हो बोलण लग्यूँ कि मेरा चोट नि होंदि लगीं त कनु जांदु मैं बि यूं कि चारौं।

सुरमा बिल्कुल डुण्डू ह्वेगि छौ। अब वु कै काम कु नि छौ। सुदि पाळिक क्य कन्न वेकु। आज कु दिन गे, भोळ कु दिन अर परछेक कु अर इन्नि-इन्नि करिक मैनौं गुजरगिन पर गुसैं नि आई पर नि आई। अब सुरमा लावारिस छुटगे। अब क्वी वेकु खोज खबर करदारु नी। जख सकु वख जाउ। उजाड़ जाउ चाइ कखि जाउ। आज वु डुण्डू नि होंदु त किलै नेथ डुलांदि अर किलै ढमणा फुटदा।

आज सबेर्यों कु ये बाटा फंडा कुछ खच्चर छा जाण लग्याँ। सुरमा न देखि कि जना इ खच्चर वेका दगड्या कर पछाणेण लग्याँ अर खचरु वाळु जनु वेकु गोसि हो। पर जु गोसि पैलि सुरमा मा पराण खोंदु छौ अर गिच्चा पर कुल गास देंदु छौ वे सणि आज सुरमा हेरण बि नीं लग्यूँ। सुरमा न देखि कि वेका गुसैंन वु जरा सेक बचल्याई बि नीं त वु लठ्याळु हिदरासेक पर लचाकुड़ि- लचाकुड़ि करिक उंडु ऐगि हैंकि तरपां।

4.5 सारांश

गढ़वाली भाषा की उत्कृष्ट कहानियों में से एक अत्यन्त मर्मस्पर्शी कथा है एक 'डूण्डा खच्चरै कथा'। कहानी की शुरूआत प्रकृति के उपमानों द्वारा मानव की तरह संवाद करने के साथ होती है। कहानी का प्रारम्भ काव्यात्मक है। शाम का वक्त है। सूर्य नदी से बात कर रहा है। धान के खेत लहलहा रहे हैं। बयार बह रही है। जैसे ही गोधूलि का समय नजदीक आता है। पंछी घोसलों की तरफ व गाय आदि मवेशी अपने घरों की ओर सरपट भागते दिखायी देते हैं। गाँव की घसियारिने घास काट कर लाती दिखाई देती हैं। तो कहीं कृषक व ग्रामीण महिलाएँ खेती का कार्य करती हुई दिखाई देती हैं अर्थात् सम्पूर्ण ग्राम्य जीवन का सजीव चित्रण है।

खेती के बीच रास्ते में लंगड़ाता हुआ एक लावारिस खच्चर (सुरमा) खेत से हरे धान की डालियों को खाने का प्रयास करता है। वह भूखा है। आखिरकार भूख कब किससे सही जाती है। वह खेत में घुसता है। भरपेट धान खाता है। किन्तु अन्ततः वहाँ खेत का स्वामी आ जाता है और उसे पत्थरों से खूब मारता है। वह बुरी तरह लहूलुहान हो जाता है। वह घायल अवस्था में खेत के एक कोने पर आता है-असहाय लावारिस। उसे याद आते हैं अपने पुराने दिन जब वह बच्चा था ठुमक-ठुमक कर नाचता था। युवा हुआ तो माँ के साथ सामान ढोने लगा। फिर मालिक ने किसी दूसरे को बेच दिया। वह दूसरा मालिक बड़ा निर्दयी था। सुरमा की सामर्थ्य से अधिक बोझ लाद देता था। एक बार सुरमा अत्यधिक बोझ के कारण विकट रास्ते में गिर गया और उसकी टांग टूट गई। तब उसके मालिक ने यह समझकर उसे लावारिस की तरह छोड़ दिया कि अब यह किसी काम का नहीं। सुरमा की बड़ी दुर्गति हुई। असहाय निरीह उसे घोर आश्चर्य और दुख हुआ जब उसने मार्ग में कुछ खच्चरों को जाते देखा। उसे लगा उनके साथ उसका मालिक है किन्तु उस निष्ठुर ने एक झलक भी सुरमा की तरफ नहीं देखा। वह समझ गया कि यह स्वामी कितना स्वार्थी है। अपने लाभ व स्वार्थ के लिए यह हमारे साथ कितना घोर अन्याय कर रहा है। शायद यही हमारी नियति है, वह यह सोचकर खेत के दूसरे छोर पर आ जाता है। कहानी तत्वों की दृष्टि से यह एक उत्कृष्ट कहानी है जिसकी कथा बहुत बेजोड़, रोचक कथोपकथन, सजीव पात्र चरित्र-चित्रण, देश काल वातावरण का सुंदर चित्रण है। कहानी उद्देश्यपूर्ण तथा मार्मिक है।

4.6 अभ्यास प्रश्न

1. खच्चर क्यों लाचार था?
2. खच्चर का नाम क्या था?
3. खच्चर के मालिक ने उसे क्यों छोड़ा?
4. पुराने मालिक ने सुरमा को क्यों बेचा?

4.7 शब्दार्थ

डोखरा- खेत, सुनैरि- सुनहरी, दुदाळ- दुधारू, अबेर- देर, चिलांग- चील, मंड्वारति- मंडाई, डूण्डा- लंगड़ा, भल्यार- भलाई, ल्वेखाळ- लहूलुहान, ऐसुर्जि- ऐश्वर्य, चिफळा- फिसलनयुक्त, गोसि- मालिक।

कहानीकार पर आधारित प्रश्नों के उत्तर- 1. 23 जून, 1930 , 2. थौळ, 3. जोनि पर छापु किलै, 4. 26 अक्टूबर, 2020

कहानी के आधार पर प्रश्नों के उत्तर- 1. टांग टूटने के कारण, 2. सुरमा, 3. टांग टूटी होने के कारण, 4. रुपयों के लालच में।

4.8 संदर्भ

1. जोनि पर छापु किलै- मोहनलाल नेगी
2. हुंगरा- मदन मोहन डुकलाण एवं गिरीश सुंदरियाल
3. गाड म्येटेकि गंगा- अबोधबंधु बहुगुणा

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. 'डूण्डा खच्चरै कथा' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखें।
2. मानव का पशुओं के प्रति किस तरह का व्यवहार होना चाहिए? विस्तृत रूप से लिखिए।

इकाई-5

निबंध- डॉ० गोविन्द चातक (Essas- Dr. Govind Chatak)

इकाई संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 डॉ० गोविन्द चातक का संक्षिप्त परिचय

5.4 अभ्यास प्रश्न

5.5 निबन्ध- 'क्या गौरी क्या सौंळी'

5.6 अभ्यास प्रश्न

5.7 सारांश

5.8 शब्दार्थ

5.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

5.10 निबंधात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

निबन्ध विधा गद्य साहित्य की गहन विचारणीय विधा है और अपेक्षाकृत कठिन भी और यदि वह 'जनानी' यानि नारी विषय पर हो तो फिर मामला और जटिल हो जाता है। निबन्ध में साफगोई से बात रखी जाती है। बिना किसी लाग-लपेट के किन्तु मन्तव्य उसका बहुत चिन्तनशील होता है। निबन्ध किसी भी भाषा व साहित्य की एक परिष्कृत, आधुनिक व समसामयिक विधा है जिसमें परिकल्पना का यथार्थ से जुड़ाव रहता है। प्रस्तुत निबन्ध इन सभी मानकों पर खरा उतरता है। डॉ० गोविन्द चातक ने निबन्ध के लिए एक ऐसा शाश्वत व विराट विषय चुना जिस पर लिखना किसी जोखिम से कम नहीं। उन्होंने बहुत बड़ी चुनौती स्वीकार की और ऐसा लगा कि एक जटिल विषय को अपनी लेखनी से सरल व सरस बना दिया है। प्रायः निबन्ध पढ़ने में अपेक्षाकृत उतनी रसानुभूति नहीं होती जितनी कि कविता में किंतु इस निबन्ध की बात ही कुछ और है। इसमें विचार व भाषा का स्वच्छन्द प्रवाह व लोकभाषा का चमत्कारिक व चुम्बकीय प्रभाव देखने को मिलता है, जो बहुत दुर्लभ है। इसमें चिन्तन है, दर्शन है, हास्य-व्यंग्य है किन्तु कोरी कल्पना नहीं है। नारी विषयक प्रत्येक पहलू का खूबसूरती के साथ रहस्योद्घाटन किया गया है। पारिवारिक सम्बन्धों की गहरी पड़ताल करता यह निबन्ध अपने आप में कई

चरित्र समेटे हुए है। इस निबन्ध की एक खास विशेषता यह है कि गढ़वाली भाषा की लोकोक्तियों, मुहावरों का बेशुमार व सटीक प्रयोग किया गया है और जैसा भाषाशास्त्री मानते हैं कि लोकोक्ति के पीछे कोई न कोई घटना या किस्सा अवश्य होता है जिसके कारण उसका प्रादुर्भाव होता है। इसलिए लोकोक्तियों का भावार्थ व मंतव्य बहुत गूढ़ होता है। इस लिहाज से कहा जा सकता है 'क्या गोरी क्या सौंळी' एक गूढ़ विषयक निबन्ध है जिसका निहितार्थ विशिष्ट व विराट है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः-

- भाषा की निबंधात्मक शैली से परिचित होंगे।
- स्त्री के गुणों को जानेंगे।
- गढ़वाली भाषा की विभिन्न लोकोक्तियों व मुहावरों से परिचित होंगे।
- साहित्य लेखन में लोकोक्ति व मुहावरों के प्रयोग जानेंगे।

5.3 डॉ० गोविन्द चातक का संक्षिप्त परिचय

डॉ० गोविन्द चातक का जन्म ग्राम सरकासैणी, पट्टी-लोस्तु (बडियारगढ़), जिला- टिहरी गढ़वाल में 13 दिसम्बर, 1933 को हुआ। इनके पिता का नाम श्री धाम सिंह कण्डारी और माता का नाम श्रीमती चन्द्रदेवी था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव में हुई। इण्टरमीडिएट की शिक्षा घनानन्द इण्टर कॉलेज, मसूरी से हुई। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक तथा आगरा विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर और डी. फिल. की उपाधि प्राप्त की। आपका शोध विषय 'रवांल्टी लोकगीत और उनमें अभिव्यक्त लोक संस्कृति' था।

आप अध्ययन काल से ही गढ़वाली लोक साहित्य की ओर अभिमुख रहे। सन् 1955 में 'गढ़वाली लोकगीत' और 'गढ़वाली लोकगाथाएँ' नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हुई। वर्ष 1959 में 'गढ़वाली भाषा' नामक पुस्तक छपी। इसके बाद 'जंगली फूल' एकांकी संग्रह, 'गीत वासन्ती', 'फूलपाती' कविता संग्रह, 'उत्तराखण्ड की लोककथाएँ', 'गढ़वाली लोकगीत एक सांस्कृतिक अध्ययन', 'मध्य पहाड़ी का भाषा शास्त्रीय अध्ययन', 'भारतीय लोक संस्कृति का संदर्भ- मध्य हिमालय', 'पर्यावरण और संस्कृति का संकट', 'लकड़ी और पेड़' कहानी संग्रह आदि इनके प्रकाशित ग्रंथ हैं।

लोक साहित्य से इतर डॉ० गोविन्द चातक ने नाट्य विधा पर महत्वपूर्ण लेखन कार्य किया। 1960 से 1964 तक आप आकाशवाणी दिल्ली में नाट्य निर्देशक एवं गढ़वाली लोकसंगीत के समन्वयक रहे। 1964 में आपने राजधानी दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी प्रवक्ता की नौकरी प्रारंभ की और रीडर के पद से सेवानिवृत्त हुए। 09 जून, 2007 को आपका देहान्त हो गया।

5.4 अभ्यास प्रश्न

1. डॉ० गोविन्द चातक जी का जन्म कब हुआ?
2. डॉ० गोविन्द चातक जी ने डी. फिल. की उपाधि किस विश्वविद्यालय से प्राप्त की?
3. डॉ० गोविन्द चातक जी की सन् 1955 में कौन-सी दो पुस्तकें प्रकाशित हुई?
4. डॉ० गोविन्द चातक जी किस विश्वविद्यालय में कार्यरत थे?

5.5 निबन्ध- 'क्या गोरी क्या सौंळी'

कुछ अजीब सी चीज छ जनानी दुन्या मा खैर, दुन्यै बात त पिछाड़ी करला। दुन्या मा चा वा कन्नी लगो पर घरै त वा शोभा बोलेन्दी। वीं बिना कूड़ी नि सजदी। बात या छ कि घर से बि बड़ि घरवाळी। घरवाळी नी त घर भूत को डेरो। चौतिरफू अंध्यारो हि अंध्यारो। जै घर मा जनानी छ वख उजाळै मुट्टौ क्य कन्न। कवि बिहारी न बि त यो हि बोले कि रात-दिन को पता नि चलदो वख, न औंस को औणो मालूम होन्द अर न पूर्णमासी को जाणो। यान हि गते जाणनक पातड़ो रखण पड़द हर जनानी वाळा सणि। पर हमारा कुछ भाई बिहारी की बात पर बि मोसो पोतदन। बोलदन, जनानी चा कथी गोरी हो पर छ काळी ही अंध्यारी रात की तरौं। होली! भगवान जाणो। इथा हम बि जाणदां कि कुछ जनानी गोरी होन्दीन जोन की तरौं अर कुछ तवा की तरौं मोस-पट! दुन्या गोरी जनान्यों तैं खूब माणदि, पर जख तलक भलि होण को सवाल छ, न सेती भली, न सौंळी!

उनो त चिफळी गिच्ची भुक्कि सबि पेन्दन। अर मनै बात बि होन्दी- मन लग्यो गधी से त परी को क्या काम? मनै रोटी छ, खुशी को सौदा। उनो त ज्वानी मा मेंडुकी बि सुन्दर देखेंदि पर उथा पाणी मा रैण पर मेंडकी गोरी नि बणि पौंदी। घुसे-घुसेक सोरा अर नहे-नहेक गोरा कख छा? रई प्यार की बात। उनों बि मीठा का लोभ जूठो खायेन्द हि छ। पर जादातर, लोगू तैं काम प्यारो होन्दो, चाम प्यारो नि होन्दो। गौड़ी जनी रमाळ हो, उनी दुधाळ बि हो त फिर चैंद क्या छ? खिचड़ी मा घ्यू होयूं हि चैंद। भला फूलै भलि वासिना बि हो, तबि ठीक लगदो। उनो क्वी सपेद हाथी खुंटा पर बांधीक देखदो रौ, त हमारो क्या बिगाड़दो! पर जनानी को अस्थान और बि बड़ो छ वा सिर्फ नुमैशै चीज ही नी। जनानी गिरस्ती की बणौंदारी छ। बोल्युं नी कि ब्वारी अर म्वारी! ब्वारी तैं म्वारी होयुं चैंद। हम यनु नि बोलदा कि वा गोरी हो या सौंळी।

फेर बि जनानी गोरी न होवन, यो कु बोलदो? जै दी देऊ जगदीस, वेकि क्या रीस। अपणि गोरी जनानी सब तैं भलि लगदि, पर अगर जु कै सणि भागन काळी मिल जौ त क्या वेन कपाळ फोड्न? रोई-रोई थोड़ी मिलदि बिराणी जोई। लेखीं मिलदि, देखीं नी मिलदि! यो बि ठीक नि छ कि अपणि देखी नांगी कांगी, अर हैका कि देखी लाई पैरीं अर तब लैग्या रोण-मन्न- हे मेरा बुबा कि अक्कल गे मैंक स्याई नी मांगी! अरे भाई, हैंका की खूब छ त होण द्या! तुम किलै बिराणा सोना पर मन दौड़ौणा! मन तैं मनैक रखा न! उनो त बाखरा का पीछ बाग अर घाघरा का पीछ लाग होंदी छ। पर तुम हि बता, अपणि

स्वैणी बिराणी भौंदी कु चांदो? जुता को गारो अर स्वैणी को जारो बरोबर। तब कु अपणि गोरी पर हैका कि नजर लगण देलो? यान हि त लोग अपणि सुन्दर जनानियों तैं औरू का सामणे नि औण देन्दन। डिट्ठी की जोई अर मुट्ठी को धन। मुट्ठी मा जु धन छ वी अपणो छ अर जनानी जब तैं आंखौं का सामणे छ तब तैं हि अपणि छ। यां को मतलब यो नी कि जनानी घास को तिरण छ कि जरा सी पाणी की लैर आई, अर बोल की ले, मैं त चल्दऊं। पर भाई, दुन्या च या- यख बचद-बचद बि ठसाक लग जाया करदे। ई जाळ-जंजाळ कि दुन्या मा पंडित बि भूल जांदा, कबि बवोत्या बि डूब जांदा। कैका दिल मा क्या छ यो कु जाणदो? कुजाणी कु डळो कै बग्त फिसळि जाओ! जनानी को रौ-भौ को देखिक आए? कृष्ण जाणो गीता, अर मा जाणो पिता! जानी न जाय निसाचर माया!

खैर, रैण बि देवा, जनानी का झगड़ा मा पड़ूनो ठीक नी। पर इथा बात जरूर छ कि जनानी का झगड़ा से क्वी बचीक कनै सकदो? जख घड़ो तख हिल्लो। जख द्वी जनानी मिली वख बोलण हि क्य? अर जु वो द्वी सौत सरीकी होई त मालिकै खैर न समझा। मजा छन बिचारा एक ब्यो वाळा का- एक ब्यो कि चकरबरती पर द्वी ब्यो कि कुकरगती! द्वी मुख्या स्यूंण न जाओ बल खन्त, अर द्वी स्वैण्या न पाओ पंथ। द्वी जनानी त काठै बि भलि नि होन्दी। जब द्वी भांडा कठा रखे जांदन त वो टकराई हि जांदन। तब द्वी जनानी कनै चुप रहोन। जनानी की गिच्ची जुग-जुग से प्रसिद्ध छ। दुन्या मा द्वी चीज बात बिगाड़दीन- चिच्ची खो कि गिच्ची खो! जख जनानी पर गिच्ची बि हो, वख बोलण ही क्या छ? खैड़ो सिरवाण अर जनानी परवाण कै सणि चैन से रैण नी देन्दी! जनानी की छ्वीं अर झंगोरा की बीं!

लुवा लुवा तैं काटद अर जनानी अफु मा हि लड़ी मरदिन। सौत तैं त खैर छ पर दुरभाग से अगर ऊंको नातो सासु-ब्वारी को होयो त भगवान हि मालिक छ। सासु का खिलाफ जथा चा उथा बोले_सकेंद, पर आज कि ब्वारी बि त कै से कम नि छन। होवन भी किलै ना? अपणा मालिकू कि मुख-लगाई होंदीन। बाछी बि त किल्ला का जोर हि बुरकदे? अपणा मालिक को प्यार कै गौरी तैं असमान पर नी पौंछाई देन्द? सबि सासु जाणदीन ई बात तैं यान हि त ब्वारी तैं देखिक सासु कि आँख्यों मा डौऊ पड़ जांदो। वा जाणदि छ कि ई ब्वारीन हि त मेरा नौना पर मोहनी डाळ्याले। वींन हि त वीं से वींको नौनो छीन्याले। भाई बि इन हि सोचद, बैण बि इने ही। बस बिचारी ब्वारी का खिलाफ एक मोर्चा घर मा बण जान्दो। माँ नौना का सामणे ब्वारी को मुलाजो करदे पर द्वी उल्टी-सुल्टी फेर भी सुणाई ही देन्दे। बोलदि बेटी तैं छ, पर सुणोंदि ब्वारी तैं। ब्वारी जाणदि छ कि यि फूल मैं पर बरसायेणा छन, पर वा सासुक तैं क्या बोल? कु मनखि बल बोलीन मार, कु बळ्द सींगुन मार। सासु की ई मार से न वा अफु ही अफु तैं बचाई सकदि, न क्वी हौर ही वीं सणी बचाई सकद? मालिक आखिर कबारि तैंकि तरफदारी करो? अगर करलो बि दस-बीस बुड्यों का मुख की सुण्न पड़लि- स्यो अपणी ब्वारी कि तरफ लगद। माँ न किलै पैदा करि होलु? जु जनानी की बोलीं सुण्द वो वीं को ही जण्यूं! अब बोला, अपणि जनानी तैं ब्वे बोलणो साहस कु करलो! तब कु जनानी बोललि अपणा मालिक तैं कि तु मेरि तरफ बोल। इलै ब्वारी चुपचाप सब कुछ सह लेन्दिन। लोगून क्या जाण्न ई चुप्पी मा कति शिकैत, कति

दुख-दर्द छिप्यां पड्यां छन। मैता लोग कबि वीं पूछदन- 'बेटी, तेरि सासु कनी छ?' वा बोलदे- 'मैं हि भलि छौं! सासु बुरि छ वा बोली हि कनै सकदे!

अर जब यो सम्बंध दिउराणी जिठाणी को होन्द त माभारत देखणौ मिल्द अपणा हि घर-भितर। चा दिउराण हो चा जिठाण- कु कै से कम छ? तु डंडा त मैं तिरसूळ। चुल्ला का पिछाड़ि एकीन हैका का मालिकै चुगली करी, इथैं-उथैं कि छ्वीं लगाई। बस फिर देखा, भायों-भायों मा लड़ाई, रोज नया-नया उत्पात। भाई अपणि जनान्यों का हातै गेंद बणि जांदन।

यूं सबु से बि ऐंच स्त्री माँ बि होंदि। ई बात सणि कु भूली सकदो? सच बात य छ कि हर आदमी अपणि माँ से हैंकी तरों कू नी, अर हर माँ अपणि संतान मा वास करदि। जना मैड़ा तना जैड़ा होंदा हि छन। बांस का बाड़ा बांस अर चाई का बाड़ा चाई। थोड़ा फरक हो त हो, चंदलेणा को बेंदलेणो, बेंदलेण्या को टुबख्या-टाबख्या त होंद हि छ। ये हि कारण माँ सणि अपणि संतान प्यारी होंदि। माँ को बरोबर दुन्या मा हौर क्या छ? -माँ का बरोबर माँ ही छ। सिर्फ एक ही चीज वीं से बि जादा छ- मरजाद? माँ मारीक बि लोक मरजादै रक्षा करदन। माँ जौ पर मरजाद न जौ!

अंत मा, इथा बि बोलदेऊं कि यूं बातु का भैकोण मा कींक छन तुम औणा? असल मा न कमजोरी को नौ जनानी छ, न वा झगड़ै जड़ हि छ। जु लोक वीं तनो समझदा होवन, बेशक समझदा रौंन पर हमारि समझ मा त जनानी एक शक्ति छ- आद्या शक्ति! शक्ति तैं आप जनु बि चाहोन, काम मा लाइ सकदन। भलै का वास्ता बि, बुरै का वास्ता बि पर रली फेर बि वा शक्ति ही। गुड़ अंध्यारा मा बि मिट्ठो, उजाळा मा बि मिट्ठो! तब क्या गोरी अर क्या सौंळी!

5.6 सारांश

लेखक नारी को आद्या शक्ति का रूप मानकर उसकी परमसत्ता को स्वीकार करता है। यद्यपि लेखक पहले पहल नारी को एक अजीब चीज मानते हैं यह कटाक्षपूर्ण भाव भी हो सकता है। संस्कृत की एक उक्ति है- गृहं तु गृहणी हीनं अरण्यसदृशं मतम्। अर्थात् बिना गृहिणी के घर किसी बियावान जंगल के समान है। यही भाव साम्य यहाँ भी देखा जाता है। स्त्री को वे उजाले की संज्ञा देते हैं जो सर्वत्र रोशनी बिखेरती है। तब चाहे अमावस्या आये अथवा पूर्णमासी जाये, नारी है तो चिन्ता की बात ही नहीं। समाज के उस छद्म चरित्र को व्यक्त करती है ये पंक्तियाँ कि जनानी चाहे गोरी हो अथवा काली, हैं वे अंधेरी रात की तरह। ये दुनिया व दुनिया वाले जानें हम तो इतना जानते हैं कि कुछ जनानी गोरी होती हैं चन्द्रमा की तरह तो कुछ काली होती हैं तवे की तरह, पर दुनिया गोरी जनानियों को ही अच्छा मानती है किन्तु जहाँ तक अच्छा होने का सवाल है तो न गोरी भली न सांवली। वैसे तो चाटुकार सबको सम्मोहित कर लेते हैं किन्तु मन की बात अलग होती है। कहते हैं मन लगा गधी से तो परी क्या चीज! वैसे भी रूप प्रिय नहीं होता है गुणों की महत्ता व पूजा होती है। जिस प्रकार गाय अगर रम्भाती हो और खूब दूध भी देती हो तो फिर क्या चाहिए। किन्तु वैसे भी यदि फूल सुन्दर है और उसमें खुशबू नहीं भी

तो क्या हुआ। सुन्दर तो है ही। स्त्री कोई नुमाइश की वस्तु नहीं। वही घर गृहस्थी निर्मात्री है, पोषक है। बहु तो मधुमक्खी की भांति मेहनतकश है। भले वह गोरी हो अथवा सांवली। किसे कौन सा रंग मिलता है यह सब नियति है। ईश्वरीय देन है। समय से पहले और भाग्य से अधिक कब किसको कुछ मिलता है। आखिर पराया सोना देखकर ललचाकर क्या लाभ? मुट्ठी में जो धन है वही अपना है। वैसे ही स्त्री आँखों के सामने है तो इससे बड़ा कोई धन नहीं है। पर इसका मतलब यह कतई नहीं कि स्त्री कोई घास का तृण है कि उड़ जाए कि बह जाए, किन्तु ये दुनिया है इसके कई रूप हैं। दुनिया के इस माया जाल में पण्डित भी भटक जाएं, तैराक भी डूब जाए। किसके दिल में क्या है? कौन कब कहाँ फिसल जाए किसी का क्या भरोसा। यह निबन्ध हमारे समाज में पुराने समय जो कुरीतियाँ, कुप्रथाएँ व विशेषकर स्त्री को लेकर जो नकारात्मक सोच थी उनका आईना दिखाता है। उन पर कटाक्ष है जो स्त्री को झगड़े की जड़ मानते थे। पारिवारिक कलह की वजह मानते हैं। पारिवार वाले सास, देवर ननद आदि सभी बहु के खिलाफ जैसे मोर्चाबन्दी कर लेते हैं कि इसने परिवार का माहौल बिगाड़ दिया है। समाज भी पति को पत्नी का गुलाम कहे, दोनों को ताने मारे, यह तो उस नारी का सयंम है जो सब कुछ सुनकर भी धैर्य रखती है। किन्तु यह समाज क्या जाने कि उसकी इस चुप्पी में कितना दुख दर्द छिपा हुआ है। आखिर वह बोले भी तो किससे! पीहर दूर है। ससुराल में कोई सुनने वाला नहीं। दुनिया चाहे कुछ भी कहे किन्तु स्त्री ही सृष्टि है। वह सभी की सृजक भी है। वह धरती है, प्रकृति है, माँ, बेटी, बहन-पत्नी अनेकों रूपों में प्रेम की प्रतिमूर्ति है। माँ की परमसत्ता तो ईश्वर भी स्वीकारते हैं। माँ के बराबर कौन है। माँ ही है। माँ से मर्यादा है, माँ मरकर भी मर्यादा की रक्षा करती है।

सार रूप में इतना कहा जाता है कि कौन क्या कहता है यह महत्वपूर्ण नहीं, कैसा कहता है यह महत्वपूर्ण है। वास्तव में जनानी न कमजोरी का नाम है न झगड़े की जड़। जो लोग ऐसा समझते हैं हमें उनकी समझ पर तरस आता है। किन्तु हम (लेखक) तो इतना जानते हैं कि जनानी एक शक्ति है। आद्या शक्ति। शक्ति को आप जैसे भी चाहो प्रयोग कर सकते हैं। भले हेतु अथवा बुरे हेतु किन्तु रहेगी वह शक्ति ही। अब आप गुड़ चाहे अंधेरे में खाओ अथवा उजाले में, होगा तो वह मीठा ही, उसी प्रकार क्या गोरी क्या सांवली शक्ति तो शक्ति है, उसकी शक्ति, सामर्थ्य व संयम की कौन प्रशंसा न करे अर्थात् सभी करते हैं।

अतः लेखक द्वारा जनानी के प्रति पूर्वाग्रह, गलत धारणा को सिरे से खारिज किया गया है। नकारात्मक पक्षों का उल्लेख करने वाले समाज के उस तबके पर तीक्ष्ण कटाक्ष किया गया है जो ऐसी धारणा पाले हुए हैं। ऐसे समाज की आँखें खोलने का सफल प्रयास किया गया है।

5.7 अभ्यास प्रश्न

1. निबन्धकार ने घर की शोभा किसे कहा है?
2. ब्वारी तैं..... हुयूं चैंद।

3. निबन्धकार ने स्त्री का दुश्मन किसे माना है?
4. निबन्धकार के अनुसार माँ के लिए सबसे प्यारा कौन होता है?

5.8 शब्दार्थ

जोन- चन्द्रमा, मोस-पट- एकदम काली, सौंळी- सांवली, घुसे-घुसेकि सोरा अर नहे-नहेक गोरा कख छा- लिपट-लिपट कर सम्बन्धी व नहा-नहाकर गोरे नहीं होते, गौड़ी जनी रमाळ हो, उनी दुधाळ बि हो- गाय जैसे रम्भाती है वैसे दूध भी दे तो बात बने, म्वारी- मधुमक्खी, जना मैड़ा तना जैड़ा- जैसी माँ वैसे बच्चे, भैकोण- बहकावे में, जनानी- स्त्री, नारी।

निबंधकार पर आधारित प्रश्नों के उत्तर- 1. 13 दिसम्बर, 1933, 2. आगरा विश्वविद्यालय, 3. 'गढ़वाली लोकगीत' व 'गढ़वाली लोकगाथाएँ', 4. दिल्ली विश्वविद्यालय।

निबंध पर आधारित प्रश्नों के उत्तर- 1. स्त्री, 2. म्वारी, 3. स्त्री को, 4. उसकी संतान।

5.9 संदर्भ

1. गाड म्यटेकि गंगा- अबोधबंधु बहुगुणा
2. गढ़वाली गद्य परम्परा- अनिल डबराल
3. गढ़वाल की दिवंगत विभूतियाँ- डॉ० नन्दकिशोर ढौंडियाल

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. इस निबन्ध का सार अपने शब्दों में लिखें।
2. निबन्ध में आयी लोकोक्तियों व मुहावरों की सूची बनाकर उनका वाक्यों में प्रयोग करें।

इकाई-6

उपन्यास- 'पारबती' डॉ० महावीर प्रसाद गैरोला

इकाई संरचना

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 लेखक का संक्षिप्त जीवन परिचय
6.4 अभ्यास प्रश्न
6.5 उपन्यास
6.6 अभ्यास प्रश्न
6.7 सारांश
6.8 शब्दार्थ
6.9 संदर्भ ग्रन्थ
6.10 निबंधात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

डॉ० महावीर प्रसाद गैरोला द्वारा रचित 'पारबती' उपन्यास गढ़वाली भाषा का पहला प्रकाशित उपन्यास है। यह उपन्यास स्त्री विमर्श को दृष्टिगत रखते हुए रचा गया है। गढ़वाली साहित्य की महादेवी वर्मा प्रसिद्ध कवयित्री बीना बेंजवाल की कविता की पंक्तियां हैं- 'जिन्दगी एक घट छ अर जनानि वे सणि चलाण वाळि पाणी कूल' अर्थात् जिन्दगी एक घट है और स्त्री उसे चलाने वाली पाणी की गूल। अर्थात स्त्री ही पहाड़ की जनजीवन की धुरी है। बिना उसके पहाड़ नहीं धड़क सकता। यह भी कहा जाता है कि पहाड़ की नारी पहाड़ को पीठ पर उठाये चलती है। कुल मिलाकर पहाड़ में नारी के त्याग, समर्पण व मेहनत के कारण ही हरियाली है, खुशहाली है। पर्व हैं। उत्सव हैं। हँसी है, खुशी है। सभ्यता है संस्कृति है। बिना नारी के पहाड़ निर्जन बियावान जंगल है। पहाड़ी नारी का ऐसा ही संघर्ष, दुख दर्द इस उपन्यास में महसूसा जा सकता है। कहते हैं साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में जो भी अच्छा बुरा घटित होता है वह साहित्य में झलकता है। क्योंकि पहाड़ में स्त्री संघर्ष की अनेक गाथाएँ हैं। इसीलिए समय-समय पर अनेक साहित्यकारों ने इसे अपने साहित्य का विषय बनाया। 'पारबती' उपन्यास के इस प्रथम अंश में एक जीवट पहाड़ी स्त्री की जिजीविषा की अत्यन्त मार्मिक कथा है। उपन्यास के प्रवेशांक में ही सामाजिक सरोकारों का गहरा अन्वेषण है। एक गर्भवती स्त्री की असहनीय प्रसव पीड़ा, स्त्री जाति के प्रति समाज की संकीर्ण सोच व पहाड़ों में सरकारी उपेक्षाओं का ताना-बाना लेखक ने बड़ी संजीदगी और कुशलता के साथ बुना है। सतुरी नामक स्त्री प्रसव वेदना से कराह रही है किन्तु

सास, ससुर, पति सभी उसके प्राणों की चिन्ता किये बगैर पुत्र की चाह मन में रखते हैं। यह हमारे समाज के दकियानूस चेहरे को उजागर करता है। कुल मिलाकर यह उपन्यास अंश नारी विमर्श की एक श्रेष्ठ और संवेदनशील कथा है।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपः-

- साहित्य की उपन्यास विधा से परिचित होंगे।
- उपन्यास लेखन की बारीकियाँ जानेंगे।
- समाज में कन्या होने पर समाज की प्रतिक्रियाओं को समझेंगे।
- समाज में लिंगभेद व स्त्रियों की दशा को समझेंगे।

6.3 लेखक का संक्षिप्त परिचय

- डॉ० महावीर प्रसाद गैरोला का जन्म 21 अप्रैल, 1922 में पुरानी टिहरी शहर के सतेश्वर मुहल्ला में हुआ था।
- लाहौर विश्वविद्यालय से बी०ए० करने के पश्चात् आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम० ए० व एल० एल० बी० किया।
- रोहेलखण्ड विश्वविद्यालय से आपने पी० एच० डी० की उपाधि हासिल की।
- आपने 82 साल की उम्र में रोहेलखण्ड विश्वविद्यालय से डी०लिट० किया।
- आप टिहरी शहर में वकालत करते थे और टिहरी नगर पालिका के पहले अध्यक्ष भी चुने गए। आपने गढ़वाली, हिन्दी व अंग्रेजी तीनों भाषाओं में साहित्य लेखन किया।
- गढ़वाली में प्रकाशित कृतिः-
- 1. पारबती (गढ़वाली का प्रथम प्रकाशित उपन्यास-1981)
- 2. अकलबर को? (उपन्यास)
- 3. ओडु हटै द्या (उपन्यास)
- 4. कपाळि कि छमोट (काव्य संग्रह)
- 5. रैमौड़ि (लघु कथा संग्रह)
- 6. सब्बि जगा एकी छ्वीं, दूध बितड़ि गाई (नाटक) आपकी मृत्यु सन् 2012 में हुई।

6.4 अभ्यास प्रश्न

1. डॉ० महावीर प्रसाद गैरोला जी का जन्म कब हुआ?

2. डॉ० महावीर प्रसाद गैरोला जी ने डी. लिट. की उपाधि किस विश्वविद्यालय से प्राप्त की?

3. डॉ० गैरोला के काव्य संग्रह का नाम बताइए।

4. डॉ० महावीर प्रसाद गैरोला का 'पारबती' उपन्यास कब प्रकाशित हुआ?

6.5 उपन्यास अंश- 'पारबती'

तबारेक जौमाळा न द्वार यखारचा करीक बोलि "हे मेरा काथगू, चल क्वी बात नी। ताता पाणि कु तौलू दी जा, तचगी होलू!"

यनु सुणीक काथगू थोड़ा होश मा आए अर लणमणि धौंण न रस्वाड़ा से ताता पाणि कु तौलू उठैक वे सणि ओबरा का सामणि रखगी। तौला उठैक जब वेकि ब्वे भितर जाण लगी त वींन वे तैं तवळा पर जगदा अंगारा ल्होंणक बोलि। फिर तौला लीक भितर चलिगि। दाई न नाळ काट्यालि छै अर नौनि सणि नह्वौण लगगि छै। जब काथगू तवळा पर अंगारा लीक ओबरा का मोर पर पौंछि, वेकि ब्वे न तौलू चिमीक हैंको तौलू पाणी को तचौंणक रख दिनी।

बेटुला सणि नह्वैक अर तपैक दाई न स्वीलि सणि बि नह्वौण सुरु कर्ये। वींन स्वीलि को गात ताता पाणी न सेके, फिर हाथुन मिठा तेलै मालिस भभोड़ीक करी। यनु करीक दाई न अपणि अंगुळि पर गुड़ रगड़ीक बेटुला सणि चटाए। जब वा अंगुळि चुसण लगगि, तब वींन वीं सणि स्वीलि का दूदि पर लगाए। वा फिर दूदि पर चसोड़ा-चसोड़ी लगीं रै कुछ देर तलक, मने प्वटगा भरेण तलक।

कु हर बच्चा सणि जल्मदै रोणू, सांस लेणू अर दूद पेण सिखौंद, यु हर क्वी बि जाण्द। मनोविज्ञानी बोल्दन बल कि प्राणि मा यनि इंसेटिंवट रैंदि छ। तबि त जीव बिना सिखायां रोण, खाण, पेण, सेण सीख लेंद। वनु परकृति जड़ गिण्यां जांदि। फिर सवाल उठदू कि परकृति अर जड़-चेतन सणि कु चलौंदु? यां पर लोगों का अलग-अलग मत छन। मेरु यु मानणु कि एक छिपीं शक्ति जड़-चेतन सणि हि नीं, सैरा बरमाण्ड सणि चलोंदि रै पैलि बिटिन। वे तैं ईश्वर, परमात्मा, गौड, अल्हा कुछ बि बोलल्या। हमारा बोलण से कुछ फरक नि पड़ूद वे पर जनु हाथी चलदु रैंदु अर काग ककड़ांदु रैंदु।

जौमाळा अर दाई, द्वी पिछनै द्वार भिंचीक भैर हाट्टि मा ऐगेन। तब तलक काथगू बि पाणि को तौलु लेक पौंछिगे। फिर वेका जाण पर जौमाळा हाट्टि मू हि कोखड़ा नहेंणि अर नहेक डिंड्याळा का छाजा मा जैक बैठगि, बाळ सुखौणक। वींन फिर काथगू मा अफु पर गौड़ा का गौंत का छिट्टा मरवेन अर कुळा द्वियेक गौंत बि पी दीनि। गौंत पीक हि वा सुच्ची ह्वे सकि छै। सुतीक अर पातीक होण पर कुछ दिनों तलक सब्यूंक पूजा-पातड़ी बंद ह्वे जांदि। दाई न बि मुख हाथ धोयेन।

तब जौमाळा न रस्वाड़ा मा जैक स्वीली तैं ओगरा पकाए अर थोड़ा घ्यू मा चूंदू लड़बड़ परसाद बि खैंदि। टिहरी अर कै-कै गौं मा बि यु रिवाज छ कि पड़ोस का लोग ग्यारा दिन तलक स्वीलिक दूध अर खोप्पा का टुकड़ा रोज पौंछौंदन, यांक कि वु जल्दि ठिक ह्वे जाउ। कनु स्वाणु रिवाज छ यु।

रात खुलण पर काथगू न अपणा बाबा का बोलण पर काकर बिटि एक भेल्लि निकाळिक फोड़ द्ये। एक-एक टुकड़ि वेन अपणा बाबा, ब्वे अर दाई सणि गुड़ दीनि अर एक टुकड़ि अपणा गिच्चा पर बि डाळि। फिर गुड़ बांटणक थाळि पर गुड़ कि टुकड़ि रखिक गौं उंदु चलगि। खोळा फुंड वेन वु गुड़ बांटि त छ पर मन मारिक।

स्वीलकुड़ा होण का पांचवां दिन तलक एक दाई वूंका यख रै। छट्टा दिन वीं कि बिदाक्कि ह्वे। फिर वा लद्दु-गद्दु लीक अपणा डेरा चलगि। वीं सणि चार ठोपरा नाज, एक धोती अर चांदी कु एक कलदार मिलि छौ। वूं पांच दिनों मा वा स्वीलि पर तेल बि लगांदि छै अर बेटुला सणि बि नहोंदि-तपोंदि छै मन लगैक। जब तलक दाई वख रै, सतुरी ओबरा से भैर नि निकळि, न्यात-क्वात मा रै। झाड़ा फिरणौ दाई न एक खाड ओबरा मा हि खण्यालि छै। स्वीलि तैं पांच दिनौं तलक छल-छपेटा कि डर रैंदि। बथौं से बि वीं सणि बचौण पड़द। ओबरा मा खुंडखा-मुंडखा बि जगौण पड़दन। धुवांरोळि लगाई रैंदी वूं दिनौं। डाक्टर यांका खिलाफ रैंदन। पर वूंकि बात क्वी नि माणदु। अपणु-अपणु रिवाज छ।

सतुरी पंचोला दिन नौनि लीक दाई दगड़ि भैर आई छै। वींका हाथ पर दाथुड़ि छै अर ढकीं बेटुला समेत छै। दाथुड़ि रखण से छल-छपेटा को डर नि रैंदु। दाथुड़ि न त चक्कु से बि काम चलि जांदु। वींन भैर ऐक सुर्ज भगवान तैं हाथ जोड़ीन अर बेटुला सणि बि घाम दिखाई। बगल-पड़ोस का छोट्टा नौना बिंडु का सौंळा तोड़ीक ल्हेन। वूं तैं गुड़-तिल अर चौंळ बांट्ये गेन। पिछनै वूं नौंनो सणि बिंडु का सौंळौंन वख बिटि भगाये गे। ई छ्वीं टिहरी का अर येका धोरा का गौं कि छन। टिहरी मा बिंडु नि मिलदु, यां से सौंळौं न काम चलै लेंदान।

छट्टा दिन बिटिन सतुरी भैर-भितर औण-जाण लगी छै। बेटुला सणि बि वा सुबेर-शाम तपौंण अर चौथा-पांचा दिन नह्वौण लगी छै। ग्यरां दिन तलक वा ओबरा सुबेर तलक रै। रात मा काथगू भैर हाट्टि मा ऐक स्ये जांद छौ। ग्यारां दिन बेटुला कु जलम दिन गौं का बामणन पूजे। वेन वीं का पांच नौं रखिन। वूं मा एक नौं पारबती बि रखे गे छौ। सतुरी न पूजा होंदी बग्त एक चुलु गौंत बि पीनि छौ। नौनि-नौन्याळु सणि तपैक पिछनै वूंकि फांड नि बढ़दि। तपौण दगड़ि उगाळ लगाणै बि परथा छ। छोटा नौन्याळों का पेट पर ताळा बि लगौण को रिवाज छ हि। वींन अर जौमाळा न बेटुला पर ताळा लगै छा। उगाळन बड़ा ह्वे गाति पर बाळ नि जमदा, यनु बताए जांद। तबि त यखा लोगों कि फांड अर गाति पर बाळ नि रैंदा।

सतुरी कि सुजना वींको पैलो स्वीलकुड़ो होण से एक मैना मा ह्वे। तबै वा पाणि पर बि लगि छै अर रस्वाड़ा मा बि जै सकि छै। नौनि सणि सुबेर-ब्यखुनि वा हि तपौंदि छै अर नह्वोंदि पांचवां दिन छै। नजीकै सार्यों मा बि वा काम कन्नौ जांदि छै। हर बीच-बीच मा नौनि तैं दूद पिलौणक घौर आंद रैंदि छै। जौमाळा अर बुढ्या द्वी घौर मा रैंदा छा। बीच-बीच मा जौमाळा नौनि सणि देखदि रैंदि छै।

तिसरा साल सतुरी को हैको स्वीलकुड़ो ह्वे। अबारि का बग्त नौन्याळ ह्वेगि छौ। काथगू न अपणा बाबा सणि मनैक अबारि कि बग्त एक न चार भेल्लि फोड़िन। गुड़ बांटणौ गौं उंद नाचि-नाचिक गे। फाळि मान्नु रै। पारबती का बग्त यनु पुळ्याट नि दिखेणि छौ। यनु फरक रैंद नौना अर नौनि का होण मा यख। बेटुलु होंदु पराया घर को अर बेटा होंद करदोड्या धन, घौरौ द्यू। काथगू खुसि का मारा इथैं-उथैं नाचणू रै दिनभर। तबारि वेन इनु समझ्यै जनु कखि खड्यायूं धन मिलिगे हो।

पारबती अपणा भुला देखिक भौत उलारेणी रै दिनभर। भुला-भुला बोलणी रै वेमा जैक। गौं का नौनि-नौन्याळ वींका भुला देखणौ ऐन, ओंदा रैन दिनों तलक। खूब बोलेंदा रैन चौक मा। भौत लोग बि ओंदा रैन। बूढ़-बुढ्या बि उलारेणा रैन दिल खोलिक। काथगून मरीक मांड पायि छौ। ग्यारां दिन पंडितजीन नौना को जलमदिन चौकला पर पूजे। नौं रखि ग्वांगु प्यार को। हौर चार नौं पंडितजीन रखि छा। खूब चखळ-पखळ रै, पकोड़ा बांटै गेन ओंदारा-जांदारों सणि अर सेठा गौं मा बि। नौन्याळ अर नौनि मा कतगा फरक रखदन छा, यखा लोग।

6.6 अभ्यास प्रश्न

1. दाई का नाम क्या है?
2. दाई को बुलाने कौन जाता है?
3. लड़की का नाम क्या रखा गया?
4. काथगू को कब खुशी हुई?

6.7 सारांश

स्त्री विमर्श की बेबाकी से व्याख्या व पुरजोर वकालत करने वाले डॉ० महावीर प्रसाद गैरोला का एक संवेदनशील उपन्यास है पारबती। इस उपन्यास को गढ़वाली का प्रकाशित प्रथम उपन्यास का भी श्रेय प्राप्त है। पार्वती उपन्यास के प्रथमांश में सतुरी नामक एक पहाड़ी औरत की प्रसव-वेदना की अत्यन्त मार्मिक कहानी है। वह प्रसव-पीड़ा से कराह रही है। कराहने की आवाज सुनकर उसका पति काथगू उसका हाल जानता है। वह अपने बूढ़े माँ-बाप को भी उठाता है। उसकी माँ जौमाला उनके पास आती है तथा उसे उबरे (घर की नीचे वाले माले) में चलने को कहती है कि वह उबरा मैंने तेरे प्रसव हेतु ही लीप-घीस कर साफ-सुथरा बना रखा है। जौमाला ही सतुरी को सहारा देकर उबरे में ले जाती है। काथगू वहाँ उजाला व बिस्तर आदि का प्रबन्ध करता है। जौमाला काथगू को अपने गाँव की प्रसिद्ध दाई कुन्ती को बुलाने भेजता है। वह प्रसव क्रिया की विशेषज्ञ है। अब तक 50-60 प्रसव करवा चुकी है। वह एक अनुसूचित जाति की विधवा स्त्री है। जो जीवन यापन के लिए दाई का काम करती है। जब वह सतुरी की दशा देखती है तो परख लेती है कि प्रसव में कुछ जटिलता है। वह दक्ष दाई है व अपने अनुभवी

नुस्खों से उसकी प्रसव पीड़ा को कम करने का प्रयास करती है। साथ ही घबराती सास को भी ढाढ़स बंधाती है। सास भी देवताओं का स्मरण करती है कि मेरी बहु की जान छूट जाए तो तुम्हारे नाम सवा सेर का रोट चढ़ाऊंगी। उधर काथगू के पिता अपनी डंड्याली में सारी गतिविधियाँ देख व सुनते रहते हैं। वह भी बेचैन हैं। मैसा याने काथगू का पिता पूछता है कि प्रसव कब तक सम्भव है। दाई सम्भवतः एक घंटा बताती है। फिर वे सभी और बेचैन हो जाते हैं। सतुरी तो पीड़ा से परेशान है ही किन्तु कुन्ती दाई पर उसे व उन सबको पूरा भरोसा है। मैसा तम्बाकू पी रहा है। काथगू रसोई में जाकर चूल्हे के पास बैठकर आग सेक रहा है। साथ ही तौले पर पानी गर्म कर रहा है। कुछ क्षण बाद उबरे से रोने की आवाज आती है सुनकर काथगू दौड़ते हुए डंड्याली में आता है। सतुरी पीड़ा से बिलबिला रही थी। हाय तौबा कर रही थी। तभी 'वां-वां' की आवाज सुनायी दी। आवाज सुनते ही काथगू डंड्याले से कूद कर उबरे के देहली पर पहुँच गया और अपनी माँ से पूछने लगा कि माँ क्या हुई, लड़का या लड़की। माँ मरे स्वर में कहती है लड़की! यह सुनकर उसकी गर्दन भी मुर्दे की तरह लटक जाती है। उधर उसके पिता के भी कान खड़े किये हुए थे। लड़की जन्म सुनकर वो भी निराश हो गये पर स्वयं काथगू को ढाढ़स देने लगे कि कोई बात नहीं बहू का यह प्रथम प्रसव है। दूसरे में लड़का हो जायेगा। किन्तु काथगू फिर भी निराश था। उसे ऐसा लग रहा था मानो पकड़ी हुई मच्छी गदेरे में गिर गई हो कि पकड़ा कबूतर उड़ गया हो। दाई अपने कार्य को पूरी निष्ठा से निवृत्त कर रही थी। प्रसूता व नवजात को नहला-धुला कर सारी क्रियाएँ पूर्ण करके वह व जौमाला बाहर आ गई। सब कुछ सकुशल निपटने के बाद अगले दिवस काथगू गाँव में गुड़ बांटने तो गया किन्तु मुरझाये मन से। पांच दिन तक कुन्ती दाई जच्चा-बच्चा की सेवा सुसुश्रा में रही। छठवें दिन उन्होंने उसकी बिदाई की जिसमें उसे चार टोकरी भर अनाज, एक धोती व एक चांदी का कलदार मिला। ग्यारहवें दिन बालिका का नामकरण हुआ। पंडित जी ने उसका नाम पारबती रखा। समय गुजरता है। सतुरी बड़े लाड़ प्यार से पारबती को पालती है। घर-गृहस्थी से लेकर कृषि कार्य करती है। किन्तु पारबती का भी पूरा खयाल रखती है। ठीक तीन साल बाद उसका दूसरा प्रसव होता है अबकी बार लड़का होता है। इस बार एक भेली की जगह चार भेली फोड़ी जाती हैं। सभी बेहद खुश हैं। एक बार तो घर पर ढोल दमाऊ भी बज उठे। बालक का नामकरण भी बड़ी धूमधाम से हुआ। लड़की के जन्म पर मातम और लड़के के जन्म पर खुशी। यह कैसी सोच कैसा न्याय। यह सोच समाज में विघटनकारी है। पारिवारिक सम्बन्धों व मानवीयता को कंलकित करने वाली है। फिर भी समाज में कम सही पर ऐसी सोच वाले लोग हैं जो लड़के व लड़की में फर्क करते हैं। किन्तु जब वही लड़की योग्य बनकर सफलता अर्जित करती है तो ऐसे लोगों के सिर शर्म से स्वयं झुक जाते हैं। कथावस्तु, पात्र चरित्र चित्रण, देशकाल व वातावरण आदि सभी तत्व इसे सफल उपन्यास सिद्ध करते हैं।

6.8 शब्दार्थ

स्विलकुड़ा- प्रसव कक्ष, दोबस्था- गर्भावस्था, रस्वाड़ा- रसोईघर, बेटुलु- बिटिया, ताता पाणी- गर्मपानी, गौंत- गोमूत्र

उपन्यासकार पर आधारित प्रश्नों के उत्तर- 1. 21 अप्रैल, 1922, 2. रोहेलखण्ड विश्वविद्यालय 3. कपाळि कि छमोट 4. 1981

उपन्यास अंश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर- 1. कुन्ती, 2. काथगू, 3. पार्वती, 4. लड़का होने पर

6.8 संदर्भ ग्रन्थ

पारबती उपन्यास- डॉ० महावीर प्रसाद गैरोला

6.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. 'पारबती' उपन्यास के दिए गए खण्ड का सार अपने शब्दों में लिखिए।
2. क्या वर्तमान समय में भी बालक व बालिका में भेद किया जाता है? स्पष्ट कीजिए।

इकाई-7

नाटक- 'खाडु लापता' ललितमोहन थपलियाल

इकाई संरचना

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 ललितमोहन थपलियाल का संक्षिप्त परिचय

7.4 अभ्यास प्रश्न

7.5 'खाडु लापता' नाटक

7.6 अभ्यास प्रश्न

7.7 सारांश

7.8 शब्दार्थ

7.9 संदर्भ पुस्तकें

7.10 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत नाटक 'खाडु लापता' में जो कथानक है वह गढ़वाल के इस पर्वतीय क्षेत्र से सीधे सम्बन्ध रखता है। इसीलिए यहाँ का प्रत्येक निवासी इससे प्रभावित होता है। इसी कारण ऐसे नाटकों को पढ़ते व देखते समय अनिवर्चनीय आनन्द की सृष्टि होती है। इस नाटक में कथा स्वतः स्फूर्त है जिसके कारण दर्शक व पाठक उससे जुड़ा रहता है और उसकी उत्सुकता बनी रहती है। गढ़वाली के सुप्रसिद्ध नाटककार ललितमोहन थपलियाल द्वारा लिखित यह एक बेजोड़ नाटक है। मात्र चार पात्रों के अभिनय से सशक्त कथावस्तु, बेहतरीन चरित्र-चित्रण, चुटीले संवादों से सजा यह नाटक साहित्य जगत की एक अनुपम निधि है। कहानी में वैदराज, हरसिंह, तुलसी व परमानन्द चार ही पात्र हैं, सभी का पात्रानुसार व नाटक की पटकथा के अनुरूप सजीव चरित्र चित्रण है। इस नाटक में छोटे व चुटीले संवाद बहुत असरदार हैं जो मनोविनोद एवं हास्य उत्पन्न करते हैं व तीक्ष्ण व्यंग्य बाण भी चलाते हैं। हरसिंह के खाडू (नर भेड़) के इर्द-गिर्द सम्पूर्ण नाटक घूमता है। कौतूहल, रोमांच, रहस्य तथा अप्रतिम हास्य उत्पन्न करता है। नाट्यकला में सिद्धहस्त नाटककार ललितमोहन थपलियाल इन्हीं विशेषताओं के कारण दर्शकों व पाठकों को अन्त तक बाँधे रखते हैं। यह नाटक व नाटककार की सबसे बड़ी खूबी है।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप:-

- साहित्य की नाट्य विधा से परिचित होंगे।
- समाज की ज्वलंत समस्याओं को नाट्य विधा के माध्यम से कैसे पाठकों एवं दर्शकों तक पहुँचाया जा सकता है, समझ सकेंगे।
- हमें बेवजह किसी पर आरोप नहीं लगाना चाहिए, यह सीख पायेंगे।
- आम समाज में घटने वाली घटनाओं व जनजीवन को नाटक के माध्यम से समझ पायेंगे।

7.3 ललितमोहन थपलियाल का संक्षिप्त परिचय

गढ़वाली के प्रसिद्ध नाटककार ललितमोहन थपलियाल का जन्म 1920 में ग्राम श्रीकोट पट्टी खातस्यूं, जिला पौड़ी गढ़वाल में हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम० ए० करने के पश्चात् आपने पत्रकारिता करनी प्रारम्भ कर दी। आपने देश की ख्यातिप्राप्त पत्र-पत्रिकाओं में पत्रकारिता व एडिटिंग का कार्य किया। आप 1955 में WHO के साउथ एशियन रीजन के सूचना अधिकारी के पद पर नियुक्त हुए। 1964 से 1972 तक UNO न्यूयार्क, जेनेवा में कार्यरत रहे। 1980 में आप WHO से सेवानिवृत्त हुए।

आपने अपने 5 नाटकों का संकलन 'खाडु लापता अर अन्य नाटक' नाम से 1964 में प्रकाशित किया जिसमें 'खाडु लापता', 'अछर्यू कु ताल', 'एकीकरण', 'घरजवैं' और 'दुर्जन की कछड़ी' नामक पाँच प्रसिद्ध नाटक संकलित हैं। आपने हिन्दी में भी बहुत से नाटक लिखे। 'चमत्कार', 'चिमटेवाले बाबा' तथा 'अलग-अलग रहे' आपके प्रसिद्ध हिन्दी नाटक हैं। नाटककार ललितमोहन थपलियाल का निधन 2005 में हुआ।

7.4 अभ्यास प्रश्न

1. नाटककार ललितमोहन थपलियाल का जन्म कहाँ हुआ?
2. नाटककार ललितमोहन थपलियाल ने किस विश्वविद्यालय से एम० ए० किया?
3. ललितमोहन थपलियाल के पांच नाटकों के संकलन का नाम क्या है?
4. नाटककार ललितमोहन थपलियाल का निधन कब हुआ?

7.5 नाटक- 'खाडु लापता'

(बैदराज अपणा चौक मा बैठी दवै घोटणा छन। बीच-बीच मा हुक्का कि सोड़ मरदन। हरसिंह तेजी से औंद। वे गुस्सा चढ्यूं छ।)

हरसिंह : पंडजि माराज प्रसन करा!

बैदराज : अरे, पैलि बैठ त सही। सेवा न सौंळी, भकम प्रसन करा। ह्वे क्या च?

हरसिंह : अजि तुम प्रसन त करा। मिन जु बतै देण कि ह्वे क्या च त प्रसन ई क्यांकू?

बैदराज : आज त भारि चढ़ीं च ये पर। सीधा मुक बोल बि नी च निकळनू। बाग बण्यूं च बिल्कुल।

हरसिंह : (गुस्सा मा) हां, बाग ई बण्यूं छौं, आज मिन द्वी-चारू कि ल्हांस कन्न!

बैदराज : (विचारपूर्वक) मिन तेरि बिमारि पकड़ि याले। या त तु म्वारा न तड़के या जनानि न चमके।

हरसिंह : देखा गुरुजी चखन्यो न करा। निथर मेरो बर्मण्ड तीड़ जाण यखिम?

बैदराज : अच्छु रे अच्छु। इनि जि त्वे पर अई च त। (खरल-मूसल एक तिरपां धरी स्लेट निकलदन अर रेखड़ा मरदन) भौत ई बेसबर आदिम छै तु। मेख, बृख, मिथुन.... (अंगुळि पर हिसाब लगै मुंड हलौंदन)

हरसिंह : (मुक अगनै करी) हां जि, क्य निकळे?

बैदराज : (वे एक तरपां ठेली) अरे भलामानस, पैलि रस्ता छोड़ तब त निकळलो। जा, ई चिलम पर आग लौ मांगी पंडित्याण मा। (हरसिंह चिलम लेकि भितर जांद)

बैदराज : (विचारपूर्वक) क्या जि होय ये आज? ब्याळि तैं त कुछ नि सूणि छै। ....बखरौं कु रुजगार च ये को.....हो न हो.....।

(हरसिंह वापिस औंद अर सजलु हुक्का पर धरी बैठ जांद)

हरसिंह : त बोला। (बैदराज द्वि-एक सोड़ मरदन) अजि कुछ बोला त सही।

बैदराज : बोन्नु क्या च बेटाराम। चौपाया लापता हुयूं च, वांकु ई प्रसन च।

हरसिंह : सच्चि बात च गुरु! अब बता लीगि को च मेरु खाडु? वेकि द्विये टंगड़ि तोड़दु मि अबि।

बैदराज : द्वी टंगड़ि तोड़ भौं एक। यु बतौंणु मेरु काम नी च। पर तेरु खाडु मिलणु मुस्कल दिखेणू च। मिल बि जाव पर हरचण्या जोग च।

हरसिंह : अजि जरा अंक्वे लगा तै गणत। कुछ सोद-भेद लगदु छ?

बैदराज : अंक्वे क्या लगौण जजमान, चौखुट्या लीगि हो, दुखुट्या लीगि हो, पर खाडु तेरो खतम समझा।

हरसिंह : हे माराज, तनु न बोलादि। नसलदार, खस्सि खाडु छौ।

बैदराज : अरे तिन नरसिंहौ खाडु बि त नि द्यो कब बिटि, तबि छन सि उत्पात होणा। इबारि तु जरूर करी नरसिंह नचै दे।

हरसिंह : द एक बकाया स्य बि लगि।

बैदराज : (स्लेट एक तिरपां धरी) जु गणत मा निकळि छयो हमन बतै यालि। बिना नरसिंह नचायां नि बणनु तेरो काम।

हरसिंह : द डाम त धरे गेन।

बैदराज : हरच्यूं कब बिटि च तेरु खाडु?

हरसिंह : अजि, परसि स्याम तैं त छैं छौ।

बैदराज : वी डबराणु-कबराणु खाडु छौ?

हरसिंह : हां गुरु, वी छौ।

बैदराज : छौ बि त बिल्कुल तुरंग बण्यूं। जणि कतगों कि टक छै लगीं वे पर।

हरसिंह : (आश्चर्य मिश्रित हर्ष से बैदराज का मुक पर देखद) तुमन ठीक बोले गुरु। नत्था अर मंगसीरु रैंदा छा वेका फट्टा जपगौणा। अर लुंडु-मंडु कि पाल्टी बिच ऊंकि, तौं कि पोटग्यूं जुगता होय खाडु मेरि जाण। तौं कि लदोड़ि नि फोड़ी त मेरु नौं हरसिंह नी। अबि वूंको हणगट बणाता हूं। (जाण लगद)

बैदराज : अरे ठैर, ठैर। अकल से काम ले। उतौळि न कर। गणत मा निकळि छौ कि दुखुट्या लीगि हो, चौखुट्या लीगि हो। नौं त नि ल्ये मिन कैको। अर जु स्याळ लीगि हो रे खाडु तैं?

हरसिंह : अजि न्हैं, स्याळ कनै लिजै सकद?

बैदराज : कनु कनै रे? कोदड़ि सारि उंद त स्याळ रोज ई अटगौणू च गोर-बखरों तैं। सुदि फौंदारि नि कन्नि। पैलि ओर-पोर देखि याल।

हरसिंह : तुम खणिक अळझाट कना छै मी कु। मि गधना बि देखि औंदु, पर यु काम यूं छोरों कु होण, पक्कि बात छ।

बैदराज : अरे होली होली, पर पैलि खोज-ब्यूंत त कर याल।

हरसिंह : जांदु त छैं छौं पर जु स्याळन बि खाडु मारि होलो, तब बि मिन यी गौं का चकड़ैत दुरुस्त बणै दिणन।

बैदराज : फेर वी अनगढ़ छ्वीं। सुदि बिना कसूर बणै दिणन दुरुस्त?

हरसिंह : अजि पर यूं कु दाग नि लगदु खाडु पर, त स्याळ सुदि लि जांदु वे तैं? हौर इतगा खाडु छन गौं मा, वूं किलै नि लीग्यो स्याळ?

हरसिंह तेजी से भैर निकल जांद। हैकि दिशा से तुलसीराम औंद। काळु चश्मा, कांध उंद झोळा, शहरी लिबास।

तुलसीराम : बडा जी, परनाम करदू।

बैदराज : ओहो। चिरंजीवी रयां बेटा, कब औणु होय?

तुलसीराम : यहां त पर्से हि अयूं पर ममाकोट रै ग्यूं एक सप्ताह तक।

बैदराज : तुमारा ननाजी कु रै होलु सप्ताह।

तुलसीराम : न जि ना, मतलब कि अनकरीब एक हफ्ता रै ग्यूं वहां।

बैदराज : खूब करे खूब। तुम दि ी रंद्या नौकरि पर?

तुलसीराम : जी हां, फिलहाल दिल्ली कु हि आबोदाना च।

बैदराज : क्या काम करद्यां दिल्ली मा?

तुलसीराम : दि ी मा जु सब से बडु दफ्तर च, वे हि मा छौं वेकु बोलदन सेन्ट्रल सेकटेरिया।

बैदराज : पर तुमारु काम क्या च वख?

तुलसीराम : कनै समझये जाव? वख एक काम थोड़े होंद, साब। कखि एलेक्ट्रिक का दफ्तर छन, त कखि रेलवाय का, त कखि हवाई जहाज का। कखि बिल्डिंग बणनी छन, कखि नद्यूं पर डाम बणना छन। कखि कागज लेखीणा छन त कखि फैलों का चट्टा लग्यां छन। हजारों आदमी त सिर्फ फैल लिजाणू काम करदन ये दफ्तर से वे दफ्तर से वे दफ्तर।

बैदराज : फैल हैं? भौत गरु होंद?

तुलसीराम : सरकरि चीज च साब, बजनदार किलै नि हूणी? पर जाण बि देवा बडाजि, यि सरकारि मामला तुमारि समझ मा नि औण। गांव-गळा का हालचाल सुणावा।

बैदराज : ना, मि समझि गौं बेटा। जोतिस अर बैदै त मिन अब सुरु करे। पैलि मि बि दिल्ली का बड़ा दफ्तर मा चपड़सि छौ।

तुलसीराम : (थोड़ा झेंप जांद) ओहो, मैं त मालुम ई नि छौ। कब छया आप वहां?

बैदराज : पुराणि बात ह्वेगे बेटाराम। जब चौंळ छया दस सेर का, अर आटु सोला सेर कु। नळखों पर पाणि चलदू छौ अर इनु दड़बड़ो बि नि छौ जनु अजक्यलु सुणेणु च।

तुलसीराम : दि ी का पाणि का बारा मा आपकी शिकायत जायज च पर पैलि उमाळ ल्या त हैजा वगैरह कु डर नि रैंदु।

बैदराज : चला बड़ि खुसी कि बात च दिल्ली तुमारा पसंद ऐगे। यख डेरा फुंडे त क्या तबियत लगण तुमारि, हैं?

तुलसीराम : अपणु बतन च बडाजी, ये वास्ता तबियत लगौण हि पड़द। वरना यहां छ क्या, आबोहवा का सिवाय? दरसल मा यु मुल्क रैणा काबिल नी छ। न खाणि न पीणि। कोटद्वार मात साग-सब्जि कु दरसन नि देख्यों।

बैदराज : हे राम, कख बिटि देखण, अर आदत देख्यो त तुमारि दिल्ली वाळि पड़ीं छन। अजक्यलु त खाणू बि क्या खाणा ह्वेल्या।

तुलसीराम : आप मा सच बोन्नू छौं बडाजी, लम्बा अरसा का बाद ब्याळे रात खै होलि पेट भोरी रोट्टी। कुछ सिकार-उकार बणी छै।

बैदराज : कन्ना, कन्ना। जख बिटि ऐ हो सिकार?

तुलसीराम : एक नौनु देगि। गौं मा ई मरे बल बखरो।

बैदराज : जब गौं मा बखरु मरेंद बेटाराम त धाद लगद कि जैन बांठि लेणि हो लिजाव। त्वेन इनि क्वी धाद सूणि च?

तुलसीराम : ना जि, हमन त नि सूणि।

बैदराज : न मिन सूणि। तब यु गुपचुप कु सौदा कन जि होय?

तुलसीराम : कुज्याणि भै, हम त नि समझदा इ गौं का कायदा-कानून।

बैदराज : समझि जैल्या बेटाराम, थौड़ै देर मा। जैको खाडु छयो वु बाग बणी घुमणू च।

तुलसीराम : मैं आपकु मतलब नि समझ्यो।

बैदराज : समझी कनु बि क्या च। छोड़ा यि गौं कि बता। देस बटे अयां छैं, कुछ सिगरेट-उगरेट त पिलावा।

तुलसीराम : (पैकेट परै सिगरेट निकाळि देंद) ल्या।

(माचिस निकलद)

बैदराज : ना, ना, रण द्या। मेरो अबि-अबि तमाखु पियूं च। (सिगरेट कदूंड़ ऐंच चढ़ै देंदन)

तुलसीराम : मर्जि तुमरि। हम से त तुमारु यु तमाखु बर्दास्त नि होंदु।

बैदराज : चला, अच्छि बात च। पूरा सहरी बण गयां।

तुलसीराम : क्य कन्न बडाजि, जैसा देस बल वैसा भेस कन्न पड़द।

बैदराज : कन्ना, कन्ना। नौकरि के डिपाट कि च? कुछ उपरि बि बण जांद कि कोरि तनखा पर गुजर होणी च?

तुलसीराम : सप्लाय कु डिपाट च, बडाजि। पांच रुप्या त मि यनु बतौणा ले लेंदू कि साब अच्छा मूड मा छ कि विकराल बण्यूं च।

बैदराज : यु खरो हिसाब च। पर एक बात छ। कबि साब तैं पता चल गयो त नौकरि खतरा मा ए जाली।

तुलसीराम : ना जि ना। खतरा त यांकु छ कि पांच मा चार वु अफू धरै द्योलु।

बैदराज : ओ, या बात छ। त तुमारो साब बि खाण वाळु छ।

तुलसीराम : ना जि ना, हम नि छां खाण वाळा, पर दिल्ली का लोग बड़ा देण वाळा छन। अपणु काम पिछनै बताला, पैलि खीसा उंद दस-बीस का नोट डाळ देला।

बैदराज : ब्वा रै जमाना।

तुलसीराम : वाकई भौत खराब जमानो ऐगे। चौतिरपां बेइमानी कु बोलबाला च। अपणै साबै बात बतौंदू। लेनदेन कि बात कैन करि त वे तैं कान पकड़ी दफ्तर से भैर करै देदूं छौ पर पब्लिक कबि माणि सकदि?

बैदराज : ज्य करि हो पब्लिक न?

तुलसीराम : बस आया, अपणि दास्तान सुणै अर चलदि दाँ द्वी-एक गड्डि नोट रद्दि की टोकरी उंद डाल गया।

बैदराज : रद्दि की टोकरी उंद?

तुलसीराम : हां बडाजि! तुमी सोचा कखि रद्दि दगड़ि नोटु का बंडल फुंड ढोळे सकेंदन? बस वे बिचारा तैं रिस्वत कु चस्का लगि गे। अब त एक-एक नोट गणी लेंद।

बैदराज : चला, अच्छु च। खूब बग्वाळ पड़ीं च तुमू बि। कतगा बण जांद मैना मा?

तुलसीराम : कुछ न बडा जी, मसल च बल दि‍ी कि कमाई दि‍ी में खाई। नौकरि मा जतगा बि कमावा बचदु कुछ नी। ये वास्ता कुछ बिजनिस बि करदु।

बैदराज : अच्छा? क्य बिजनिस च भै?

तुलसीराम : (थैला परै टिकटु कि किताब गडद) इ देखा। लौटरी का टिकट। पढ़ा त क्या च लेख्यूं।

बैदराज : भाग्यशाली लाटरी.......प्रथम पुरस्कार.........(आश्चर्यपूर्वक) दस लाख रुपया!

तुलसीराम : हां जी, अर टिकट कु दाम सिरप एक रुप्या। एक रुप्या कु खर्च अर दस लाख कु चान्स!

बैदराज : एक आदिम एक ई टिकट दिद्यां?

तुलसीराम : ना जी, जतगा मर्जि हो लेल्या। बिण्डि टिकट लेल्या त जीत का चान्स बि बिण्डि होला।

बैदराज : अच्छु त सौ टिकट मी बि दे द्या।

तुलसीराम : (खुश ह्वे जांद) हां! य त रै बात! (टिकट देंद) ल्या! या सैरि किताब तुमारि! (बैदराज किताब अपणा मुंड पर छुवैकि सन्दूकड़ि उंद संभाल देंद) द अब पैंसा दे द्या, त मि चलदु छौं।

बैदराज : पैंसा बि ऐ जाला!

तुलसीराम : ऐ जाला? ना जि ना, पैंसा अबि देण पड़ला। लाटरी मा उधार नि चलदो।

बैदराज : उधारै को च बोन्नू यार? आठ दस दिनै बात च। मेरा दस लाख औण द्या। सबुसे पैलि तुमारै सौ रुप्या द्योलू।

तुलसीराम : ना जि ना, इनु नि होंदो। रुप्या नी दीणैन त वापस करा टिकट।

बैदराज : (टिकट वापस करद) ल्या त, मर्जि तुमारि रै।

(परमानन्द पेट पकड़ी कणौंद-कणौंद औंद। वेका पेट पिड़ा न बुरु हाल चा)

परमानन्द : हे वैदराज भैजी, मी बचावा। हे मेरि बोइ! मोरदु छौं!

बैदराज : (नब्ज देखी) ना भुलाराम। मोरदु त नि छै अबि पर भोगिल्यु जरुरि। पेट देखौ। (वेको पेट हथन दबै कि) पेट बण्यूं च कि तपयूं सि ढोल.... टन्न!

परमानन्द : अर चड़क पड़नी छन पर हे रे चड़का! हे मेरि बोई! (कणौंदु च)

बैदराज : अच्छु ब्वे-बाबु फेर भट्यै ले, पैलि इन बतौ कखि पौ-पौणाई भोज-भात मा त नि गे छौ कि सुदि फूक गे ह्वे अन्दादुन्द?

परमानन्द : भोज-भात त कखि नि गौ भैजी पर ब्याळि रात जरा गळती ह्वेगे। बत्तीसेक रोट्टी खै गौं।

बैदराज : बत्तीस रोट्टी। साग क्या छौ बण्यूं?

परमानन्द : झूठ नि बोन्नी बैदराज भैजी। सिकारि मा खये गैने। (पेट मा चड़क पड़द) अब द्या कुछ हजमा कि गोळि चटपट निथर मेरो त मुकदान होंद अबि।

बैदराज : कचमोलि बि खैई होली।

परमानन्द : खै त छैं छै भैजी। (पेट मा चड़क पड़द) हे मेरि ब्वे!

तुलसीराम : देखा साब, भोजन चाहे कुछ बि बण्यूं हो अपणा पेट कु अन्दाज जरूर रखण चैंद।

परमानन्द : (नजर उठै कि देखद) इ उपदेसक जि कै गौं का होला?

बैदराज : हैं, तिन नि पछ्याणों? राजरामौ नौनु च कनु, तुलसीराम!

परमानन्द : अच्छा! द्वी वचन उपदेस वे राजाराम बि दे दियां बेटा। उ कखि जिम्मण मा जांद त लोग जनकेकि लौंदन वे घौर।

बैदराज : (परमा कि बात पर जोर से हैंसी) ले द्वी गोळि त अबि ले ले। द्वी द्वफरा मा, अर द्वी स्याम बगत।

(परमा दवै खांद, पाणि पेंद, डकार लेंद। पिड़ा घटदि समझेंद।)

परमानन्द : अर इबारि खौलु क्या?

बैदराज : नि रौंदु मरि जाण। रात बिटि बचई होलि द्वि-एक कटोरि।

परमानन्द : झूठ नि बोन्नि बैदराज भैजी, बचई त छैं छन।

बैदराज : बस त द्विये कटोरि खै दे अर सिरनगरै मोटर मा बैठ जै।

परमानन्द : न्हैं जि। सिरनगर ई जाणु होलु व अपणा पैसा खरचण? अफु त लिजाला जु लिजाला कांधों मा धरी! (जाण लगद)

बैदराज : अरे सूण त सही। कनि बौळीनि तुमू इ कटोरि! कख मरे बखरो?

परमानन्द : भरसोड़ी करौं न मारि बल। मेरा यख त पल्या खौळौ नत्था देगै छौ।

बैदराज : अच्छा? पर बात समझ मा नि ऐ। भरसोड़ी च यख बिटि छै मैल। कबारि वख करौंन बखरु मारे, कबारि बांठि लगैनि, अर कबारि माल यख पौंछै? अर वखै सिकार बिकणू यख किलै आय? वख सब्बे निर्मस्या ह्वे गेन?

परमानन्द : स्या बात मेरि समझ मा बि नि ऐ।

बैदराज : ऐ जालि भुलाराम ऐ जालि। हरसिंह समझालो अबि।

परमानन्द : हरसिंह? कनु, वेकु क्या खोय हमन?

बैदराज : खोयो त वेन च, भुलाराम, तुमन त खायो च। वेकु खाडु जु लापता रये पर्से बिटि, अब खुलि वांकु भेद। हैं भै तुलसीराम?

तुलसीराम : पता नि बडाजि, मैं त यूं बत्तु कु क्वी इल्म च।

परमानन्द : तुम न बोला बैदराज भैजी, नगद रुप्या दियां छन।

बैदराज : मिन कुछ नि बोन्ना। अफार ऐगे हरसिंह। वी बोललु अब।

परमानन्द : हे भैजी, वे मा न बोल्यां, तुमारा हाथ जोड़दू। मि कुछ पता नी कुछ न उ चकड़ैत। हरसिंह च अनड्वान। द्वी घपणा सुदि बि लगै देलो।

(परमा चदरु ढकेण लेकि, मुक लुकेकि एक तिरपां बैठ जांद। हाथ पर खुंखरि, गुस्सा मा विकराल, हरसिंह औंद।)

हरसिंह : हो जि पंडिजी! परमा त नि आयो यख? (तुलसीराम उठी भाग जांद)

बैदराज : मिलि च खाडू?

हरसिंह : खाडू त खणेगे! आयु च परमा इथैं?

बैदराज : (क्रोध कि मुद्रा से) अरे फुंड धर तै हथ्यार। हम त तेरा खाडु कि कुसल पूछणा छां अर तु हमी पर खुंखरि मप्यांणू छै?

हरसिंह : (नरम पड़ीक) ना, ना गुरुजी, तुमू उठौण मिन हथ्यार? कतनि बात बोन्ना छैं। पर उ परमा कु बच्चा नि छोड़नू मिन आज।

बैदराज : (वेकि खुंखरि अलग धरी) तै इथैं धर पैलि। अब बोल। क्या करि रे परमा न?

हरसिंह : ब्याळि रात सिकार खाय वेन। कख बिटि जि खाय?

बैदराज : अर जु पौड़ी बिटि लै हो?

हरसिंह : न्हैं जि न्हैं। वेका कोलणा मिन अपणा खाडू का हडगा पछ्यणने।

बैदराज : यां कु ई त छै तु अनड्वान, हौर क्यां कु? तेरा खाडु का हडगौं पर क्या छा रे रसीद टिकट लग्यां? हडगा देखिन अर निकळ गे खुंखरि लेकि?

हरसिंह : आज छडि कुछ ह्वे जयां-

बैदराज : अरे, बात मान। एक घड़ि बैठ। सौ-सलाह कर ला। कुछ स्वीं-सा मिन बि सूणे। अबि लगदु च पता तेरा खाडु को। एक चिलम तमाखु पियाल।

हरसिंह : तमाखु त मिन हद नि पीणा अबि, पर बता तुमुन क्या सूणे, (परमानन्द बुग्चा बणी बैठ्यूं च, वेका ऐंच बैठ जांद) हे यु क्या च? (परमा कौंपण लगद) हे यु डगड्याट कनु होणू च! (उछ्याट मार देंद, फेर बुगचा खोली देखद) होहो! चोर त यखि बैठ्यूं च! (परमै गळी पकड़ी उठौंद।)

परमानन्द : चोर नि छौं, बेमार छौं।

हरसिंह : बेमार छै त मुक किलै च लेटयूं?

परमानन्द : पसन्या लेणू छौं।

हरसिंह : मि गड़दू त्वे पर अस्यो-पस्यो। (झकोळ्दु च) बतौ कु-कु छा तुम जौन मेरु खाडु चोरे? मिन एक-एक कि कज्या कन्न आज।

बैदराज : अरे गळि त छोड़ वेकि, तब त बोललु। पैलि बात सूण याल, तब करले फौंदारि। (द्वियूं तैं अलग करी) अब पूछ, क्या पूछण?

हरसिंह : अजि पूछण यो च कि मेरु खाडु केन चोरे?

परमानन्द : भैजि ये हरसिंह दा समझावा। कनु खाडु बोन्नू च यो?

बैदराज : खाडु भुलाराम एक जन्तु विशेष कु नौं च। वेको मास बि खये जांद..

परमानन्द : पर यु मि किलै च पूछणू?

हरसिंह : (वेकि गळी पकड़ी) त हौर के पूछूं? बतौ सब्यूं कु नौं।

बैदराज : (छड़ै कि) यार हरसिंह, त्वे पर सबर बिल्कुल नी छ। इन मा नि बण्नु काम। मि पुछदु ये, तु सुण्नू रौ।

हरसिंह : त पूछा तुम ई।

बैदराज : पर उतौळी न कर, सबर से काम ले। अदालती कार्रवाई करदां, कन जि नि कबूलदु बल?

हरसिंह : अच्छु, अच्छु, पर सुरु त करा। (बैदराज परमानन्द अर हरसिंह का बीच खड़ा ह्वे जांदन)

बैदराज : (परमा मा) तुमारा नाम?

परमानन्द : परमानन्द।

बैदराज : बाप का नाम?

परमानन्द : धर्मानन्द

बैदराज : झूट न बोलि!

परमानन्द : (नाराजी से) यां मा झूठी बात क्या च?

बैदराज : अच्छु, अच्छु, ठीक च। (अदालत का चपड़ासी का ढंग से) परमानन्द वल्द धर्मानन्द हाजिर है? (परमा मुण्ड हलौंद) इन मुंडळि हलै कि कुछ नि होंदो। अंक्वेक कि बोल, 'हाजिर हूँ'

परमानन्द : हां जी, हाजिर हूँ!

बैदराज : (हरसिंह मा) अब यु हाजिर ह्वेगे। क्य पूछू?

हरसिंह : ये पूछा मेरु खाडु मन्न मा कु कु सामिल छा?

बैदराज : परमानन्द वल्द धर्मानन्द, जिस टैम खाडु मारा गया तुम कहाँ थे?

परमानन्द : अजि मि क्या मालूम?

बैदराज : ब्वा जि ब्वा। त्वे खुद ही मालूम नी तु कख छौ। हम तैं बेकूफ समझणू छै?

परमानन्द : अजि मि बोन्नू छौं मि क्या मालुम खाडू कैन मारे? मि मा त नत्था आये, सिकार देगे अर पैसा लीगे। यां से अलावा मि कुछ नि जणदु।

हरसिंह : अच्छा, नत्था छौ? वे दगड़ि मंगसीरु बि जरूर रै होलु।

परमानन्द : नत्था ई छौ, यार, जब बोन्नू छौं। खाडू मरदि दां कु-कु मौजूद छा यां कि मि क्या जाणू?

बैदराज : अधा बात त कबूल याले, अधा थोड़ा देर मा कबूललो।

हरसिंह : येकि अधा फेर सूणलु। पैलि मि नत्था अर मंगसीरु कि करदु अठ्वाड़!

(खुंखरि उठै कि जाण लगद)

बैदराज : जरा ठैर कर यार, एक जरुरि बात त भुलेई गे। ये गीता उठै कि कसम खलौणि छै। तब यु पूरी बात बतौंदु।

हरसिंह : तुम पूछा। मि औंदू छौं अबि। (जांद-जांद परमा मा) मि जाणू छौं अबि नत्था अर मंगसिरु की खोज, पर तु इनु न समझी कि तु बच जैल्यु।

(हरसिंह खुंखरि नचौंद-नचौंद भैर निकल जांद, बैदराज अपणि गद्दी मा बैठी दवै घोटण लगदन। परमा ऊं का धोरा बैठ जांद।)

बैदराज : नखरा फंस्यां, भुलाराम।

परमानन्द : महा अनाड़ च यु हरसिंह। कुछ बात न चित्त।

बैदराज : पर जब तेरु कसूर ई नि छयो त इतगा डरी किलै छै वे देखी?

परमानन्द : डरनु नि छौ त सुदि घपगा खाणि छै वेकि? पर एक बात ह्वे, डौर न ह्वे मि थथराट, अर पेटै पिड़ा जख गे होलि?

बैदराज : अच्छु भुला, फेर ऐ कबि दवै मांगणू।

परमानन्द : कनु किलै?

बैदराज : (डांटी) अबे, द्वी गोल्यूं मा तेरा पेटै पिड़ा ठीक के दे, वांकु गुण असान त कुछ ना, अर जैन भतग लगैने वी जि बणे तेरु धनन्तरी?

परमानन्द : ठट्टा कनूं छौं भैजी, तुमारि गोल्यूंन ई होय यु चमत्कार।

बैदराज : इनु बोल। पर हरसिंह अबि फेर औंद तेरि खोज मा, वांकि दवै नी च मि मा कुछ।

परमानन्द : ये तैं कनि कै थामा भैजी, निथर येन कुछ अनर्थ कन्न आज।

बैदराज : पर तुमन बि कुछ कम अनर्थ नि कर्यो भुलाराम, जु उतनो जंगी खाडु एक ई रात मा चटगै दे।

परमानन्द : पर मिन क्या जण्नु छौ, भैजी, कि उ चोरि कु माल च। तुमी बोला।

बैदराज : हमन क्या बोन्न बाबू, खाडु का हडगा बोन्ना छन।

(तुलसीराम औंद)

तुलसीराम : बडा जी, हरसिंह त नी छ यहाँ?

बैदराज : अबि त नी छ पर जरा ठैर करा, अबि औंदु छ तुमारि बि खोज।

तुलसीराम : हम तैं नी छ वेकि डर। वेको खाडु जैन बि खै हो, हमन नि खायो।

बैदराज : तुमन ज्या खै हो।

तुलसीराम : पता यु चले कि नत्था अर मंगसीरु कु त खोल्यूं च बड़ो भारी बिजनिस। वु बखरा मारी सिकार बि बेचणा छन अर नाजायज शराब बि बणौणा छन।

परमानन्द : हे, कनु मोरि रे यूंको!

बैदराज : तब त पक्की बात छ। यूं बूचड्ड न ई मारि हरसिंहौं खाडु।

तुलसीराम : ना जि ना। पता यु चले कि भरसोड़ी का कौतिग मा मारि छा यूंन चार बखरा। वीं सिकार अज्यूं तैं बेचणा छन।

परमानन्द : हे, त हमन सात दिनै बासि सिकार खायि?

तुलसीराम : तुम नि समझ्या? हमन त सूंघते ही सिनाख्त कर यालि छै।

बैदराज : अर फेर बि खै गे। शाबास, बेटा। ई सीखि दिल्ली मा?

परमानन्द : यूं लोळौं पर त हण्टर लगौणा छा। अरे बखरो ई छयो कि कुछ हौर?

बैदराज : अब तांकि बि क्या बोन्न? ब्यापारी जि होया। कुत्ता, घोड़ा, भैंसो कुछ बि ह्वे सकद।

परमानन्द : सब करम भ्रष्ट कर देनि यूं लोळौं न त।

बैदराज : नत्था अर मंगसीरु छन कख इबरे?

तुलसीराम : फरार छन साब। पधान अलग खोजणू च वूं तैं, अर हरसिंह खुंखरि ले कि घर-घर घुमणू च।

परमानन्द : हरसिंह का हाथ आयो यु मुद्दे क्वी, त वेन ज्यूंदो नि छोड्नू होयो। भारि लाटो गुस्सा च वेको। कखि इथैं न ऐ जा फेर।

(तुलसी अर परमा बैदराज का पिछनै लुक जंदन, हरसिंह औंद। खून मा रंगी खुंखरि हाथ पर च।

हरसिंह : एक चोट मा वेकि गर्दन ढोळ दे अलग! बदमास कु बच्चा।

बैदराज : हे ल्वाळा, यु क्या करे तिन?

हरसिंह : अर वेन कनि बिताय मि पर?

बैदराज : अरे छौ कु वो?

हरसिंह : अजि वी खाडु अर को?

बैदराज : खाडु मिलगे तेरु?

हरसिंह : मिलगे उटकर्मी। अजि मेरे कोठार भितर लुक्यूं रये। रात हि रात द्वी दूण सट्टि चपट कै गे।

बैदराज : भारि नुकसान कर गे।

हरसिंह : पर मिन बि इनि रैण सुझाय वे कि हां.....?

बैदराज : क्या करे तिन?

हरसिंह : लौं पकड़ी भैर, अर एक ई चोट मा ठ्यां! मुंडळि पोड़ि होली दस हाथ दूर।

परमानन्द : साबास! मानते हैं बात हरसिंह दा।

हरसिंह : द चला रे जु जु छैं तुम सिकर्या। भड्यावा अर बांठी लगावा।

परमानन्द/तुलसीराम : चला, चला।

(तिन्ने जाण लगदन। बैदराज फिर दवै घोटण लगदन।)

बैदराज : हे रे हरसिंह। मी बि वखि औंण पड़लो?

हरसिंह : न गुरु जी, तुमारा बांठे सिरी यखि पौंछ जाली।

7.6 अभ्यास प्रश्न

1. किसका मेढ़ा (खाडू) खोया?
2. हरसिंह मेढ़ा (खाडू) के बारे में पूछने किसके पास आया?
3. परमानन्द ने रात में क्या खाया था?
4. खाडू कहाँ मिला?

7.7 सारांश

जीवन की किसी सामान्य परिस्थिति से नाटक अपनी बात शुरू करता है और घटनाचक्र को इस तरह संजोता है कि चमत्कारिक ढंग से आवरण हटता है। ऐसा ही कुछ इस नाटक में भी होता है। गढ़वाली के बेहतरीन नाटककारों में ललितमोहन थपलियाल का यह नाटक कौतूहल व हास्य व्यंग्य से ओतप्रोत है। नाटक का मुख्य पात्र बैदराज एक अनुभवी व प्रतिष्ठित वैद्य व ज्योतिषी है। जिनके पास गाँव का ही रिटायर्ड फौजी हरसिंह प्रश्न (गणत) करवाने आता है। क्योंकि दो दिन से उसका खाडू (नर भेड़) कहीं लापता है। बैदराज अंदाजन बताते हैं कि तेरा चौपाया (चार पैर वाला) खोया है। उसे शक होता है कि गाँव के अराजक तत्व नत्था व मंगसीरु की हरकत हो सकती है यह। तभी बैद जी के पास तुलसीराम व परमानन्द आते हैं जो रात को शिकार खाने की बात स्वीकारते हैं। साथ ही कहते हैं कि शिकार हमें नत्था ने दी। हरसिंह पहले तो तुलसीराम व परमानन्द पर गुस्सा करता है किन्तु नत्था, मंगसीरु का नाम सुनकर उनकी खोज में निकल पड़ता है। तुलसी व परमानन्द बैदजी से हरसिंह के कोप से बचाने की प्रार्थना करते हैं। बैदराज जी भी सोचते हैं कि यह इन नत्था व मंगसीरु की ही करतूत है। किन्तु कुछ पल बाद पुनः हरसिंह का प्रवेश होता है हाथ में खून से सनी खुकरी लिए। वे समझते हैं कि नत्था व मंगसीरु का काम तमाम हो गया है। किन्तु हरसिंह कहता है, गुरुजी मिल गया वो जिसकी मैं खोज में था, याने खाडू, वह धान के कोठार के पीछे छुपा रहा और कल से धान खाता रहा। उसने बहुत नुकसान किया। मैं लाया उसे बाहर और एक ही चोट में सिर धड़ से अलग। इस तरह एक हास्य-व्यंग्य से लबरेज नाटक का पटाक्षेप हो जाता है। अपनी कसी हुई कथावस्तु, बेजोड़ चुटीले संवाद, उच्चकोटि का पात्र चरित्र चित्रण व देश काल वातावरण का गहरा प्रभाव नाटक को एक सफल नाटक सिद्ध करते हैं।

7.8 शब्दार्थ

खरल- पत्थर की कुंडी जिसमें दवाई पीसी जाती है, रेखड़ा- रेखाएँ, चखन्यो- मजाक, अंक्वे- भली भाँति, जुगता- वास्ता, उतोळि- उतावलापन, गरु- भारी, बडा जी- ताऊ जी, निर्मस्या- शाकाहारी, गाळि- गाली, निथर- नहीं तो, मुंडळि- सिर।

नाटककार पर आधारित प्रश्नों के उत्तर- 1. 1920 में ग्राम श्रीकोट पट्टी खातस्यूं जिला पौड़ी गढ़वाल, 2. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 3. 'खाडु लापता', 'अंछर्यू कु ताल,' 'एकीकरण' 'घरजवैं' और 'दुर्जन की कछड़ी', 4. 2005

नाटक पर आधारित प्रश्नों के उत्तर- 1. हरसिंह का 2. बैदराज के पास 3. मीट और 32 रोटियाँ, 4. कोठार (लकड़ी का बना अनाज भंडारण हेतु बक्सा) में।

7.9 संदर्भ

1. खाडू लापता अर अन्य नाटक- ललितमोहन थपलियाल

7.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. इस नाटक का सारांश अपने शब्दों में लिखें।
2. नाटक में आये प्रमुख चरित्रों का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में करें।

इकाई-8

यात्रा वृत्तांत- 'धियाणी की कैलाश बिदै'- जगमोहन सिंह बिष्ट

इकाई संरचना

8.1 प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 जगमोहन सिंह बिष्ट का संक्षिप्त परिचय
8.4 अभ्यास प्रश्न
8.5 धियाणी कैलाश बिदै
8.6 अभ्यास प्रश्न
8.7 सारांश
8.8 शब्दार्थ
8.9 संदर्भ ग्रंथ सूची
8.10 निबंधात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

यात्रा वृत्तांत गद्य साहित्य की एक विशिष्ट विधा है, जो जीवन के अनुभवों व संघर्ष का ताना-बाना बुनती है। ऐसी ही एक उत्कृष्ट कृति है यात्रा वृत्तांत 'धियाणी कैलाश बिदै'। भारतीय जन-जीवन में नारी को अत्यंत सम्मान दिया गया है। यहाँ के पुरातात्विक अवशेष- वैदिक ऋचाएँ, उपनिषदों के छंद, पुराणों के श्लोक हमारे लोक-जीवन में नारी के उच्च स्थान का यशोगान करते हैं। यहाँ तक कि ईश आराधना में भी बिना शक्ति (नारी) के शिव को शव की संज्ञा दी गई है। यही शक्ति दुर्गा, काली, चामुण्डा, कात्यायनी, त्रिनेत्रा, नंदा आदि नाना रूपों में देश के विभिन्न भू-भागों में पूजित रही है। उत्तराखण्ड में शक्ति का नंदा रूप आराध्य है, परन्तु यहाँ नंदा मात्र आराध्या व पूज्या ही नहीं है अपितु उससे बहन, बेटी व बहू के रूप में तादात्म्य स्थापित किया गया है। आराध्या देवी के साथ आराधकों का ऐसा रिश्ता शायद ही किसी और समाज में विद्यमान हो।

जात, जात्राएँ या यात्राएँ भारतीय संस्कृति के ऐसे तत्व रहे हैं जो लोगों को जोड़ने और उनको एक-दूसरे के निकट आकर जानने, समझने के अवसर प्रदान करते रहे हैं। देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में हम इसके विभिन्न रूप देखते हैं। बंगाल में हमें नंदा की ही पर्याय शक्ति रूपी दुर्गा या काली की जात्राएँ देखने को मिलती हैं तो पश्चिम में महाराष्ट्र में गणपति बप्पा की प्रतिमा विसर्जन के विशाल अनुष्ठान दृष्टिगोचर होते हैं। उत्तराखण्ड के इस भू-भाग में हमें सामूहिकता व परस्पर मिलन का यह अनुष्ठान देवी-देवताओं की उत्सव यात्रा के रूप में दिखाई देता है। नंदा के उत्सव या नंदा राजजात

इनमें से एक है। नंदा राजजात उत्तराखण्ड के लोक जीवन में नंदा के प्रति गहरी आस्था एवं श्रद्धा की द्योतक है। नंदा एक चेतना है और उस चेतना की प्रतिध्वनि है उत्तराखण्ड में आयोजित होने वाली नंदा राजजात।

यह यात्रा वृत्तांत आस्था, विश्वास, रहस्य, रोमांच, कौतूहल से सराबोर विश्व की सबसे लम्बी ऐतिहासिक नंदा राजजात के अनुभवों एवं पड़ावों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ सुंदर रोमांचक व्याख्या है। अप्रतिम रोमांच व रहस्य से ओत-प्रोत यह यात्रा वृत्तांत जितना कौतूहल भरा है उतना ही प्राकृतिक सौंदर्य का अद्वितीय अवलोकन भी है। यह हमारी सनातन संस्कृति का एक अविस्मरणीय अन्वेषण है।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः-

- यात्रा वृत्तांत साहित्यिक विधा से परिचित होंगे।
- यात्रा वृत्त में किन-किन बातों को समायोजित किया जाना चाहिए, जान पायेंगे।
- इस यात्रा वर्णन के माध्यम से नन्दा राजजात यात्रा को समझ पायेंगे।
- इस यात्रा वृत्तांत के माध्यम से उच्च हिमालयी भौगोलिक परिस्थितियों को समझ पायेंगे।
- नन्दा राजजात के ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व को जान पायेंगे।

8.3 जगमोहन सिंह बिष्ट का संक्षिप्त परिचय

साहित्यकार जगमोहन सिंह बिष्ट जी का जन्म 27 जून, 1955 में ग्राम- डुंक, पट्टी- असवालस्यूं, जनपद- पौड़ी गढ़वाल में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री हरक सिंह बिष्ट व माता जी का नाम श्रीमती बिन्दी देवी है। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही हुई। आपने 1974 से 1990 तक भारतीय सेना में रहकर देश सेवा की। सेना से सेवानिवृत्ति के पश्चात् उत्तराखण्ड आंदोलन में एक आंदोलनकारी के रूप में प्रतिभाग किया। एक राज्य आंदोलनकारी के रूप में कई बार जेल भी गए। आपने एक शिक्षक के रूप में 1996 से 2016 तक अपनी सेवा दी। शिक्षण से सेवानिवृत्ति के पश्चात् वर्तमान में आप साहित्य व समाज सेवा में लगे हुए हैं। आपकी प्रकाशित कृति हैं- कर्च-कबर्च (गजल संग्रह), अपणा-अपणा रूपकुण्ड (गीत, गजल संग्रह), धियाणी कैलाश बिदै (यात्रा वृत्तांत)।

8.4 अभ्यास प्रश्न

1. साहित्यकार जगमोहन सिंह बिष्ट का जन्म कब हुआ?
2. जगमोहन सिंह बिष्ट ने कब से कब तक सेना में अपनी सेवा दी?

3. साहित्यकार जगमोहन सिंह बिष्ट के गजल संग्रह का नाम बताइए?

4. साहित्यकार के प्रथम यात्रा वृत्तांत का नाम लिखिए?

8.5 धियाणी कैलाश बिदै- (बेदनी बिटि पातर नचौण्या)

फजल को उदंकार फैल्यूं छ। घैणु कुयेड़ु लग्यूं छ। मन कुछ अशान्त छ। काश! यु कुयेड़ु नि लग्यूं होंदु त जरूर हिंवाळि चुलंख्यूं का दर्शन ह्वे जांदा। इन बोलदन कि जख चाह वख राह। रंग बदलदा मौसम मा तेज बथौं का दगड़ा सर्र... असमान कि कुयेड़ि फटै अर आँखों का सामणि छौ मन तैं सम्मोहित कन्न वाळो अर कबि नि भुलेण वाळो दृश्य। नंदा घुंघटि की जरा सीं कराळि दिखेण वाळि चुलंखि कन चमकि घाम मा चम्म। अर वींका चौतिर्प रिटदु धुआं जनु छितर्यूं बादळ। आँख्यूं का सामणि एक इनु दुश्य जु स्वर्गै तृप्ति दीण वाळो छौ, पर केवल कुछ पल कु। फिर वी कुयेड़ि कु राजपाट।

साढ़े दस बजि गेन। पूजा-अर्चना का बाद भगौति का जयकारा अर शंखै लम्बि आवाज। राजजात समिति का अध्यक्ष कुंवर राकेश अर महामंत्री श्री भुवन नौटियाल जी न पूजा-अर्चना का बाद जातरा तैं बिदगि दे। स्वास्थ्य परीक्षण मा हाई ब्लडप्रेसरा कारण ऊंतैं ऐथर कि जातरा पूरि कन्नै अनुमति नि मिलि। जातरै बिदगि कैरिकि वु द्वी लोग वाण कु वापस मुड़ि गेन। अब कुंवर तेजेन्द्र सिंह सुपुत्र अ०प्रा० कर्नल कुंवर लक्ष्मण सिंह जी जु डिफेंस कॉलोनी, देहरादून अर मैकडी इस्टेट कुमौं का बाशिंदा छन, अध्यक्षौ कार्यभार संभाळला। भुवन नौटियाल जी का सुपुत्र अतुल नौटियाल जी, जु एक इंजिनियर छन, अब राजजात समिति का महामंत्री कु दायित्व पूरो करला। फल्दिया बिटिन होमकुण्ड कुनियाल बामण भगौति कि पूजा करदन। 78 वर्षा हरिदत्त कुनियाल जी जौंन वर्ष 1951, 1968, 1987 अर 2000 मा भगौति कि पूजा-अर्चना करे, अपणि धर्मपत्नी का निधन होणा कारण यीं बार पूजा कन्न से वंचित रै गेन।

लाटू द्यबतै अगुवाई मा जातरा शुरू होण से पैलि डोलि-छंतोळ्यूं अर देवरथ कि पूजा-अर्चना करे गे। नौटि का म्यूण्ड तैं पेट खराबि का कारण हैली से भिजीं दवै पिलये गेन। कुछ दूर चढ़ै का बाद प्राथमिक शिक्षक संघ देवाल, चमोली गढ़वाल कु शिविर लग्यूं छ। ये शिविर मा जातर्यूं तैं भुज्यां चणा, इलायची आदि कु परसाद वितरण होणू छौ। एक अच्छि खबर सेवा-भाव कि। निथर शिक्षा विभागा बारा मा अच्छि खबर सुण्नौ कंदूड़ तरसि जांदन। लोग ऐथर बढ़णा रैन अर हर्कि-फर्कि कि दूर छुटदा बेदनी का मखमलि रूपौ आनंद बि लेणा रैन।

जरा-जरा कैरिकि उकाळि का बाटा पर जीमन मा हुयां बदलौ बि साफ दिखेणा छन। गोळ-मटोळ ढुंगौं कि जगा लम्बि-चौड़ि पठाळ्यूंन लियालि। ई पठाळि कै जमाना मा भयंकर भ्यूंचळु अर दुसरि अन्य उथल-पुथल कि देन छन। भैर का दबौ अर रुकणै वजह से कै समै मा बड़ि-बड़ि परतदार चट्टानु से टुटिक ई बड़ि-बड़ि पठाळि बणि होलि। यूं का बीच मा जमीं छ उच्च हिमालै वनस्पति तांतड़ी अर बनि-बनि का जंगळी फूल। तांतड़ि एक छ्वटा आकारै वनस्पति छ, पर येका हैरा, लाल, काळा रंगा पत्ता जमीन मा चिपक्यां इन दिखेणा छन जन मैदानि इलाकु मा सागवान का पत्ता दिखेंदन। उतगै गोळ,

बड़ा अर मनमोहक। ढलान का ढलान भर्यां छन तांतड़ि का पत्तोंन। कुदरतौ करिस्मा छ यु इतगा ऊंचै पर चौड़ा पत्तों कु जंगळ। तांतड़ि तैं भगौति कु वस्त्र मणै जांद। ये कारण से लोग यीं वनस्पति तैं श्रद्धा से दिखदन। पर कैन आज खबर फैलै दे कि ये कि जड़ खाण से सांस नि फुलदि। धन्य छन अफवाह फैलाण वाळा। गतानि गति को लोकः। नतीजा ये तैं खुदण कि मारामारि अर बाटा ओर-पोर यूं पौधौं को अकारण छटाफोळ।

घोड़ा लट्ठि धार तक लगातार चढ़ै छ। मौसम साफ नी छ। कुछ-कुछ देर बाद बरखा हूणी छ अर कुयेड़ि लगीं छ। इख बिटिन एक बाटु सुतोल को अर हैंको आली बुग्याळौ निकळ्द। अब पातर नचौण्या तक पूरु बाटो लदां-लदां छ। बेदनी से ऐथर पूरु बाटो बरखा से कचीलन भर्यूं छ। बीच मा एक जगा एस०डी०आर०एफ० का जवान स्वास्थ्य परीक्षण रिपोर्ट अर बायोमैट्रिक रजिस्ट्रेशन कन्ना छन। पर इन लग कि येकि अनिवार्यता को जो प्रचार कर्ये गे छो वे मा क्वी दम नी। किलैकि क्वी बि जातरी रुकि नी। हालांकि 26 अगस्त बिटिन सुरु प्रक्रिया मा नंदकेसरी, लोहाजंग अर वाण मा मोबाइल वैन नि होण से बेदनी मा जातर्यूं को बेरिफिकेशन कर्ये गे। पर भौत सारा जातरी पंजीकरण नि करै साका। मिन एक वृद्ध महाशय तैं पूछि 'बडा जी! स्वास्थ्य परीक्षण ह्वेगे,' त वूंको जबाब छौ 'अजि कख लग्यां छौं। बयासी वर्षै उमर मा आप लोगु दगड़ हिटणू छौं। ये से बड्डु फिटनेस सर्टिफिकेट हौर क्य ह्वे सकद।' बात मा बि कुछ दम छैं छौ। खराब मौसम अर भगौति का जयकारों का बीच जातरा लगभग साढ़े तीन बजि पौंछिगे आजा पड़ौ पातर नचौण्या।

देवरथ (चौसिंग्या खाडु) कि तब्यत अब कुछ ठिक छ। वु अब जुगार लग्यूं छ अर मूर्ति जनि बड़ि-बड़ि शिलौं तैं देखणू छ। सैद क्वी पुराणु दृश्य वेकि यादु मा धुंधळाणू छ कि कई छोलदर्यूं का बीच मा एक बड़ि छोलदरि तणी छ। द्वार पर द्वी सिपै खड़ा हुयां छन। सज्यां तख्त मा राजा जसधवल बैठ्यूं छ। सोमरस घटकयेणू छ। साजिन्दा बैठ्यां छन। सारंगि का दिलकश स्वर हवा मा रस घोळणा छन। पखावज पर कहरवा का बोल बजणा छन। जातरै परम्परा अर नियमों को घोर उल्लंघन होणू छ। पातरों तैं नाचणौ आदेश ह्वेगे। ठुमरी का बोल गूंजणा छन। वु गोळ घेरा मा नाचणी छन। भैर सरग पर घनघोर बादळ लग गेन। गर्जन-तर्जन होणू छ। कुयेड़ि पागल ह्वेकि रौल्यूं अर डांडि-कांठ्यूं तैं भेंटणी छ। चाल बादळों का गौळै हंसुळि बणी छ। भयंकर ढांडु पुड़ण बैठगे। बजर गिरण से जगा-जगा जमीन मा दरार पड़णी छन। ह्यूं कि चादरि बिछण बैठि गे। भ्याळु बिटिन बड़ा-बड़ा जमडांग लमडण लगिन। आछर्यूं को किकलाट मच्यूं छ। फींडा बसण बैठ गेन। इनै रास-रंग पूरि रंगत मा छ। भौत बढ़िया, सुंदर कि आवाज सुणेणी छन। उनै अचणचक धर्ति डुलण बैठि गे। चट, चट, चट चटां.....। एक भयंकर किटकताळ पुड़द अर गोळ घेरा मा नाचण वाळि पातर (नर्तकी) जोगमाया का कोप से ढुंगौं मा बदलि जांदिन। सैद इनि ह्वे होलु।

समोदरै सतह बिटि 3650 मी० ऊंचै पर बसीं यीं जगा को नौं निरालि धार छ। अपणा नौं का अनुरूप य जगा सचि मा निरालि छ। जागरों मा वर्णन औंद कि नौवीं सदी मा कन्नौजौ रज्जा जशोधवल अपणा

राज्य मा देव दोष निवारण वास्ता अपणि राणि बल्लभा, नौनु जड़ील का दगड़ा भगौति नंदै जातरा मा ऐ। राजा दगड़ि पूरु लाव-लश्कर छौ। यीं जगा पर पौंछिक रज्जन दगड़ा मा अयीं नर्तक्यूं को नाच करै। जातरा नियमू को उल्लंघन होण से नंदा भगौति कुपित ह्वे अर पातरों तैं शिला मा बदल दे। गोळ घेरा मा नाच करदि शक्ल मा यि शिला आज बि यीं जगा पर मौजूद छन। तब बिटि यीं जगौ नौं पातर नचौण्या पड़गे। नंदा भगौति को प्रकोप ऐथर बि हूंद अर पैलि राणी बल्लभा अर बाद मा सर्या लाव-लश्कर ज्यूंरागळि बिटि रूपकुण्डा ओर-पोर बर्फीला तूफान मा दबि जांदन। मनख्यूं का कंकाल रूपकुण्ड मा आज बि मौजूद छन।

मुख्य पगडंडि बिटिन लगभग 300 मीटर तौळ जातरी कैम्प बण्यूं छ। इख मा तीन-चार बड़ि-बड़ि खल्याण जनि थौळ छन। आस्का लाइटै व्यवस्था छ पर जातर्यूं का हिसाब से पर्याप्त छोलदरि नि छन। अपणि छोलदरि लगौण को बि सै जगा नि मिलि। पूछण पर पता चलि कि चार हजार जातरी पैलि ऐथर बढ़ गेन। हमुन बि ऐथर बढ़णौ प्लान बणै दे। आज ये पड़ौ मा एस.डी.आर.एफ. को भण्डारो लग्यूं छ। वूंका तीन गोळ टिन शेड बणयां छन। फिर बरखा मा भिजद-भिजद हम अगनै बढ़ ग्यों।

चढ़ै अर बुग्याळौ चिपचिपु माटौ बाटु। वनस्पति कम होंद जाणी छ। बुग्याळौ विस्तार अबि चलणू छ, पर घास का रूप रंग मा बदलौ छ। उंदार मा तांतड़ि को एक छत्र राज होयूं छ। दूर बांज-बुरांसै जंगळु सीमा-रेखा दिखेणी छ। रौल्यूं मा कुयड़ि पसरीं छ। जंगळु कि सीमा अर बुग्याळो मिलान इन दिखेणू छ जन घोड़ै नांगि पीठ पर वेकि मोणै अयाळ मिलीं हो। अब ऐथरौ बाटु नाकै चढ़ै जन छ। यीं जगा कु नौं छ कुर्रम ताळी। यानि इख बिटिन बुग्गि घास पर ताळु लगगे। यु बुग्याळ कु आखिरि किनारु छ। पांच सौ मीटर खड़ि चढ़ै का बाद एक सैणु तप्पड़ छ। तप्पड़ का सुरु मा पूज्य गणेश जी कि मूर्ति छ।

अपणि कैलाश जातरा मा यीं जगा पर भगौति नंदा न जातर्यूं कि पिड़ा कम कन्नौ विघ्न विनाशकै स्थापना करि। मूर्ति कु शिल्प सुंदर अर रंग काळु छ। काळा रंगा कारण यूंको नौं कलवा विनायक बोल्ये जांद। रिद्धि-सिद्धि का देव विनायक तैं सिंदूर को टीका, घी को लेप अर भ्यल्लि कु भोग चढ़ये जांद। खड़ि चढ़ै का बाद यीं सुंदर जगा मा पौंछिक इन लगद जन विनायक जीन स्वस्ति बचनु से सब पळेख दूर करि दे होलि।

कलुवा विनायक बिटिन भगुवाबासै तरफ बड़ा-बड़ा पौड़ का बीच बरीक पगडंडि छ। लम्बा-चौड़ा अर सैणा पठळा कै समय मा यीं जगा पर हुयीं जमीनी उथल-पुथल कि तरफ संकेत करणा छन्न। जरा-जरा कैरिक हवा मा एक मादक खुशबु फैलणी छ। अर यु क्य! दूर-दूर तलक चौतिर्प फूल हि फूल। जी हां, जू फूल कागजु मा देख्या अर पाढ़ा छा। देवपुष्प ब्रह्मकमल। उत्तराखण्डौ राज्य पुष्प। भगुवाबासा क्षेत्र ब्रह्मकमलौं तैं परसिद्ध छ। मान्यता छ कि भगौति नंदौ वाहन बाघ बि जातरा दगड़ि छौ। ऐथर हिमालय कि कठिण चढ़ै देखी भगौति नंदान बाघ तैं यी जगा मा रुकणौ आदेश दे। अर यीं जगौ नौं पड़िगे 'भगुवाबासा'। जनै आँखि घुमा फूलै-फूल। छोळदरि लगाणौ फिर जगै तलाश। मिल हि गे एक बढ़िया जगा। एक सपाट, गोळ अर सुरक्षित पठाळ जैं मा आठ लोग आराम से पड़ि सकदा छा। येका ऐंच

छोळदरि ताड़िकि रात विश्राम कर्‌ये गे। य पठाळ इतगा बड़ि अर सुंदर छै कि हमेशा स्मृति मा रैंदि। पठाळा चौछ्वड़ि खिल्यां ब्रह्म कमलु का दगड़ा एक रात बितौणौ एक सौभाग्यशाली अर कबि नि भुलेण वाळो मौका।

8.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (यात्रा वृत्तांत के आधार पर)

1. लेखक को हिमालय की कौन-सी चोटी के दर्शन हुए?
2. राजजात की अगुवाई कौन-सा देवता करता है?
3. कन्नौज का कौन-सा राजा सपरिवार नन्दा राजजात में आया था?
4. किस कुण्ड के आसपास नरकंकाल आज भी मिलते हैं?

8.7 सारांश

यात्रा वृत्तांत के अंतर्गत जगमोहन सिंह बिष्ट कृत 'धियाणी कैलाश बिदै' एक अद्‌भुत रहस्य और रोमांच से भरपूर वृत्तांत है। यह वृत्तांत उत्तराखण्ड की लोक देवी नंदा की मार्मिक कथा का एक अंश मात्र है। प्रस्तुत लेख नंदा राजजात के अंतर्गत बेदनी बुग्याल से पातर नचौण्या और भगुवाबासा तक का विस्मयकारी वृत्तांत है।

प्रातःकालीन समय है। चौमास यानी वर्षा ऋतु है। रिमझिम बारिश। चारों ओर हरियाली। लम्बे-चौड़े मखमली बुग्याल, ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं पर जगह-जगह कहीं हल्का तो कहीं घना कोहरा छाया हुआ है। जैसे ही कोहरा छंटता है विहंगम प्रकृति के दर्शन होते हैं। आँखों को स्वर्गीय अनुभूति होती है। भगवती के जयकारों के साथ यात्रा बेदनी से पातर नचौण्या के लिए निकल पड़ती है। लाटु देवता की अगुवाई में यात्रा शुरू होने से पूर्व चौसिंग्या खाडू, डोली व छंतोली की पूजा की जाती है। आगे-आगे चौसिंग्या खाडू चलता है, उसके पीछे हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ जैसे ही खड़ी चढ़ाई पर यात्रा बढ़ती है प्रकृति एवं उसके उपादानो में बदलाव साफ देखा जाता है। अनेक प्रकार की दुर्लभ जड़ी-बूटियाँ व वनस्पतियों का भण्डार हिमालय खजाना खोले बैठा दीखता है। रंग-बिरंगे फूल, विविध प्रकार की वनस्पतियाँ विशेषतः ढलानों पर लहलहाते 'तातड़ि' के पत्ते जिन्हें नंदा के वस्त्र माना जाता है, यात्रियों को बरबस अपनी ओर खींच लेते हैं। मार्ग में जगह-जगह मेडिकल कैम्प तथा सहायता कैम्प भी दिखाई पड़ते हैं।

समुद्रतल से 3650 मीटर की ऊँचाई पर स्थित निराली धार 'यथो नाम तथो गुण' निराली है। इस स्थान पर इधर-उधर बड़ी-बड़ी शिलाएँ बिखरी पड़ी हैं जो माना जाता है कि नंदा के कोप से राजा यशोधवल के साथ आयी नृत्यांगनाएँ मृतप्राय शरीर हैं। पौराणिक आख्यानों के अनुसार नवीं सदी में कन्नौज का राजा यशोधवल अपनी रानी बल्लभा एवं बेटे जड़ील तथा बेटी जड़ीली और प्रजा के साथ नंदा की यात्रा पर इस हिमालयी क्षेत्र में आये थे। किंतु इस पवित्र स्थान पर पौराणिक मान्यताओं व आस्था के

विरुद्ध राजा ने पैशाचिक व्यवहार किया। यहाँ पातरों (नृत्यांगनाओं) का नृत्य करवाया। जिससे माँ नंदा उन पर कुपित हो गई और उन्हें शापित कर शिलाओं में बदल दिया। इस स्थान को तभी से 'पातर नचौण्या' कहा जाता है। नंदा भगवती इतनी कुपित हुई कि पातर नचौण्या से आगे जाकर रूपकुण्ड नामक स्थान पर आये बर्फीले तूफान में राजा-रानी सहित सभी दफन हो गए। आज भी इस स्थान पर अनेक नरकंकाल इसके प्रमाण हैं।

पातर नचौण्या से आगे खड़ी चढ़ाई के बाद कलुवा विनायक स्थान है। यहाँ गणेश की काले रंग की पाषाण प्रतिमा है। इससे आगे रूपकुण्ड से पहले भगवाबासा स्थान है। माना जाता है कि अपने वाहन बाघ को माँ नंदा ने अत्यंत कठिन रास्ता होने के कारण यहीं रोका था इसलिए यहाँ का नाम भगुवाबासा पड़ गया। इस स्थान पर चारों ओर दिव्य पुष्प ब्रह्मकमल खिले दीखते हैं जिससे यह स्थान बड़ा मनोहारी लगता है।

8.8 शब्दार्थ

हिंवाळि चुलंख्यूं- हिमालयी चोटियों, कुयेड़ि- कोहरा, तांतड़ि- एक उच्च हिमालयाी वनस्पति, पातर नचौण्या- वह स्थान जहाँ पर कन्नौज के राजा यशधवल ने अपने मनोरंजन के लिए नृत्य करवाया था जिससे देवी के प्रकोप से सारी नर्तकियाँ पत्थर बन गई थीं, तभी से इस स्थान का नाम पातर नचौण्या कहा जाता है, बुग्याळ- हिमालयी घास के मैदान।

रचनाकार पर आधारित प्रश्नों के उत्तर- 1. 27 जून, 1955, 2. 1974 से 1990 तक, 3. कर्च-कबर्च, 4. धियाणी कैलाश बिदै।

यात्रा वृत्तांत पर आधारित प्रश्नों के उत्तर- 1. नंदा घुंघटी चोटी के, 2. लाटू देवता, 3. राजा यशधवल, 4. रूपकुण्ड के आसपास।

8.9 संदर्भ

1. धियाणी कैलाश बिदै- जगमोहन सिंह बिष्ट
2. मध्य हिमालय में नंदा देवी के उत्सव एवं जात परंपरा: नंदा राजजात- रमाकान्त बेंजवाल

8.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. आपके द्वारा की गई किसी भी एक यात्रा का विवरण विस्तृत रूप से लिखें।
2. इस यात्रा का सार अपने शब्दों में लिखें।

इकाई-9

'आर-पारै लड़ै' (व्यंग्य)- नरेन्द्र कठैत (Narender Kathait)

इकाई संरचना

9.1 प्रस्तावना
9.2 उद्देश्य
9.3 नरेन्द्र कठैत का संक्षिप्त परिचय
9.4 अभ्यास प्रश्न
9.5 व्यंग्य- 'आर-पारै लड़ै'
9.6 अभ्यास प्रश्न
9.7 सारांश
9.8 शब्दार्थ
9.9 संदर्भ ग्रंथ सूची
9.10 निबंधात्मक प्रश्न

9.1 प्रस्तावना

गढ़वाली गद्य में व्यंग्य एक नवीन विधा है। यद्यपि पिछली सदी में गढ़वाली व्यंग्य लिखे गये किंतु इस सदी में व्यंग्य का फलक व्यापक हो गया है। व्यंग्य गद्य की अन्य विधाओं से सर्वथा भिन्न विधा है। जिसमें साधारणतया कथा, नाटक आदि के संवाद व दृश्य भी दिखते हैं तो कविता का पुट भी। अतः व्यंग्य में दोनों विधाओं का रसास्वादन किया जा सकता है। यह पाठक की दृष्टि व जिह्वा पर निर्भर करता है। आम तौर पर व्यंग्य सामाजिक बुराइयों, अंधविश्वासों, कुप्रथाओं, अपसंस्कृति आदि के कटाक्ष हों सिर्फ ऐसा नहीं है। वरन् आज व्यंग्य राजनैतिक जनचेतना, तमाम सामाजिक सरोकारों की मजबूत पैरवी करते दिखाई देते हैं। वे एक ओर ईमानदारी की स्तुति करते हैं तो दूसरी ओर भ्रष्टाचार की खाल खींचते हैं। उपरोक्त समस्त विशेषताओं का सशक्त उदाहरण है प्रख्यात व्यंग्यकार नरेन्द्र कठैत का व्यंग्य 'आर-पारै लड़ै'। यह व्यंग्य यहाँ के लोक की धरती से उपजता है। कहीं फूल बनकर खुशबू बिखेरता है तो कण्डाली की झपाग भी लगाता है। अपनी माटी के प्रतीकों से यहाँ के समाज का सजीव चित्रण करता है जिसमें तथ्य है, तर्क है, दर्शन है तथा संचेतना है। ठेठ अपने लोक की अनेक विसंगतियों, समस्याओं को परस्पर राग-द्वेष, वर्चस्व के संघर्ष को मुखरित करता है यह व्यंग्य। व्यंग्य की विषयवस्तु के इस विस्तृत स्वरूप के आधार पर कहा जा सकता है कि यह व्यंग्य बाण है तो औषधि भी है जो कि व्यंग्यकार की सफलता है।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः-

- साहित्य की व्यंग्य विधा से परिचित होंगे।
- व्यंग्य लेखन की बारीकियों को समझ सकेंगे।
- समाज की आपसी खींचतान को प्रतीकों के माध्यम से समझ पाएंगे।
- हमें समाज में किस तरह रहना चाहिए यह समझ पायेंगे।

9.3 नरेन्द्र कठैत का संक्षिप्त परिचय

साहित्यकार नरेन्द्र कठैत का जन्म 28 अप्रैल, 1966 को श्रीमती शांति देवी व श्री मोहन सिंह कठैत के घर किदवई नगर, दिल्ली में हुआ। आपका मूल गाँव- सल्डा, बनगढ़स्यूं, जिला पौड़ी गढ़वाल है। आपकी प्रारंभिक शिक्षा दिल्ली में हुई। तत्पश्चात् स्नातक की पढ़ाई गढ़वाल में हुई। वर्तमान में आप प्रसार भारती पौड़ी में कार्यरत हैं।

प्रकाशन- डॉ० आशाराम (नाटक), 2003; टुप टप्प (काव्य), 2006; कुळ्ळा पिचकारी (व्यंग्य), 2007; पाणि (खण्ड काव्य), 2008; लग्यां छां (व्यंग्य), 2008; अड़ोस-पड़ोस (व्यंग्य निबन्ध) 2009; हरि सिंघौ बाग्गि फस्ट (व्यंग्य) 2011, आर-पारै लड़ै (व्यंग्य) 2012, समस्या खड़ि च (व्यंग्य) 2013; नाराज नि हुयां (व्यंग्य) 2014, डाळै बिप्दा (एक काव्यधारा) 2015; तबारि अर अबारि (कविता) 2016, बक्कि तुमारि मर्जि (व्यंग्य) 2017; पांच पराणी, पच्चीस छ्वीं (नाटक) 2018; जिंदग्या बाटा मा (अनुवाद); बी० मोहन नेगी- अब यि सब्द बि हमारा इष्ट छन 2018 ।

सम्मान- आदित्यराम नवानी सम्मान (2008-09), हिमाद्रि रत्न सम्मान (2011), डॉ० गोविन्द चातक सम्मान (2012), महाकवि कन्हैयालाल डंडरियाल सम्मान (2013) से सम्मानित।

9.4 अभ्यास प्रश्न

1. साहित्यकार नरेन्द्र कठैत का जन्म कब हुआ?
2. साहित्यकार नरेन्द्र कठैत को आदित्यराम नवानी सम्मान कब मिला?
3. साहित्यकार नरेन्द्र कठैत के पहले गढ़वाली व्यंग्य संग्रह का नाम लिखिए।
4. साहित्यकार नरेन्द्र कठैत के पहले काव्य संग्रह का नाम लिखें।

9.5 आर-पारै लड़ै (व्यंग्य)

बीच बाटा मा कण्डाळि अर किनगोड़ा बोट अल्झ्यां दिखेनि। औण-जाण वळों कु परेसानि ह्वे त क्वी थमाळि पळ्ये कि लैगि। पर हम खून-खराबा नि चाणा छा। हमुन थमाळि थाम दे। कण्डाळि, किनगोड़ा समणा जैकि बोलि- अरे भै! बाटु छोड़ा। यु सब्यतौ बाटु छ। ये बाटा फुण्ड सैरु बिकास दन्कणू च। बिकास रोकणै जिद्द करल्या त नुकसान उठैल्या।

दुयूंन एक आवाज मा जबाब दे- पैलि इन्साप करा। तब ऐथर बढ़ा।

तुमारु इन्साप करदरा हम कु हुंदा? हम तैं क्य पता, तुमारा बीच क्य च पकणू?

कण्डाळिन बोली- भैजी! यु किनगोड़, हवा दगड़ा मिली म्यरि गात पर कांडा चुभौणू रौंद।

किनगोड़ बि चुप नि रै- द लोळि कण्डाळि! बड़ि धरमात्मा बणी छै। ज्वी औणू-जाणू तु वे पर झस्स झसाक मारी बबराट मचौणि छैं।

दम्म कण्डाळि पर आग लगगि। वींन जबाब दे- सूणा जी! य त अब यू रालू, य मी।

हम समझ ग्यां जरूर द्वियूं का बीच क्वी न क्वी एका हैंका तैं भगलोणु च। दुयूं मा, बीच बचौ का तरिका से हमुन बोली-देखा जी! जख तक हवा, पाणि अर आग्यू सवाल छ त हवा, पाणि अर आग कैका बि नीन। तुमारि वा कविता नी सूणी?

कण्डाळिन पूछी- क्वा जि?

-छिड़ गई जंग, हवा अर सूरज में।

जबाब मिली- एक बार क्य, कै बार सुणी छ।

-तैं कविता मा तुमुन क्य देखी?

किनगोड़न जबाब दे- जोर-अजमैस।

-जोर अजमैस कैका बीच ह्वे?

कण्डाळ्या गिच्चा बिटि सुणे-हवा अर सूरजा बीच।

-तैं जोर अजमैस मा, मार कै पर पड़ि?

-मनखि पर।

-त अब तुमी सोच ल्या कु कैकू छ?

कण्डाळिन बोली- चुप रया भै, भैजी! हवा, पाणि अर आग त अपड्ड धरम निभौणा छन।

-देखा जी हवा, पाणि अर आग्यू क्वी धरम नी। सि तुम तैं सुद्दि लड़ौणा, भिड़ौणा, अळझौणा छन। तौंका चक्कर मा अपड़ो ठट्टा नि लगा।

किनगोड़ बि मोटा दिमागौ छ। जौ-सौ बात वेकि समझ मा नि औंदि। वेन पूछि- य बात तुम कनक्वे बोल ग्यां भैजी!

-हवा नजीक जा त हवा द्वी रूप दिखेंदन। ठण्डी हवा अर गरम हवा। ठण्डी हवा रुकी तैं हडग्यूं पर चिब्ट जांदि। गरम हवा सांस लेण मा दिक्कत कर्दि। जु समझदार छन वु हवा चक्कर मा कबि नि अंदन। अब त हवा हौर बि उल्टी दिसा मा बगणी छ।

कण्डाळ्या गिच्चा बिटि निकळि- बगणू त पाणि छ।

-पर कैका पैथर? जैका पैथर पाणि फौरैकि बगणू छ, पाणिन वी दबै यालि। जरा पाण्या प्वटगा बिटि एक बूंद उठैकि लादि।

किनगोड़न गिच्चु कचमोड़ी बोलि- एक बूंद क्य छप्पर फाड़ि देलि?

-यि त सोचणै बात छ। अकेलि बूंद सीप्या गौळा उंद जैकि मोती बण जांदि। पर हर कैकि गौळि सीपी नी। हर बूंदा जोग मा मोती बणणु बि नी लिख्यूं। जनि द्वी भाण्डों का बीच मा खमणाण पैदा होंदु, उनि द्वी बूंद मिली तैं बूंद नि रै जांदन। वूंकू पाणि बणि जांदु। पाण्या बीच मा बूंद क्वी नि खुज्योंद। सब्बि पाणी ढूंढ कर्दन। जब्कि बूंद-बूंद मिली तैं पाणि समोदर तक चलगि।

-अर आग?

-आग तैं आग ऐथर बढ़णौ तैं फुसलौंदि। मनखि नि होवु त आग सौब खाक कर जावु। आग्या जोग मा छारु छ। छारु घोळी बि छार्वी रै, अमरित नि बणि। इलै, हमारि माना त अपड़ा यूं रगड़ा-झगड़ों तैं बीच बाटा मा नि ला। जु कुछ बि कमि बेसी छन वूं आपस मा निब्टा। अरे, जड़ तुम दुयूं कि एकी जगा मा छना। रौण बि तुमुन एक्कि जगा मा छ।

किनगोड़न बोलि- जगा त मि, जम्मा नि ह्वे दुड़ण्यां। कण्डाळि जथगा चावु बदनाम करल्यो। य बात म्यरा मन मा कूटि-कूटि भरीं छ।

-क्वा बात?

-चा हाथ कट जावन। मुण्ड फुट जावन। जलड़ि घाम लगी तैं चा पराण चल जावन। पर ब्यटौं अपड़ि जगा-जमीन नि छुड्यां।

-कन्नौ, क्य कण्डाळी ब्वे नि छयि? कण्डाळि बगर बीजै पैदा ह्वेगि।

-अजि क्वा रण्डोळ रै धौं, जैन यींका तन-पराण मा इथगा किस्वाळि भौन्नि।

-क्या त्यरि ब्वे, त्वेमा अमरितौ घौड़ु पकड़ै गे छै।

दुयूं मदि्द कैका नाक नि लगू, हमुन वे तरीका से बोलि- अरे! गौं का बीच न सै त किनारा त ढंग कैकि रा। भै! तुम बुरु माना चा भलु, कमी त तुम दुयूं मा ही छन। निथर तुम बसागता बीच बिटि किलै हटयै जांदा। बसागता बीच तुमारु रौण आज बि गाळि मनेणी छन।

कण्डाळिन बोली- भैजी! बुरु नि मण्यां, बसागतन त अपड़ा बीच बिटि जड़ वळा बि हटै यनि। तुम द्यखणि लग्यां छां।

-क्या?

-जैं जगा बिटि जड़लि घाम लगनि वा जगा बांजा पड़ी।

-तुमी बता, तुमुन एकी जगा मा पड़ि-पड़ी क्य करि। किस्वाळि बढ़ै, काण्डा पैना कर्नि।

-हमारि जड़ तुमारि दुख तकलीफ मा काम अंदन। इन बोली किनगोड़न बात समाळि।

तां पर हमुन जबाब दे- हमुन तुमारि जड़ो कुछ नि बोली। स्या बिचारि कैकु क्य बिगाड्नी? चौबीस घड़ी मुंड मा रखी तुम तैं पळनि छ। तुमारा बोझ-भारा तौळ, इनै-उनै बि नि ठसक सकणि छ। असलि चीज जु तुमुन सिख्ण छयि वा तुम मा छयिं नी।

-वु क्य?

-तुमारु ब्योहार।

-हरेक तैं कमि छोट्टों मा नजर अंदिन। खुली जगा वळा ठीक छन।

-सूणा! जन तुमुन हमारु बाटु रोकी तनि एक दिन कुळैं बि हमारा बाटा मा खड़ि ह्वे।

कण्डाळिन पूछि- किलै?

-कुळैंन बोलि- भयूं! क्वी म्यरि मदद करदरु नी। म्यरा गौळा पर एक डांग साख्यूं बिटि फस्यूं छ। मौ-मददौ ओड़-छोड़, दूर-दूरा सब्बि अजमै यनि। पर म्यरा गौळा पर डांग फंस्यूं कु फंस्यूं रैगि। उठणू नी। बाघ बुलै- बाघन अपड़ि पीठ रगड़ी अर चलगि। गरूड़ से लेकि घुघती तक पौन-पंक्षी जमा ह्वेनी। पर सि बि म्यरा मुण्ड मा बीटी च गेनी। हमुन कुळैं समझै- देख भै! तू बड़ि छै। डांग अपाहिज छ। दिमाग बि तैकु क्वी कामौ नी। जै कामन होण नि, वेकु तैं र्‌वेकि बि क्वी फैदा नी। वे पड़्यूं रौण दि। बात कुळैं कि समझ मा ऐ। वीन य बात दुबारा नि उठै।

कनगोड़न बीच मा टोकि- देखा जी! कुळैं छड़ि-छांटि छ। चर्रि तरफां खुलि जगा जमीन छ। हमारि तरौं दुबल्या-घास दगड़ा कुतैस मा त नी।

-स्या बात बि नी। बौड़ा डाळा देखा। स्यू बि त अकेलु खड्ड च। पर बौड़ जनु ज्ञान बि कै डाळि-बोटि मा नी। बौड़ै फौक्यूं देखा। जथगा हाथ ऐंच उठौणू च, उथगि माटा तैं स्यवा लगौणू च। बौड़ तैं कबि कैकि मददै जरोरत नि पड़ि। अपड़ा दुख-गम अप्वी समाळ्नू च। इलै म्यरि माना त अपड़ि जिद्द छोड़ा। इथगा सूणी बि कण्डाळि अर किनगोड़ै अकड़ ढीली नि ह्वे। कण्डाळ्या धड़्यो कण्डाळि पौंछि, किनगोड़ा धड़्यो किनगोड़। बाटा मा किबलाट मचगि। बात समझौण लैक नि रै। तू-ता, रै-बै तक पौंछि। थमाळिन बोलि- भैजि! सीधी अंगुळिन अब घ्यू नि निकळ्न। जरा मैं उठादि!

थमाळि बढ़ि, बाटु खुलि। सुण्न मा आणू छ कि अब हवा, पाणि अर आग कण्डाळि-किनगोड़ौ तैं आर-पारै लड़ै लड़ला। पर सर्त या छ कि जब क्वी तौंकु झण्डा उठाला।

9.6 अभ्यास प्रश्न

1. झगड़ा किस-किस का चल रहा था?
2. कण्डाळी ने किनगोड़ पर क्या आरोप लगाया?
3. अन्त में किस पेड़ का उदाहरण दिया गया है?
4. क्या कण्डाळी व किनगोड़ के बीच समझौता हो पाया?

9.7 सारांश

हमारी आज की सभ्यता व समाज का सजीव चित्रण करते हुए व्यंग्यकार नरेन्द्र कठैत इस व्यंग्य में दो स्थानीय वनस्पतियों या यूं कहें झाड़ियों 'किनगोड़' (कांटेदार झाड़ी) एवं कण्डाली (बिच्छू घास) के

माध्यम से बहुत सामान्य मुद्दे को असाधारण तरीके से उठाकर गम्भीर चर्चा उत्पन्न करते हैं। किनगोड़ व कण्डाली दो परस्पर विपरीत धारा के चरित्र हैं। दोनों में ईर्ष्या, अहंकार व वर्चस्व का संघर्ष देखा जा सकता है। ये दोनों चरित्र हमारे समाज से उपजे किरदार हैं। जो अपने अस्तित्व व वर्चस्व के लिए किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। कुछ भी कर सकते हैं। दोनों स्वयं को दूध का धुला बताते हैं और दूसरे को धूर्त। आरोप-प्रत्यारोप लगाते हैं। कमाल की बात यह है कि दोनों एक दूसरे से खार खाते हैं किंतु बावजूद इसके रहते भी उसी परिवेश में हैं। दोनों के मध्य सुलह-समझौते का प्रयास किया जाता है किंतु दोनों का अहम एक-दूसरे से बड़ा ही बड़ा है। यहाँ तक कि एक कविता का जिक्र करते हुए कि 'छिड़ गई जंग हवा और सूरज में' तो परिणाम क्या हुआ? जोर आजमाइश किसकी हुई? मार किस पर पड़ी? मनुष्य पर! तो फिर सोचो संघर्ष कैसा? इसी तरह कि किनगोड़ व कण्डाली के मध्य तर्क-वितर्क होते हैं। व्यंग्यकार उन्हें समझाने का पूर्ण प्रयास करता है। एक अन्य उदाहरण के साथ तर्क प्रस्तुत करता है कि यह सोचने की बात है कि एक अकेली पानी की बूंद सीप के मुँह में जाकर मोती बन जाती है किंतु हर मुँह सीप नहीं। हर बूंद के भाग्य में मोती बनना नहीं लिखा है। जिस प्रकार दो बर्तन टकराकर मात्र आवाज उत्पन्न करते हैं उसी प्रकार दो बूंद टकराकर बूंद नहीं रह जाती उनका पानी बन जाता है। पानी में बूंद कोई नहीं ढूंढ़ता। सभी पानी की तलाश करते हैं जबकि बूंद-बूंद मिलकर पानी समुद्र तक पहुँच गया है। यह हमारे जीवन का यथार्थ है जो उन्हें समझाया जाता है।

फिर वे दोनों आग के विषय में प्रश्न करते हैं। इसके प्रति उत्तर में व्यंग्यकार कहते हैं कि आग को आग भड़काती है। मनुष्य न हो तो आग सब खाक करे दे। आग के भाग्य में राख है। राख घोलने पर भी राख ही रहती है। अमृत नहीं बनी। इसलिए हमारी मानो और इन आपसी झगड़ों को तूल मत दो। अपने भीतर तक ही सीमित रहने दो, परस्पर निपटा लो। आखिर जड़ें तो तुम दोनों की एक ही जगह में हैं। रहना भी तुम दोनों ने एक ही जगह में है किंतु फिर भी वे मानने को तैयार नहीं हैं। उन्हें हाथ कट जाना, सिर फूट जाना, पूरी तरह बरबाद हो जाना, जान चली जाना मंजूर है किंतु अपनी जगह अपनी हठ छोड़ना मंजूर नहीं । इस प्रसंग में व्यंग्यकार अपनी जड़ों से जुड़े रहने, अपनी धरती से आत्मिक प्रेम रखने का संदेश भी देते हैं। दोनों के मध्य झगड़ा बढ़ते देख लेखक दोनों को शांत कराते हुए कहता है कि यदि गाँव के बीच तुम शांतिपूर्वक नहीं रह सकते तो किनारे तो ढंग से रहो। तुम भला मानो या बुरा किंतु कमी तो तुम दोनों में ही है। वर्ना तुम दोनों को बीच बस्ती से क्यों उखाड़ फेंका जाता। बस्ती में तुम्हारा होना आज भी गाली माना जाता है। इस प्रकरण में कण्डाली का भी बेहद तर्कपूर्ण व यथार्थवादी उत्तर मिलता है जब वह कहती है कि भैजी बुरा मत मानना किंतु बस्ती ने तो अपने बीच से जड़ वालों को भी हटा दिया है। यह वाक्य बहुत अर्थ गाम्भीर्य का व चिंतनीय है। कण्डाली भी गाँव के वर्तमान हालात पर कटाक्ष करती हुई कहती है कि जिस जगह से भी जड़ें उखड़ीं वह जगह बर्बाद हुई। इस पर लेखक प्रश्न करता है कि तुमने एक जगह में रहकर कौन-सा तीर मारा तो किनगोड़ बात सम्भालते हुए कहता है कि हमारी जड़ें तो तुम्हारी बीमारियों में, दुख-तकलीफों में औषधि के रूप में काम आती हैं। वास्तव में तुम्हारी जड़ें तो संयम व सामर्थ्यवान हैं कि तुम्हारा पूरा भार वहन कर रही हैं। तुम्हें पाल-पोस

रही हैं किंतु बेचारी भी क्या करे, व्यवहार तो तुम्हारा अपना है, वह तुम्हें स्वयं सीखना था। इस पर वह कहता है कि प्रत्येक को कमी अपने से छोटे में ही नजर आती हैं जो बड़ा हो जिसके पास बड़ी जगह हो उसे क्या परेशानी?

जैसे तुमने हमारा रास्ता रोका इसी प्रकार एक दिन चीड़ के वृक्ष ने रोका था। उसने कहा कि एक भारी भरकम पत्थर सदियों से मेरे गले में फंसा हुआ है। मैंने अपने चारों ओर सभी से सहायता मागी किंतु यह समस्या किसी से हल न हुई। यहाँ तक कि बाघ से विनती की, कई पक्षियों के हाथ जोड़े किंतु कोई बात न बनी। हमने (लेखक ने) उसे समझाया कि तू (चीड़) बड़ा है, विवेकशील है। पत्थर अपाहिज है, दिमाग से पैदल, उससे क्या वैर भाव रखना। क्या झगड़ा मोल लेना। उसे पड़ा रहने दो। यह बात चीड़ की समझ में आई और फिर उसने कभी यह मुद्दा नहीं उठाया। किनगोड़ ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'देखो जी, चीड़ तो खुली हवा में जी रहा है। उसके चारों ओर खुली जमीन है। हमारी तरह अनेक झाड़ियों से संघर्ष थोड़ी है उसका!'

ऐसा नहीं है। अरे! बड़ के पेड़ को देखो, अकेला खड़ा है। उसकी शाखाओं को देखो, उसके हाथ जितने ऊपर उठते हैं उतने ही मिट्टी को नमन करते हैं। उसे कभी दूसरों की मदद की जरूरत नहीं पड़ी। वह अपने दुख स्वयं झेलता है, अपने झगड़े स्वयं निपटाता है। इतना सुनकर भी उन दोनों की अक्ल ठिकाने नहीं आई। दोनों ने अपने सगोत्र इकट्ठे किए। झगड़ा बढ़ता गया। गाली-गलौज, मारपीट। यानि अब सीधी अंगुली से घी निकलने से रहा। अब हथियार उठेगा और उन दोनों को सबक सिखाएगा।

अंततः हवा, पानी व आग अब कण्डाली-किनगोड़ के लिए आर-पार की लड़ाई लड़ेंगे। किंतु शर्त यह है कि जब वे उनका झंडा उठायेंगे। लेखक ने बड़ी कुशलता के साथ यह ताना-बाना बुना है जिसमें घरेलू झगड़े या आम जन-मानस के सामान्य मुद्दे घोर राजनीति की भेंट चढ़ जाते हैं। साधारण लगने वाले मुद्दे भी असाधारण बन जाते हैं।

9.8 शब्दार्थ

अळझ्याँ- उलझे हुए, कण्डाळी- बिच्छू घास, किनगोड़- एक पहाड़ी झाड़ी, थमाळि- बड़ी दरांती, अळझोणा- उलझाना, जोग- भाग्य, छारु- राख, कुळैं- चीड़, बौड़- बड़, धड्यो- पक्ष में।

रचनाकार पर आधारित अभ्यास प्रश्नों के उत्तर- 1. 28 अप्रैल, 1966, 2. 2008-09, 3. कुळ्ळा पिचकरी, 4. टुप्प-टप्प।

रचना के आधार पर प्रश्नों के उत्तर- 1. कण्डाळी व किनगोड़ के बीच, 2. इसके कांटे मुझे परेशान करते हैं, 3. बड़ के पेड़ का, 4. नहीं।

9.9 संदर्भ

1. आर-पारै लड़ै- नरेन्द्र कठैत

9.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. 'आर-पारै लड़ै' व्यंग्य का सार अपने शब्दों में लिखिए।

2. कण्डाळी व किनगोड़ की तरह क्या समाज के विभिन्न वर्ग भी आपसी झगड़े में उलझे हैं? विस्तार से लिखें।

इकाई-10

'प्रेमलाल भट्ट जी से मुखाभेंट'- दिनेश ध्यानी (PremLal Bhatt)

इकाई संरचना

10.1 प्रस्तावना
10.2 उद्देश्य
10.3 प्रेमलाल भट्ट का संक्षिप्त परिचय
10.4 अभ्यास प्रश्न
10.5 प्रेमलाल भट्ट से मुखाभेंट
10.6 अभ्यास प्रश्न
10.7 सारांश
10.8 शब्दार्थ
10.9 संदर्भ ग्रंथ सूची
10.10 निबंधात्मक प्रश्न

10.1 प्रस्तावना

साक्षात्कार गद्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है जिसके माध्यम से साहित्य के कई सारे पक्षों पर खुली चर्चा होती है। साहित्य की दशा व दिशा का पता चलता है। गढ़वाली में लगभग तमाम वरिष्ठ व चर्चित साहित्यकारों के साक्षात्कार समय-समय पर अलग-अलग माध्यमों से प्रकाश में आते रहते हैं। इसी शृंखला में 'उत्तरायण' महाकाव्य के रचनाकार वरिष्ठ साहित्यकार प्रेमलाल भट्ट जी का साक्षात्कार यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रेमलाल भट्ट गढ़वाली साहित्य को 'उमाळ', 'भागै लकीर', 'कुतग्यळि' जैसे काव्य संग्रह व 'उत्तरायण' महाकाव्य दे चुके हैं। किसी साहित्यकार के जीवन के अनुभव, संघर्ष एवं साहित्य के लिए समर्पण को किसी साक्षात्कार में पढ़कर साहित्य के भूत, वर्तमान व भविष्य की झलक अवश्य मिलती है। वरिष्ठ साहित्यकारों के अनुभवों से नई पीढ़ी के लेखक भी प्रेरित होते हैं। साक्षात्कार साहित्य विमर्श के लिए एक खुला मंच है। साथ ही पाठक अथवा श्रोता तक बात सीधी पहुँचती है जिसका एक अलग असर होता है। साक्षात्कार से बहुत से विषयों व मुद्दों पर चर्चा होती है तथा एक नई दिशा मिलती है जो कि अन्य माध्यमों से संभव नहीं। एक बेहतरीन साक्षात्कार उस लेखक का जीवन वृत्त प्रस्तुत करता है तो साहित्यिक विमर्श का भी अवसर प्रदान करता है। साहित्य की स्वस्थ चर्चा परिचर्चा के लिए साक्षात्कार महत्वपूर्ण विषय है। किसी भी महान साहित्यकार का साक्षात्कार साहित्य का मूल्यांकन करने में सक्षम होता है।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः-

- साहित्य की साक्षात्कार विधा से परिचित होंगे।
- साक्षात्कार में दी गई साहित्यिक जानकारी हासिल होगी।
- साहित्यकार के जीवन की घटनाओं से परिचित होंगे।
- लेखन के लिए दिशा निर्देश प्राप्त होंगे।

10.3 प्रेमलाल भट्ट का संक्षिप्त परिचय

08 मई सन् 1931 को श्रीमती झांपा देवी एवं श्री रामनाथ भट्ट के घर सेमन देवप्रयाग में जन्म, प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में हुई। आपने बी०ए० ऑनर्स (संस्कृत) व हिन्दी में स्नातकोत्तर की शिक्षा आगरा विश्वविद्यालय से प्राप्त की। 1956 में भारत सरकार में सेवा अनुवादक के रूप में कार्य प्रारम्भ करने वाले प्रेमलाल भट्ट जी 1989 में निदेशक राजभाषा के पद से सेवानिवृत्त हुए। आपने गढ़वाली व हिन्दी में समान्तर लेखन किया। गढ़वाली में उमाळ, भागैलकीर, कुतक्यळि, द्वी कुटमुणि कूंजै (काव्य संग्रह) एवं उत्तरायण (महाकाव्य) प्रमुख हैं। साथ ही हिन्दी में 21 उपन्यास सहित कुल 51 कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने अंग्रेजी के दो मानक शब्दकोषों का सम्पादन भी किया है। आप गढ़वाली के विद्वान व वैचारिक लेखक है। यूं तो आपको कई सम्मान व पुरस्कार मिले किन्तु भारत सरकार द्वारा साहित्य अकादमी पुरस्कार (2010) बहुत महत्वपूर्ण है।

सम्मान पुरस्कार 1. भारत सरकार द्वारा राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार

2. हिन्दी अकादमी पुरस्कार (दिल्ली सरकार)

3. पं० आदित्यराम नवानी पुरस्कार

4. डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल पुरस्कार

5. साहित्य अकादमी पुरस्कार (भारत सरकार)

10.4 अभ्यास प्रश्न

1. महाकवि प्रेमलाल भट्ट का जन्म कब और कहाँ हुआ?
2. उनके महाकाव्य का नाम क्या है?
3. इसके अलावा उनकी किसी और कृति का नाम लिखें?
4. उन्होंने हिन्दी एवं गढ़वाली की कुल कितनी पुस्तकों का सृजन किया?
5. प्रेमलाल भट्ट जी को भारत सरकार द्वारा साहित्य अकादमी पुरस्कार किस वर्ष मिला?

10.5 प्रेमलाल भट्ट जी का साक्षात्कार

(वरिष्ठ साहित्यकार प्रेमलाल भट्ट जी दगड़ि श्री दिनेश ध्यानी जीन मुखाभेंट करे। भट्ट जी का जीवन अर साहित्यिक जातरा से जुड्यां कै पहलुओं पर छ्वींबथ ह्वेन।

ध्यानी जी- आपै शिक्षा-दीक्षा कख ह्वे?

भट्ट जी- मेरा गौं सेमन, पट्टी कंडवालस्यू, पौड़ी गढ़वाळ मा मेरि प्राइमरि शिक्षा ह्वे। वांका बाद मिन मैट्रिक पौड़ी बिटिन करि अर बी. ए. पंजाब बिटिन करि।

ध्यानी जी- आपन लेखन कब बिटि सुरु करि?

भट्ट जी- मिन हिंदी मा कविता लिखण इस्कूल टैम बिटिन सुरु करियालि छौ। तब शौकिया लिखदु छौ अर मठु-मठु कैकि लिखण मा रुचि बढ़दि गे। जख तलक गढ़वाळि को सवाल छ त वन त कबि-कबार इस्कूल टैम बिटिन गढ़वाळि कविता, गीत लिखदु छौ पण वरिष्ठ साहित्यकार अर राजनेता स्वर्गीय शिवानन्द नौटियाल जी की एक पत्रिका छपेंदि छै, वख मि नियमित गढ़वाळि मा लिखदु रौं। तब बिटिन लगातार गढ़वाळि मा लिखणू छौं।

ध्यानी जी- गढ़वाळि मा आपै पैलि रचना?

भट्ट जी- गढ़वाळि भाषा मा मेरु पैलु कविता संग्रै 'उमाळ' छ। वांका बाद मिन 'भागै लकीर' खण्ड काव्य, 'उत्तरायण' महाकाव्य अर 'कुतग्यळि' कविता संग्रै लिखि। हिंदी मा त आप जाण्दै छन कै उपन्यास लिखिन।

ध्यानी जी- उम्र का ये पड़ाव मा बि आपा भितरौ कवि वन्नि सजिलु अर मयाळु छ। य आपै 'कुतग्यळि' कविता संग्रै न बतै जु 2009 मा प्रकाशित ह्वे। अमणि बि आप वे हि भाव से कविता पढ़दन। क्य लगदु आपौ शरीर साथ देंदु त हौर कुछ बि साहित्य मा अग्याळ देंदा?

भट्ट जी- लिख्वारा मना भाव अर लिखणै ललक कबि नि पुरेंदि। अज्यों बि मन मा उमाळ औंदन पण क्य कन्न लिखि नि सकदु। हाँ, कबि-कबार क्वी बात या कवितै लैन कागज मा उतारि देंदु। भौत कुछ लिखणौ मन कर्दा। आज जो समाज अर सरकारों का तरपां साहित्यै गयळि दिखेणी वे परैं अर सामाजिक हालातों परैं लिखणा ज्यू बोल्द। नै पीढ़ी का लिख्वारों तैं यों सब बातों पर लिखण चैंद।

ध्यानी जी- गढ़वाळि भाषा अर यीं भाषा पाठकों तलक हमारु साहित्य नि पौंछणू छ। आप क्य सोचदन पढ़दारों कि उदासीनता छ कि लिख्वार सै ढंग से पढ़दारों तलक नि पौंछणा छन?

भट्ट जी- जख तलक मेरि अपणि बात छ त मेरि किताब त जों लोगों तलक गेन वूंन भौत पसंद बि करिन। वे जमाना का साहित्यकारों का पास उतगा संसाधन नि छया पण वूंन भलु लिखि त पाठकों न पसंद बि करि। अमणि नै जमानु छ, नया लोग छन अर समाज मा भौत बदलौ ऐगे। किताब पढ़णौ रिवाज बि कम होण लग्यूं छ। समै का दगड़ा लिख्वार अर प्रकाशक अगर सै ढंग से तालमेल बिठाकि

चलला त जरूर पाठक जुड़ला। नै-नै प्रयास होण चैंदन। साहित्यै हर विधा मा काम होण चैंद, साहित्यिक आयोजन बि होण चैंदन तबि समाज साहित्य दगड़ि जुड़लो।

ध्यानी जी- दिल्ली मा सरकारन गढ़वाळि, कुमाउनी, जौनसारी भाषा अकादमी को गठन कर्‌यालि। उत्तराखण्ड मा यनु प्रयास नि दिखेणे। आप क्य माणदन अकादमी बण्न से हमारि भाषौ प्रचार होलु? लिख्वारों तैं कुछ सांसु मिललु?

भट्ट जी- जरूर फैदा होलु। हौर जोर शोर से लिख्यै जालु अर हमारि भाषाओं तैं समाज अर सरकारों का स्तर परैं मान्यता मिललि। हमारि भाषाओं कि पछ्याण होलि। जौंन अकादमी बणै वूंन भौत भलु काम करि। पर हाँ, इतगा जरूर छ अकादमी होंन या क्वी संस्था वख ईमानदारी से काम होण चैंद। जख तलक उत्तराखण्डै बात छ त वख बि भाषा, संस्कृति अर सरोकारों का प्रति सरकारों तैं काम कन्न चैंद। तबि हमारा समाजै पछ्याण दुन्या मा होलि अर हमारि भाषा बि सबल होलि। उम्मेद करदां कि हमारा नीति नियंता ये बारा मा जरूर सोचला।

ध्यानी जी- केन्द्र सरकारन नै शिक्षा नीति का तहत घोषणा करे कि प्राथमिक बिटिन मिडिल तलक एक विषय इस्कूलों मा वखै स्थानीय भाषा मा पढ़ये जालु। उत्तराखण्ड मा प्राथमिक स्तर परैं कुछ जिलों मा पाठ्यक्रम त्यार होणू छ अर सैद जल्दि हि पाठ्यक्रम सुरु होलु। आप क्य सोचदन केन्द्र सरकार कि य पहल स्थानीय भाषाओं का विकास का खातिर कतना कारगर रैलि?

भट्ट जी- जरूर नै शिक्षानीति को असर पोड़लु। जब इस्कोलों मा हमारि भाषा पढ़ये जालि तबि त यि भाषा रोजगार परक बणलि। कै बि भाषा तैं रोजगार परक बणौणा खातिर वखा नीति नियंताओं कि इच्छाशक्ति भौत काम करदि। उत्तराखण्डा बारा मा यीं बातै कमि दिखेणी छ पण यना प्रयासों का हि माध्यम से जरूर हमारि भाषाओं का दिन बौड़ला।

ध्यानी जी- गढ़वाळि भाषा मानकीकरणा वास्ता भौत दिनों बिटिन प्रयास होण लग्यां छन। कै कार्यशाला अर विचार गोष्ठी समै-समै परैं होण लगीं छन। भौत सारा लिख्वार सिरनगर्‌या गढ़वाळि तैं मानकीकरणा वास्ता सुगम भाषा माणदन। आप क्य सोचदन कि गढ़वाळ्यौ सिरनगर्‌या गढ़वाळि मा मानक होण चैंद या क्वी हौर?

भट्ट जी- जख तलक गढ़वाळि भाषा कि मानकीकरणै बात छ त सिरनगर्‌या सुरु बिटिन रजवाड़ों का टैम बिटि राजकाजै भाषा रै। यांका कै प्रमाण छन। इलै सिरनगर्‌या तैं मानक माण्यै जाण चैंद।

ध्यानी जी- कुछ लोग बोल्दन कि मानकीकरणै बात करिकि स्थानीय शब्दों कि गयळि होलि। इलै मानकीकरण स्थानीय शब्दों का खातिर उचित नी। जेन जन्नि लिखण लिखण द्‌या। आप क्य सोचदन यीं बात पर?

भट्ट जी- बोलचाल हो चाहे लेखन हो वखम स्थानीय शब्दों को लोप नि होण चैंद लेकिन जब आप साहित्य सृजन करदन त वख कुछ न कुछ त मानकीकृत होणै चैंद। नथर भाषौ विकास कन मा होलु। मानकीकरण स्थानीय शब्दों को लोप नि करद बल्कि वां से भाषा उन्नत होलि। एक शब्दा कै

तत्सम शब्द बि ह्वे सकदन। पर अलग-अलग उच्चारण को एक मानक जरूर होण चैंद। साहित्यकारों तैं ये परैं कबि न कबि एकमत होण चैंद।

ध्यानी जी- गढ़वाळि भाषा तैं संविधानै आठवीं अनुसूचि मा शामिल कन्ना खातिर प्रयास होण लग्यां छन। आप क्य सोचदन कि संविधानै आठवीं अनुसूचि मा शामिल होणा खातिर हमारि भाषा सक्षम छन? अर यां से क्य फैदा होलु?

भट्ट जी- हमारि भाषाओं तैं यीं स्थिति मा औण पड़लु जां से हमारि भाषा संविधानै आठवीं अनुसूचि मा ह्वे सकेन। गढ़वाळि भाषै हर विधा मा कम लिखेणू खास करी गद्य विधा मा। हर विधा का लिख्वार जब तलक अगनै नि आला अर पढ़दारों तैं भाषा दगड़ि नि जोड़ला तब तलक असमंजस बण्यू रैंण। इलै खूब लिख्यै जाउ अर जनु कि हमुन पैलि बि बतै कि साहित्यिक आयोजन लगातार होण चैंदन।

ध्यानी जी- देखण मा औणौं कि हमारा भौत सा लिख्वार सब से पैलि अपणि कविता संग्रै कि एक पोथि छपे देंदन अर वूं मदे भौत लिख्वार छन जु कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधा मा लिखदन बाकि एक द्वी कविता संग्रै का बाद सोचदन कि हमारि जिम्मेदारि पूरि ह्वेगे। आप क्य माणदन कि यनि सोच किलै होलि?

भट्ट जी- साहित्य कि हर विधा मा काम लगातार होण चैंद। कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक सबि लिखा। एक-द्वी कविता संग्रै या किताबों से न ल्यख्वारै पछ्याण होणि अर न साहित्यौ भलु। सतत लेखन लिख्वारों तैं ऊर्जावान रखद अर विचार शक्ति को बि बर्धन होंद।

ध्यानी जी- बोल्दन कि कै जमाना मा दिल्ली का लिख्वारों मा आपसि खींचताण भौत छै। साहित्य बि खूब लिखि। तीन-तीन महाकाव्य आप लोगोंन दिल्ली बिटिन गढ़वाळि साहित्य तैं दीनिन। खींचताण किलै रै होलि?

भट्ट जी- खींचताण क्वी बात नी। विचार भिन्नता त घौर मा बि होंदि। कबि-कबार लोग विचारों कि भिन्नता तैं झगड़ा बतै देंदन। असल मा बहसै गुंजैस हर जगा रैण चैंदि अर स्वस्थ बहस जरुरि छ तबि त आकलन होलु अर तबि हम तैं पता लगलु कि हम क्य अर कनु कन्ना छां। हाँ, य बात आपन ठिक बोलै कि सत्तर का दशक मा दिल्ली साहित्य कि उर्वरा भूमि छै। खूब काम ह्वे। वे जमाना मा लिख्वार लिखदा बि भौत छा अर पढ़दा बि छा हौर लिख्वारों तैं। अब लिखण बि कम ह्वेगे अर पढ़णौ रिवाज त खतमै जन लगणू। अच्छा लेखना वास्ता खूब पढ़ण चैंद। जब विचार विनमय होलु अर शब्द भण्डार बढ़लो तबि स्तरीय लेखन होलु। यीं बात तैं हर नै लिख्वार तैं समझण चैंद। हाँ, दिल्ली बिटिन मेरु 'उत्तरायण', अबोधबंधु बहुगुणा जी को 'भुम्याळ' अर कन्हैयालाल डंडरियाल जी को 'नागराजा' महाकाव्य अपणा आप मा भौत उल्लेखनीय ग्रंथ छन। साहित्य मा लगातार काम होण चैंद तबि साहित्य अर भाषा को विकास होलु।

ध्यानी जी- कुछ लोग अपणि पोथि नि छपदा कि ना हो लोगों तैं हमारु लिख्यूं पंसद नि औ? कुछ लोग बोल्दन कि ठोक बजै कि जांच करावा अर तबि किताब छपावा, आप क्य सोचदन?

भट्ट जी- य बात सै छ कि साहित्यिक कृति कि भाषा अर शिल्प भलु होण चैंद पण अगर जुवों का डौरा घघरु पैरूण छोड़ि देला त फिर कैन बि सांसु नि कन्न लिखणौ। जख तलक गल्ति कि बात छ त कै बि साहित्यकारा कै बि भाषा तैं जतगा बार देखला त वे मा कुछ न कुछ संपादनै गुंजैस हमेशा बणी रैंदि। इलै लिखण चैंद अर लगातार लिखण चैंद। जु लेखि हो वु छपण बि चैंद। तबि त पता चललु अर तबै भाषौ विकास होलु।

ध्यानी जी- आप तैं क्य-क्य सम्मान मिलनी?

भट्ट जी- हमारु सबुसे बड़ो सम्मान हमारा पाठक होंदन। अगर आपै रचना तैं पढ़दारों न पसंद करियालि त समझा कि आप तैं दुन्यौ सबसे बड़ो सम्मान मिलिगे। दुसरि बात लिख्वार तैं कबि यनु नि सोचण चैंद कि मेरा लिख्यां पर सम्मान मिललु। आप अपणु काम करा बस। जख तलक मेरि बात छ त वन त भौत सम्मान मिलणा रैन कै संस्थाओं बिटि। मुख्य सम्मान 2008 मा साहित्य अकादमी सम्मान मिलि। हिंदी अकादमी उत्तर प्रदेश बिटिन बि सम्मान मिलि अर मेरि कै हिंदी अर गढ़वाळि पोथ्यों परैं सम्मान मिलिन।

ध्यानी जी- भट्ट जी आप जीवन का नब्बे बसंत पार कै चुकि ग्यां। अब आपौ स्वास्थ्य बि साथ नी देंदु कि आप इनै-उनै नि जै सकणा। त समाज का लोग अर भाषा साहित्य जगत का लोग खाज-खबर ल्हेंदा छन कि न?

भट्ट जी- हम जना बुढ्या लोगों तैं आप जना द्वी-चार लोग कबि-कबार याद करि देंदन। सि आपका सामणि बैठ्यां ललित केशवान जी बि कबि-कबार दर्शन दे देंदन। बाकि आप यनु बोल्यां कि समाज खोज-खबर ल्हेंद त तनि बात नी। लोग अपणि गृहस्थी मा बिजी छन। समै भौत तेजी से भजणो। न क्वी औंद न क्वी फोन कर्दु।

ध्यानी जी- आखिर मा। आप नै पीढ़ी तैं क्य संदेश देण चांदन।

भट्ट जी- लेखन लगातार होण चैंद, पढ़ण बि चैंद अर आलसी कतै नि होण। अपणा सामाजिक सरोकारों का प्रति नै पीढ़ी तैं सजग अर चितळु रैण चैंद। लेखन का सबि आयामों परैं बात अर समै-समै परैं साहित्यिक आयोजन जरूर होण चैंदन। भाषा गोष्ठी, पुस्तक मेला अर हर विधा मा काम कर्यूं चैंद तबि हमारि भाषा उन्नत होलि।

10.7 सारांश

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार प्रेमलाल भट्ट जी की शिक्षा-दीक्षा, उनकी लेखन यात्रा, प्रकाशित कृतियों की जानकारी इस साक्षात्कार से मिलती है। गढ़वाली भाषा के साहित्य को कैसे

अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचाया जा सकता है तथा गढ़वाली को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाना कितना जरूरी है, यह जानकारी भी इस साक्षात्कार से मिलती है।

10.8 शब्दार्थ

मठु-मठु- धीरे-धीरे, उमाळ- उबाल, भागै लकीर- किस्मत की लकीर, कुतग्यळि- गुदगुदी, लिख्वार- लेखक, अमणि- आज, पछ्याण- पहचान, चितळु- सचेत

रचनाकार पर आधारित प्रश्नों के उत्तर- 1. 08 मई, 1931 को सेमन देवप्रयाग, 2. उत्तरायण, 3. भागै लकीर, 4. 51 पुस्तकों की रचना की, 5. वर्ष 2010 में।

10.9 संदर्भ

1. चिट्ठी पत्री-2021

10.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. प्रेमलाल भट्ट के साहित्यिक योगदान की अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।